कोविड-19 का प्रिंट मीडिया के पत्रकारों पर प्रभाव
(लखनऊ के विशेष संदर्भ में अध्ययन)

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्विद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ
के
जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग
में

मास्टर ऑफ़ फ़िलॉसफ़ी
उपाधि हेतु
लघु-शोध प्रबंध

शोधार्थी
श्याम प्रताप सिंह यादव
पंजीकरण संख्या - 020/18

शोध निर्देशक
डॉ0 लोकनाथ

जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग
मीडिया एवं संचार विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ (उ.प्र.)
वर्ष -2022

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय) - नैक 'ए' ग्रेड
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ-226025

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
(A Central University) – NAAC 'A' Grade
Vidya Vihar, Rae Bareli Road, Lucknow-226025

घोषणा-पत्र

मैं श्याम प्रताप सिंह यादव यह घोषणा करता हूं कि मैंने कोविड-19 का प्रिंट मीडिया के पत्रकारों पर प्रभाव (लखनऊ के विशेष संदर्भ में अध्ययन) विषय पर शोध कार्य डॉं लोकनाथ, जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय) लखनऊ के निर्देशन में पूर्ण किया है। एम. फिल. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध मेरा मौलिक कार्य है। प्रस्तुत लघु शोध इससे पहले इस विश्वविद्यालय में एम.फिल. हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंधपूर्ण रूप से प्लैग्यरिज्म मुक्त है।

S.P. Singh
(छात्र के हस्ताक्षर)

नाम : श्याम प्रताप सिंह यादव

स्थान : लखनऊ

दिनांक : 13.07.2022

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय) - नैक 'ए' ग्रेड
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ-226025

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
(A Central University) – NAAC 'A' Grade
Vidya Vihar, Rae Bareli Road, Lucknow-226025

CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation entitled कोविड-19 का प्रिंट मीडिया के पत्रकारों पर प्रभाव (लखनऊ के विशेष संदर्भ में अध्ययन) submitted by **Shyam Pratap Singh Yadav** is an original research work and it has not been previously submitted in part or full for the award of any other degree or diploma to this or any other University.

The dissertation submitted to Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow satisfied all the requirements as stipulated in the Master of Philosophy (M. Phil). Regulation (2016) as amended in 2019 it is fit for submission and evaluation for the award of the degree of Master of Philosophy of the University.

Place लखनऊ

Date 13.7.2022

13/07/22

Supervisor

Head of the Department

Head
Deptt. of Mass Communication & Journalism
(School of Media and Communication)
Babasaheb Bhimrao Ambedkar University
Vidya Vihar, Rae Bareli Road
Lucknow-226025

uriginal

Document Information

Analyzed document	M.phil dissertation.docx (D141138114)
Submitted	2022-06-24 11:07:00
Submitted by	O. P. Saini
Submitter email	gbl.bbau@gmail.com
Similarity	7%
Analysis address	gbl.bbau.bbau@analysis.urkund.com

Sources included in the report

W	URL: http://iimc.nic.in/WriteReadData/userfiles/file/2022/jan/SM-Jan-June_2020%20TEXT_FINAL-2020.pdf Fetched: 2022-06-24 11:07:22	59
W	URL: https://news.un.org/hi/gallery/33411 Fetched: 2021-12-27 11:53:27	1
W	URL: https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1673164 Fetched: 2021-12-09 08:18:10	1
W	URL: https://www.bbc.com/hindi/vert-fut-52141681 Fetched: 2020-05-26 16:42:29	2
W	URL: https://hindi.news18.com/news/delhi-ncr/governments-consider-journalists-as-corona-warriors-announce-compensation-of-one-crore-member-gets-job-3574931.html Fetched: 2022-06-24 11:07:20	8
W	URL: https://www.bhaskar.com/local/punjab/news/corona-fight-punjab-jalandhar-jalandhar-dc-ghanshyam-thori-set-up-high-level-committee-for-media-personnel-127708233.html Fetched: 2022-06-24 11:07:25	1
W	URL: https://www.bhaskar.com/local/uttar-pradesh/lucknow/news/yogi-government-gave-assistance-of-rs-10-lakh-said-our-government-is-standing-with-journalists-128762030.html Fetched: 2022-06-24 11:07:25	1
W	URL: https://www.jagran.com/uttarakhand/bageshwar-journalists-played-their-important-role-in-the-corona-era-21691898.html Fetched: 2022-06-24 11:07:25	3
W	URL: https://jhajjar.nic.in/hi/%E0%A4%95%E0%A5%8B%E0%A4%B0%E0%A5%8B%E0%A4%A8%E0%A4%BE-%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%98%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%B7-%E0%A4%B8%E0%A5%87%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A5%80-%E0%A4%95%E0%A5%80-%E0%A4%AD/ Fetched: 2022-06-24 11:07:00	3

S.P. Singh

आभार

प्रस्तुत लघु शोध कोविड-19 का प्रिंट मीडिया के पत्रकारों पर प्रभाव (लखनऊ के विशेष संदर्भ में अध्ययन) विषय पर मेरे शोध करने का उद्देश्य महामारी का प्रिंट पत्रकारों पर प्रभाव को ज्ञात करना है। मेरे इस शोध कार्य में आदरणीय गुरूजन, परमपूज्य माता-पिता, भाई एवं ईष्ट मित्रों का साझा योगदान एवं सहयोग प्राप्त होता रहा है।

शोधार्थी इस शोध कार्य के लिये प्रेरित व निर्देशित करने वाले परम श्रदेय शिक्षक डॉं लोकनाथ जी का सदैव आभारी रहूंगा, जिनके कुशल निर्देशन में मेरी शोध यात्रा बिना किसी व्यवधान के अनवरत चलती रही। आपके विद्ता पूर्ण मार्गदर्शन व स्नेहपूर्ण व्यवहार के फलस्वरूप ही मैं यह शोध कार्य पूर्ण कर सका हूं। शोधार्थी आपका सदैव ऋणी रहेगा। विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष प्रो. गोपाल सिंह सर और संकायाध्यक्ष डॉ. गोविन्द पाण्डेय सर को भी मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ। विभाग के अन्य आचार्यों डॉ. महेंद्र कुमार पाधी सर, डॉ. अरविन्द सिंह सर, डॉ. कुंवर सुरेंद्र बहादुर सर का भी मैं विशेष आभारी हूँ।

मैं अपनी परमपूज्य माता श्री सावित्री देवी एवं पूज्यनीय पिता श्री इन्द्रपाल सिंह तथा अपने भाइयों रुद्र प्रताप एवं भानु प्रताप एवं बहन सपना यादव और अपने सहपाठी आंकाक्षा सिंह, अमन सिन्हा एवं सुकांत तिवारी, अमित यादव का ह्दय से आभारी हूं।

शोधार्थी के इस कार्य की पांडुलिपि को पूर्ण कराने में ज्योत्सना सिन्हा, पूजा आर्या और गिरीश शास्त्री जी और सत्यम जी का ह्दय से आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने बिना किसी शर्त एवं स्वार्थ के मेरा सहयोग किया और मेरे विश्वास और आत्मबल को विचलित नहीं होने दिया तथा कार्यलय कार्य पूर्ण करने में कार्यालय सहायक श्री संदीप वर्मा जी एवं दीपिका जी का विशेष आभार व्यक्त करता हूं।

S.P. Singh

श्याम प्रताप सिंह यादव

(शोध छात्र)

क्रमांक	विषय सूची	पृष्ठ संख्या
अध्याय - 1	प्रस्तावना एवं शोध पद्धति	**1-24**
अध्याय - 2	कोविड-19 का परिचयात्मक संदर्भ	**25-39**
अध्याय - 3	कोविड-19 एवं प्रिंट मीडिया पत्रकार	**40-54**
अध्याय - 4	आँकड़ा का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण	**55-73**
अध्याय - 5	निष्कर्ष एवं सुझाव	**74-84**
	संदर्भ सूची	
	परिशिष्ट	

प्रस्तावना एवं शोध पद्धति

1.1) प्रस्तावना

कोविड-19 वायरस संपूर्ण विश्व के लिए सभ्यता का संकट लेकर आया है। जिस तरह कोविड-19 वायरस दुनिया के हर हिस्से में फैला है, उससे मानव सभ्यता एक शताब्दी के बाद एक और विश्व युद्ध का सामना कर रही है। यहां दुश्मन केवल वायरस नहीं है, यहां दुश्मन वे विभाजनकारी तत्व है, जो विभिन्न देशों में विकास लक्ष्यों के दुश्मन बनकर विघमान है। जिनके कारण इस युद्ध के खिलाफ एक संयुक्त मोर्चा बनाना मुश्किल हो गया है। कोरोना वायरस वैश्विक महामारी 2019 की शुरूआत में एक नए किस्म के कोरोना वायरस के संक्रमण के रूप में चीन के वुहान शहर में 2019 के मध्य दिसंबर में हुई थी। 23 जनवरी 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस प्रकोप को अंतराष्ट्रीय चिंता का एक सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित कर दिया। कोरोना वायरस जो कि एक आरनए इनफ्लुएंजा वायरस है। आरनए इन्फलुएंजा वायरस का अर्थ यह है कि इसका कोई टीका या दवा सौ फीसदी कारगर नहीं हो सकता है। इसका कारण यह है कि यह बहुत आसानी से और बहुत तेजी से अपना रूप बदलता है। "हाल ही में 5 मई, 2020 को यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लंदन ने 7500 लोगों पर इस वायरस का एक अध्ययन किया और उन्हें पता चला है कि यह अब तकवायरस तक198 बारबदलचुकाथा।"[1] कोरोना वायरस से जहां संपूर्ण दुनिया प्रभावित हुई, पत्रकारिता और पत्रकार भी इससे अछूता नहीं रहा है।

भारत में 24 मार्च को प्रधानमंत्री के उद्बोधन के बाद ही संपूर्ण देश में लाकडाउन शुरू हो गया। इसका असर प्रिंट मीडिया समेत सभी मीडिया संस्थानों और पत्रकारों पर पड़ना स्वाभाविक था, क्योंकि कि अखबारों और अन्य मीडिया में काम करने वाले पत्रकार और अन्य कर्मचारियों की दफ्तरों तक की आने-जाने के प्रक्रिया बाधित की जाने लगी। सार्वजनिक परिवहन सेवाएँ सरकारी आदेश के कारण बंद हो चुकी थी। जिससे कारण पत्रकारों के कामकाज में बाधा उत्पन्न होने लगी। सरकार द्वारा लाकडाउन और प्रतिबंध से पत्रकारों के सामने बेहद मुश्किल चुनौती खड़ी हो गई। कोरोना वायरस के कारण जहां प्रिंट मीडिया संस्थानों पर विज्ञापन का संकट आ गया, वहीं अफवाहों की वजह से समाचार पत्रों के ब्रिकी

में भी काफी गिरावट दर्ज की गई। दुनिया के कई हिस्सों में प्रिंट मीडिया का कारोबार खत्म होने की कगार पर खड़ा है। “2008 में जेफ्फ गोमेज ने प्रिंट इज डेड प्रिंट मीडिया के विलुप्त होने की बात कही है, तो वही रोस डावसन ने तो अखबारों के विलुत होने का चार्ट बना डाला है, जिसमें यह कहा गया है कि 2040 तक अमेरिका में अखबार के प्रिंट संस्करण खत्म हो जायेगे।”[2]

महामारी के भयावह स्वरूप ने प्रिंट मीडिया पर चले आ रहे है पूर्ववत संकटों को और विस्तार दिया है। जिससे बचने के लिए तमाम मीडिया संस्थानों नेअपने यहां कार्य करने वाले पत्रकरों की वेतन मे छंटनी कीऔर उन्हें नौकरी से निकाला है। जिससे हुआ यह है कि पत्रकार संक्रमण के खतरे से जूझ ही रहे थे, नौकरी से निकाले जाने के डर से उनके ऊपर दोहरी त्रासदी लेकर आया। एक ओर कोरोना महामारी से पत्रकारिता और पत्रकारों पर संकट आ गया वहीं दूसरे ओर पूंजीपतियों की संपति में बेहताशा बढ़ोतरी हुई। “एक ओर जहीं कोरोना के कारण हाल में ही एक करोड़ से अधिक व्हाइट कॉलर चली गई बेरोजगारी सर्वकालिक तौर पर सबसे उच्च स्तर पर हैं। वेतन लगातार गिर रहा है, इजारेदारों और पूंजीपतियों को छोड़कर सभी वर्गों के आमजनों की आय गिरी। नौकरीपेशा लोगों की हालत भी खराब है, वे 30 प्रतिशत या अधिक तक की वेतन-कटौती के साथ काम कर रहे है।”[3] वहीं दूसरी ओर गरीब मेहनतकश जनता और मिडिल क्लास को भी कोविड लाकडाउन के समय भारी तकलीफों से दो चार होना पड़ा। अर्थव्यवस्था के इस संकट से बड़े पैमाने पर श्रमिक बेरोजगार हुए,वहीं मंहगाई भी बहुत तेजी से बढ़ गई। सीएमआईई के महेश व्यास ने बताया, “कोविड महामारी के पहले भारत में 40.35 करोड़ रोजगार थे, अप्रैल2020 में इनमें से लगभग 12.60 करोड़ रोजगार खत्म हो गए, जिनमें से करीब नौ करोड़ दिहाड़ी मजदूर थे।”[4] कोविड-19 महामारी ने एक ओर पूंजीवाद की बुनियादी प्रवृत्ति को और मजबूत किया है, यानी कि समृद्ध लोगों के तबकों को और मजबूत किया है और कमजोर को हाशिए पर फेंक दिया है। इसी बीच कोविड-19 महामारी ने सैनिटाइजर, दास्ताने, पीपीई किट्स, दवाएं और फिर टीके के उत्पादन से मुनाफा बटोरने के बेशुमार मौके दिए है, साथ ही जरूरी और उससे भी ज्यदा गैरजरूरी जांच के नाम पर पैसे बटोरने का भी का प्रचलन शुरू हुआ है। वही महामारी थमने के बाद भी इसका प्रचलन चालू है, एक ओर जहां आर्थिक कामकाज और आवाजाही सामान्य की जा रही है तब भी रेलवे स्टेशनों और हवाई अड्डों पर जांच के नाम पर पर पैसे वसूले जा रहे है, तुर्आ ये है कि पैसे वसूले जाते है, नमूने लिए जाते है और रिपोर्ट तक नहीं आती है।

कोविड महामारी के पीछे की तल्ख हकीकत वैश्विक पूंजी द्वारा संचालित वनों का कटान और विकास परियोजनाएं है, जिन्होंने हमें नए रोगाणुओं का चारा बना दिया है। कोविड-19 का भविष्य उज्जवल है, अभी यह और भी करोडों का अपना शिकार बनाएगा। जो टीके आए हैं, वे कारगार हो सकते है। लेकिन जितने जल्दी हो सके दुनिया के सभी विकसित देश टीकाकरण से मानवता के बजाय टीके का पेंटेंट कराने का इच्छुक है। जिस तरह नए प्रकार के कोरोना वायरस पैदा हो रहे हैं और फैल रहे है, उसी से पता चला रहा है कि जल्दी ही टीके उनके ऊपर बेअसर हो सकते है।

कोविड महामारी ने पत्रकारिता की विश्वसीनयता पर सवाल खड़े कर दिए है, वही पत्रकारों के लिए यह महामरी संक्रमण के खतरे के साथ नौकरी पर संकट ला दिया है। वहीं उनकी स्वतंत्रता भी कई तरीके से बाधित हुई है। पिछले वर्ष फरवरी से ऑस्ट्रिया की राजधानी वियाना में प्रेस की स्वतंत्रता और पत्रकारों की सुरक्षा के लिए 1950 में बनी प्रमुख मीडिया पत्रकारों की एक अंतराष्ट्रीय संस्था, पत्रकारों पर हो रहे हमलों जमा करना शुरू किया। "आइपीआईके कोविड-19 प्रेस फ्रीडम ट्रैकर के अनुसार अब तक विश्व भर में 600 से अधिक ऐसे मामले उजागर हुए है, इनमें या तो प्रेस स्वतंत्रता का उल्लंघन हुआ है या फिर पत्रकारों पर शारीरिक हमले या जरूरत से ज्यादा सख्त कारवाईयां हुई है।"[5] कोरोना वायरस से जहां पत्रकारों की स्वतंत्रता बाधित हुई, वहीं दूसरी ओर उनकी सूचना संग्रहण में भी कई प्रकार की समस्या आई। लाकडाउन और तमाम पाबंदियों ने पत्रकार के लिए मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा असर डाला, ज्यादातर पत्रकार काम के बोझ और संक्रमण के डर से तनाव और डिप्रेशन में चले गए। कई सारे पत्रकारों का जीवन पूरा तरह बदल गया, महामारी ने पत्रकारों की पूरी कार्यप्रणाली बदल कर रख दी, वर्क फ्राम होम और सामाजिक दूरी ने पत्रकारों के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा आघात किया है। इन सब प्रभावों के बीच जब पत्रकार महामारी और संक्रमण से जूझ रहा था, तब ही तमाम मीडिया संस्थानों ने कोविड महामारी के कारण अपने यहां कार्यकरत पत्रकारों को नौकरी से निकालना शुरू किया, पत्रकारों के वेतन कम किए जाने लगें। महामारी के बीच खबरों को जन तक पहुंचता पत्रकार खुद ही अपने नौकरी बचाने के लिए संघर्षशील हो गया। कई-कई जगह पर पत्रकार केवल इसलिए खुद को संक्रमित नहीं बताता कि कहीं उसे नौकरी से न निकाल दिया जाएगा। दुनिया में सच और विश्वसनीयता और सूचना का केंद्र बना पत्रकार महामारी के संक्रमण से तो जूझ ही रहा है, नौकरी जाने के तनाव से कई बीमारियों का शिकार होता जा रहा है। लगातार काम को बोझ और इसी बीच जीवन को कैसे संतुलित किया जाए

पत्रकारों के लिए एक नई किस्म चुनौती लेकर आया है। पत्रकार कैसे इस असुरक्षा के बीच अपने जीवन को सुरक्षित करें और सूचना का केंद्र बना रहे, ये एक अलग प्रकार की चुनौती है। एक और जहां जहां प्रधानमंत्री अपने संबोधन में कहते है कि महामारी में पुलिस, स्वास्थ्यकर्मी और पत्रकारों की भूमिका अहम होगी। वहीं पत्रकार कोरोना महामारी की लडाई में केंद्र में रहकर भी केंद्र से दूर है।

कोरोना महामारी ने कैसे पत्रकारों के पूरे जीवन की व्यवस्था को बदल कर रख दिया है, तमाम विसंगतियों से जूझता पत्रकार फिर भी तथ्य परक खबरें जन के बीच ला रहा है। अपनी नौकरी और संक्रमण और मौत के खतरे से जूझते पत्रकारपर इसलिए शोध आवश्यक हो जाता है। कोविड-19 का पत्रकारों पर प्रभाव के अंतर्गत कोविड महामारी और इसका प्रभाव जिसने पत्रकारों की जीवन शैली,कार्य ,विश्वसनीयता बचाने की चुनौती खडी हो गई है, जिस कारण प्रस्तुत विषय पर शोध की महत्ता बढ़ा जाती है। जिससे देश की जन सामन्य एवं मीडिया संस्थान को यह पता चले कि चौथे खंभे की रक्षा करने वाला पत्रकार महामारी के समय किस हालत में था, सामान्य जनता को यह पता चले कि पत्रकार कोरोना महामारी में लौ की तरह बुझ रहे थे, लेकिन सही सूचनाओं एवं जन खबरों के लिए पीछे नहीं हट रहे थे। पत्रकार शोध के लिए इसलिए आवश्यक था क्योंकि सबसे ज्यादा खतरा सामाचार पत्रों एवं उनके पत्रकारों पर आया,महामारी ने तुंरत ही पत्रकारों ने नई कार्यप्रणाली पर जोर दिया, इसके लिए फेक न्यूज और महामारी के दौरान सूचना का तुंरत -तुंरत बदल जाना प्रिंट पत्रकार के लिए बेहिसाब चुनौती लेकर आया। “विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना महामारी को तथ्यपरक सूचनाओं को एक बड़ी प्राथमिकता के रुप में चिन्हित किया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना महामारी के दौरान आधी-अधूरी सूचनाओं एवं झूठी और भ्रामक खबरों और इस दौरान आई सामाचारों की आई आंधी को सूचना-महामारी (इंफोडिमिक) के रुप में चिन्हित करते हुए कोविड-19 से निपटने के में सबसे बड़ी चुनौती माना है। यह केवल सरकरों के लिए ही नहीं मीडिया विशेषज्ञों और पत्रकरों के लिए भी एक बड़ी चुनौती है।”[6] जिसके कारण महामारी को तो मूल्यांकन तो होगा ही। सूचना की आई इस बाढ़ का अध्ययन करना समय की मांग है कि इस इंफोडैमिक का संचार, पत्रकार, जन की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि पर इसका क्या प्रभाव है। कोरोना महामारी वायरस ने जब जोर पकड़ा तब भारतीय प्रिंट मीडया के साथ -साथ पत्रकारों को सर्कुलेशन को बनाए रखने के साथ -साथ अपने वजूद को बचाए रखने जैसे गंभीर समस्या का सामना करना पड़ा है। महमारी के विश्वरूपी संकट अधिकतर अखबार के प्रिंट संस्करणओं की संख्या घट गई है।

उनमें विज्ञापन की कमी साफ-साफ देखी जी सकती है। कुल मिलाकर यह संकट ऐसा ही जिसके दूरगामी परिणाम होगे। प्रिंट मीडिया का सहभागी स्वरूप पत्रकार भी इसका व्यपाक असर पड़ा है।

प्रस्तुत शोध में भारतीय प्रिंट मीडिया और पत्रकार के कोरोना महामारी के संदर्भ में से पैदा हालात का विस्तृत रूप में अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इसके साथ उन चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है, जिसका सामना प्रिंट पत्रकारों और प्रिंट मीडिया संस्थानों को करना पड़ा है।प्रस्तुत शोध में इस विषय की महत्ता पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है, संक्रमण के खतरें, नौकरी बचाने की चुनौती, फेक न्यूज और इनफोडैमिक के बीच सूचना के लिए प्रिंट पत्रकारों को किन चुनौतियों से जूझना प़ड़ा है। जिसके अंतर्गत प्रथम अध्याय 'कोरोना वायरस का परिचयात्मक संदर्भ'में यह विश्लेषित किया गया है, कोरोना वायरस की शुरूआत कहां से हुई है, यह वायरस किस प्रकार फैलता है। किस प्रकार इस महामारी ने पूरी दुनिया में लाकडाउन की स्थिति खड़ी कर दी, जिससे पूरी दुनिया थम सी गई, इसके अलावा वायरस के आए विभिन्न रूपों ने किस प्रकार संपूर्ण विश्व के लिए और स्वास्थ्य और दुनिया की तमाम सरकारों के लिए असमंजस की स्थिति ला खड़ी कर दी, जिसके कारण तमाम विश्व की सरकारों ने कानून के माध्यम से पत्रकारों से लेकर तमाम सूचना और व्यवस्था को नियंत्रित करने की कोशिश की। भारत में भी सरकार के पास कई संवैधानिक अधिकार प्राप्त थे, "जिसमें में 'महामारी रोग अधिनियम(1897)', के तहत केंद्र सरकार और राज्य सरकारों को यह अधिकार प्राप्त है, कि वे अपनी राज्य सीमा से प्रवेश संबधित क्वाराइंटन का नियम बना सकती है। इसके अलावा अन्य कानून में 'आवश्यकता वस्तु विनिमय(1955)'के तहत केंद्र सरकार ने 30 जून 2020 को सैनिटाईजर और मास्क को आवश्यक वस्तु विनिमय में रख दिया, इसके अलावा भारतीय टेलीग्राफ अधिनियम(2005) कानून को विशलेषित किया गया। जिसके अंतर्गत यह बताया गया है कि कोविड मामलों को ट्रैक करने के लिए एवं सार्वजनिक सुरक्षा के हित के लिए उपयोगकर्ता का डाटा लिया जा सकता है।"[7] इसके अलावा कोविड महामारी के दौरान पहली और दूसरी लहर को व्याख्यित किया है, किस प्रकार दूसरी लहर भारत की संपूर्ण स्वास्थ्य व्यवस्था पर सवालिया निशान खड़े कर दिए। दूसरी लहर में कोरोना के एक नए वेरियंट डेल्टा का विश्लेषित किया है, जिसके कारण भारत में महामारी से सबसे अधिक मृत्यु हुई है। डेल्टा के अलावा और नए वेरियंट ओमिक्रान, म्यू, अल्फा, बीटी, गामा को भी विश्लेषित किया है। कोविड महामारी के दौरान सरकारों और कई एजेंसियों ने एक ऐप्स को विकसित किया, जिसने महामारी

से संबधित सूचनाएं एवं जानकारी लोगों तक आसानी से पहुंच सके, इसका इस शोध में वर्णन किया गया है। अगले अध्याय कोविड-19 एवं प्रिंट मीडिया के संबध और चुनौती की व्याख्या की गई है। जिसके तहत इन सवालों की उत्तर तलाशने की कोशिश की गई है, कि कोरोना वायरस से उपजी महामारी ने पत्रकारों की नौकरी, स्वास्थ्य, रिपोर्टिंग के लिए किस प्रकार की चुनौती दी है। इसके अलावा मीडिया संस्थानों ने किस प्रकार महामारी को आधार बनाकर पत्रकारों को नौकरी से निकाला है, उनके वेतन को कम किया है। पत्रकारों के आर्थिक एवं राजनीतिक दबावों की चर्चा की गई है। इस शोध में इन प्रश्नों के उत्तर तलाशने की कोशिश की गई है, किस प्रकार कोरोना महामारी ने समाचार पत्र उघोग के लिए एक मंदी का दौर लेकर आया और इससे समाचार पत्र उघोग ने कैस सुनियोजित तरीके से निपटा इसका विस्तृत विश्लेषण किया गया है। इसके इतर सोशल मीडिया ने पत्रकारों की विश्वसनीयता को कैसे खतरे में डाल दिया है,इसकी विवेचना की गई है। महामारी के दौरान आई अत्यधिक सूचनाएं एवं उन पर किस प्रकार फिल्टर न होना और उसका तेजी से प्रसारित होने एक अलग प्रकार का संक्रमण है, सोशल मीडिया पर प्रसारित खबर को कोई पत्रकार ज्यादा देर रोक नहीं सकता है, कई सूचनओं और वीडियो इतने तेजी से फैले कि कई देश तक प्रसारित हो गए, जो असत्य थे, या फेक वीडियो थे। इनका विश्लेषण इस अध्याय में किया गया है। अगले अध्याय में सर्वेक्षण पद्ति के माध्यम से उन सवालों के उत्तर जानने का प्रयास किया है, जिनके कारण पत्रकारों के कार्य की रुपरेखा बदल गई है। शोध के अंतिम अध्याय आंकडों से प्राप्त हुए उत्तर को निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

1.2) साहित्य समीक्षा

1.2.1) कैलाश सत्यार्थी अपनी किताब **'कोविड-19 सभ्यता का संकट'** और लिखते है कि " इतिहास में ऐसी अब तक कोई महमारी नही आयी, जिसने पूरी मानव सभ्यता को इतना अधिक प्रभावित किया हो। जीवन को कोई ऐसा पक्ष नही है, जिस पर कोविड-19 ने अपना असर न छोड़ा हो। इस महामारी के कारण हमारे रहन-सहन और सोच-विचार शिक्षा, व्यवसाय, व्यापार, राजनीति, जन सुरक्षा एंव पारिवारिक रिश्तों में भारी उथल-पुथल दिखाई दे रही है। कोविड-19 का संकट महज स्वास्थ्य व्यवस्था का संकट नहीं है, बल्कि सभ्यता का संकट है। ऐसे संकटों के दौरान पहले से चली आ रही विसंगतियां,विषमताँ और अन्याय भी उजागर हो जाते है।"[8] हम आशा और अपेक्षा कर रहे थे कि इतिहास की सबसे बड़ी साझा त्रासदी से सबक लेकर पूरे विश्व समुदाय की सोच जन्म लेगी, लेकिन इस

बात के संकेत अभी तक नजर नहीं आ रहे है। असलियत तो यह है कि दुनिया में पहले से चली आ रही दरारें, भेदभाव, विषमता और बिखराब उजागर होने के साथ-साथ और ज्यादा बढ़ रहे है। महामारी खत्म हो जाने और कुछ वर्षों में आर्थिक संकट से उबर जाने के बाद भी दुनिया पहले जैसे नहीं रहेगी। इसके पीछे के कारणों की व्याख्या वो इस प्रकार करते है, जिनमें सभ्यता का संकट,विषमता का दुष्प्रभाव और फैलाव, भावनात्मक सुरक्षा का खतरा, नैतिकता का ह्रास, श्रमिकों पर दोहरी मार, हाशिये के बाहर छूटते लोग, त्रासदियों को युद्ध की तरह लड़े जाने का असर, लोकतंत्र, निजता और मानवाधिकारों पर आघात, जीवन शैली में बदलाव, शामिल है। कोविड-19 को सभ्यता का संकट मानते हुए सत्यार्थी जी लिखते है,कोविड19 का वैश्विक रिस्पान्स, यानी मुकाबला करने का तरीका, जितना स्वास्थ्य संबधी, प्रशासनिक, आर्थिक, औघोगिक और वैज्ञानिक नजर आ रहा है, उतना भावानात्मक नहीं दिख रहा। यह स्वाभाविक है, क्योंकि पूरी दुनिया जिंदा रहने के लिए ऐसे कभी नहीं आया। उदाहरण के तौर पर करोड़ो प्रवासी मजदूर इस कदर खौफजदा, लाचार, हताश, बेबस और बेसब्र होकर अपने गांवों की तरफ क्यों भागे? क्या वह सिर्फ कोरोना वायरस का डर था? मुझे ऐसा नहीं लगता। वह उनका शहरी समाज से मोह भंग हो जाना है, जिससे बनाते –बनाते उनका जीवन बीत गया, या ये भी कह सकते है तथाकथित पढ़े लिखे सभ्य समाज ने कभी उनके साथ भरोसे के रिश्ते रखे ही नहीं थे। इन्हीं सब कारणों को हल करने के लिए लेखक ने कुछ रास्ते भी सुझाए है, जिनमें वैश्विक चौमुखी पहल, कृतज्ञता की सप्लाई चेन, उत्तरदायित्वों का ताना-बाना शामिल है।

1.2.2) बिस्वरूप राय चौधरी ने अपनी किताब **'कोविड-19 षड़यंत्र से समाधान तक'** में बताया है "कोरोना वायरस एक RNA श्वसन इन्फ्लुएंजा वायरस है। यह एक RNA वायरस है,जो कि इन्फलुएंजा वायरस है जिसका अर्थ है कि इसके लिए कोई दवा – टीका नहीं हो सकता है। इसका कारण यह है कि यह बहुत आसानी से और जल्दी अपना रुप बदलता है।"[9] इस प्रकार यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि जब से वायरस वुहान में फैलना शुरू हुआ है, यह पहले ही हजारों बार उत्परिवर्तित हो चुका होगा। लेखक का कहना है ऐसे विषाणुओं के लिए जो इतनी तेजी से परिवर्तित होते है, कोई दवा या टीका पर्याप्त नहीं हो सकता। दूसरी ओर वे कोविड-19 की मौतों को लेकर लिखते है, कि ज्यादातर मौतें इलाज न मिलने के कारण हुई है न कि कोविड से।चौधरी लिखते है, मास्क पहनना, लाकडाउन और बिना किसी

सबूत के कोविड-19 को ठीक करने के नाम पर मनुष्यों पर प्रयोग किए गए जिससे अधिक नुकसान और मौंते हुई है।

1.2.3) शीलवंत सिंह और कृति रस्तोगी अपनी किताब **'कोविड-19 वैश्विक महामारी'** में लिखते है कि "भारत जैसे विशाल आबादी वाले देश में कोविड-19 के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए आवश्यक था कि लाकडाउन किया जाए। लेखक विश्लेषित करते है कि लाकडाउन के कारण विभिन्न प्रभाव पड़े, जिनमें वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, कच्चे तेल की मांग और कीमत पर प्रभाव, पर्यावरण पर प्रभाव, गाम्रीण अर्थव्यवस्था पर प्रभाव एंव अवसर, वैश्वीकरण पर प्रभाव, शहरीकरण पर प्रभाव, बालीवुड पर प्रभाव, छात्र-छात्राओं पर प्रभाव, सूक्ष्म एंव लघु और मध्यम उघोग पर प्रभाव शामिल है।"[10] लेखक लिखते है कोविड-19 के कारण विभिन्न चिकित्सकीय आविष्कार हुए, जिनमें पोर्टेबल वेंटिलेटर प्राण वायु, वेंटिलेटरवाइटल, मोबाइल वायरोलाजी रिसर्च एंड डायग्नोस्टिक लेबोरेटरी, चित्रा जीनलैम्प एन जांच किट, आटोमैटिकमिस्ट आधारित सैनिटाइजर डिस्पेंसिग यूनिट, हास्पिटल केयर असिस्टिव रोबोट डिवाइस शामिल है। महामारी के दौरान दुनिया भर सरकारों ने नये आविष्कार या तकनीकी के अलावा पुराने कानूनों के माध्यम से भी नागरिकों की स्वतंत्रता और निजी जानकारी हासिल की है, पत्रकारों एवं अन्य लोगों पर सरकारों ने विशेष निगराई की है। कोरोना की कारण अर्थव्यवस्था तो धीमी हुई है लेकिन दुनिया भर सरकारों का अपने देशों के लोगों पर नियंत्रण बढ़ा है।

1.2.4) रघु ठाकुर अपनी किताब कोरोना काल के एक लेख **'कोरोना के बाद दुनिया कैसी होगी?'** में लिखते है "वस्तुए एवं समाज अपने मूल रुप में नहीं रहेगा। पत्रकारिता के पहले चरण में दफ्तरों को बंद कर घर से मशीनी पत्रकारिता होगी। घुमंतू पत्रकार खत्म हो जाएंगे। खबरें भी कारपोरेटस से मिलेगी और पत्रकारिता मशीनी उत्पाद बन जायेगी। घरों से पत्रकारिता का काम होगा। कई बड़े अखबारों के समूह ने 10 प्रतिशत पत्रकार कम करने का फैसला किया है, कुछ को सीधे नोटिस दिए जाएंगे तो कुछ को बैड परफार्मेंस के आधार पर हटायेगें। पत्रकारिता पर कोरोना की आड़ में कारपोरोटस हमला शुरू हो गया है, पत्रकार वार्ताएं भी मशीन से होगी, पेड न्यूज के बजाय एड न्यूज का दौर शुरू होगा।[11] महामारी के बाद राज्य के सर्विलांस को नागरिक की निजता के दखल का औजार होगा। कोराना वायरस बीमारी की

निगरानी के नाम पर इंसान के शरीर और मस्तिष्क के भीतर घटित होने वाली तथा इंसान के आसपास घटित होने वाली सारी सूचनाएं राजतंत्र के पास पहुंच जाएगी। महामारी के इस संकट का आगामी कुछ वर्षों तक कोई स्थायी हल नहीं निकलेगा सिवाय इसके कि व्यक्ति को दुनिया, देश, समाज , घर,परिवार सभी से अलग कर एक स्व केंद्रित व्यक्ति ना बना दिया जाए। महामारी के बाद के दौर में इंसान के इंसान के समापन की यह कहानी दुनिया के किसी भी विश्व युद्ध से ज्यादा खतरनाक होगी।

1.2.5) जयप्रकाश धुमकेतु द्वारा संपादित पत्रिका **'अभिनव कदम'** के एक लेख 'आंशका और अनिश्चितता के बीच वर्तमान और भविष्य की गुत्थियां' में 'आनंद प्रधान' लिखते है, महामारियां कई अच्छे – बुरे निशान छोड़ जाती है, इतिहास बताता है कि महामारियों के बाद दुनिया वैसी नहीं रही गई, जैसे महामारी के पहले थी। कोरोना महामारी भी दुनिया को बदलकर ही जायेगी। कोरोना महमारी के भारत के खराब प्रदर्शन की एक बड़ी वजह बीमारी के इलाज और दावा पर नागरिकों के खुद अपनी जेब से खर्च करना है। "वर्ष 2016 में भारत में कुल स्वास्थ्य खर्च का 65 फीसदी आम नागरिक अपनी जेब से करते है। यह वैश्विक औसत 30 फीसदी के दुगुने से भी ज्यादा है। कई रिपोर्टों के मुताबिक, भारत की स्वास्थ्य व्यवस्था दुनिया की सबसे निजीकृत स्वास्थ्य व्यवस्थाओं में से एक है। कोरोना वायरस से पीड़ित क्रिटिकल मरीजों में से सिर्फ 10 फीसदी का इलाज निजी अस्पताल कर रहे है जबकि देश में उपलब्ध कुल वेंटीलेटर का 80 फीसदी निजी अस्पतालों के पास है। पिछले कई दशकों से केंद्र और राज्य सरकारें स्वास्थ्य पर जीडीपी का सिर्फ 1.3 फीसदी खर्च कर रही है।"[12] यही नहीं,लगभग सभी सरकारों ने सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं की कीमत पर निजी अस्पतालों-नर्सिंग होम्स को बढ़ावा दिया है। यह भी कि महामारी के क्षीण पड़ने के बीच एक बार फिर देश और मौजूदा केंद्र और राज्य सरकारों का सारा ध्यान और बड़े भव्य मंदिर और मूर्तियां बनवाने या नए हवाई अड्डे/हाइवे एक्सप्रेसवे पर पैसा खर्च करने या नई संसद भवन निर्माण की ओर चला जाएगा या फिर देश के जिले-जिले और गांवों तक आधुनिक-सस्ती,सहज-सुलभ और गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा व्यवस्था पहुंचाने के लिए अस्पतालों – मेडिकल कालेजों का नेटवर्क खड़ा करने में अधिक सरकारी खर्च बढ़ाया जाएगा? दोहराने की जरूरत नहीं है कि अगर अगले पांच से सात सालों तक केंद्र और राज्य सरकारें स्वास्थ्य क्षेत्र में देश की जीडीपी का 3-4 फीसदी खर्च करें तो न सिर्फ सार्वजनिक व्यवस्था में भारी बदलाव आ सकता है बल्कि इससे देश की आर्थिक वृद्धि दर में भी तेजी आएगी।

1.2.6) जनपथ मीडिया पोर्टल में प्रकाशित लेख **'बीते दो हफ्ते में कोरोना के हाथों मारे गए सौबेनाम पत्रकारों को क्या आप जानते है**?' में अभिषेक श्रीवास्तव लिखते है "कई संस्थाओं के अनुसार 29 अप्रैल तक बीते 14 महीनों में 1200 से ज्यादा पत्रकारों की मौत दुनिया भर में हुई है। ये आंकड़ा 75 देशों का है जहां सारी मौतें कोविड-19 से जुड़ी जटिलताओं के चलते दर्ज की गई है।"[13] पीईसी के महासचिव ब्लेस लेम्पेन ने कहा, "यह इस पेशे को हुआ अप्रत्याशित नुकसान है और कत्तलेआम है। पीईसी के मुताबिक दुनिया भर में पत्रकारों की मौतें हुई है, मीडियाकर्मियों की मौत से सबसे ज्यादा प्रभावति चार देश हैं- ब्राजील, पेरू, भारत, मेक्सिको।"[14] बीते कई हफ्तों में भारत में कोई सौ पत्रकारों की जान कोविड महामारी के कारण जा चुकी है? रोजाना की दर लगाएं तो 15 अप्रैल से लेकर आज तक प्रतिदिन छह से ज्यादा पत्रकारों की मौत हो रही है। अव्वल तो यह संख्या बहुत कम हो सकती है क्योंकि ज्यादार मौतें छोटे शहरों, कस्बों और गांवों में हो रही इसलिए वे दर्ज होकर खबर नहीं बन पाती है। दूसरे जो मौते दर्ज हैं उनकी भी खबर नहीं बन पाती। महामारी हर रोज सुबह इस आंशका के साथ उठना होता है, कि पता नहीं आज किस-किस के नहीं होने की खबर मिले। पर कोरोना से वैसे भी मौते कम हो रही हैं,मौंते दवाएं नहीं मिलने, अस्पताल नहीं मिलने, वहीं बेड, आक्सीजन और वेंटीलेटर नहीं मिलने से हो रही है। लोग संक्रमित हो रहे है, बदहवास भाग रहे है। महाबली सरकार का एक महाबली मंत्री तक ट्वीट कर गाजियाबाद में अपने कोरोना पीडित भाई को अस्पताल में बेड नहीं मिलने की हताशा व्यक्त कर रहा है। जिन्हें नागरिकों के लिये, जीने के उसके मूलभूत संवैधानिक अधिकार के लिये ये व्यवस्थाएं करनी थी, वही नागरिक को हरा दे रहे है। सरकार चुनावजीवी है, उसकी शीर्ष नेतृत्व लाखों की रैली आयोजित कर उन्हें कोरोना बांट रहा है, क्योंकि उसे पता है कि उसे किसी चीज की कोई किल्लत नहीं होगी। व्यवस्था किल्लत होने पर सरकार ने अपना पल्ला झाड़ रही है, व्यवस्था की कमियों उजागर करने पर पत्रकार उनकी मौतें किसी का चिंता का सबब नहीं बन रही है।

1.2.7) बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख '**कोरोना संकट के बीच पत्रकारों पर मीडिया हाउस गिरारहे हैं गाज**' में कमलेश लिखते है" दूसरों की नौकरी और रोजी-रोटी पर मंडरा रहे संकट पर बात करने वाले पत्रकारों का भविष्य अब खुद खतरे में है। जबकि 22 मार्च के अपने संबोधन में पीएम नरेंद्र मोदी कह चुके है, कि पुलिस और स्वास्थ्यकर्मियों की तरह मीडिया की भी इस महामारी से लड़ने में अहम भूमिका होगी। लेकिनउसके बावजूद भी संस्थान बेधड़क अपने कर्मचारियों से इस्तीफा ले रहे है।

पत्रकारों पर दोहरी मार पड़ी है, लाकडाउन में नौकरी जाने से दूसरे संस्थान में फिलहाल नौकरी मिलना भी मुश्किल है। इस संकट को लेकर आईआईमसी के एसोसिएट प्रोफेसर डाक्टर आंनद प्रधान कहते है, ये आर्थिक संकट पिछले एक-डेढ़ साल से चल रहा था, अखबार से लेकर न्यूज चैनल तक की विज्ञापनों से कमाई में कमी आ रही थी, अब कोरोना वायरस के कारण ये संकट अचानक और गहरा गया है जिसका असर हम देख रहे है, लेकिन यह भी सही कि बड़े मीडिया समूहों कि आर्थिक स्थिति इतनी खराब नहीं है कि उन्हें लोगों को नौकरी से निकालना पड़े ये लोग एक-डेढ साल तक मैनेज कर सकते थे।"[15] वहीं, प्रेस एसोशिएशन के अध्यक्ष जयशंकर गुप्ता भी मुसीबत के इस दौर में कर्मचारियों को निकालने को सही नहीं मानते, वह कहते है, कंपनियों को घाटा नहीं हुआ है, बस उनका मुनाफा कम हो गया है। ये लोग उसी मुनाफा की भरपाई कर्मचारियों से कर रहे है, वह कहते है कि आज हर सेक्टर में नौकरियां जा रही है,मीडिया कारोबारी स्तर पर दूसरे सेक्टर कंपनियों से अलग नहीं है। जैसे कि इससे लोग सूचना पाते है, जागरूक होते है, तो ये जन कल्याण से जुड़ा काम है। इसीलिए अगर मीडिया संस्थान बडे होने लगे या टीम छोटी होने लगे तो लोकतंत्र के लिए बेहद जरूरी, सूचना और विचारों की विविधता व बहुलता पर बुरा असर पड़ेगा।

1.2.8) द वायर में प्रकाशित लेख **'कोरोना काल में पत्रकार जान बचाएं या नौकरी?'** में कृष्णकांत लिखते है "भारत में पत्रकार लगातार कोरोना का शिकार हो रहे है। खतरा सिर्फ वायरस तक सीमित नहीं है, पुलिस के डंडे, मुकदमें और नौकरी जाने का डर भी है। जाहिर है लाकडाउन के दौरान पत्रकारों पर वायरस के संक्रमण का ही नहीं बल्कि अपनी नौकरी जाने से लेकर मुकदमेबाजी तक का चौतरफा संकट छाया रहा है। कोरोना ने पत्रकारों की असुरक्षा बढ़ा दी है, लेखक कहते है यह अधिक दुखद है कि ज्यादातर टीवी चैनलों में संपादक एंकर बहुत ही सतही काम कर रहे है और उन्हें ग्रांउड रिपोर्टरों या अपने संस्थान के दूसरे स्टाफ की परवाही नहीं है। कोरोना महामारी में पत्रकारिता का तरीका बदल गया। पत्रकारों की सीमाएं तय हो गई। ब्राडकास्ट या वीडियो जर्नलिज्म के लिए व्यावाहारिक कठिनाई थोड़ा और अधिक थी। एनडीटीवी के रवीश रंजन शुक्ला कहते है, लाकडाउन की शुरूआत से दिल्ली से लेकर यूपी और बिहार में कई दिनों तक रिपोर्टिंग की, इस दौरान कोविड संक्रमण से बचना उनके हाथ में नहीं था। वायस आफ अमेरिका की पत्रकार रितुल जोशी भी कहती है कैमरा आन करते ही हर तरफ मजदूर घेर लेते थे, उनकी कहानियां इतनी दर्दनाक होती थी और आधे लोग बोलते- बोलते रो पड़ते थे, ऐसे में

यह कह पाना कि, भैय्या तीन फीट की दूरी रखिए,कम से कम मेरे लिए मुमकिन न था। नोएडा की जिस झुग्गी बस्ती में मैं गई वहां एक भी आदमी के मुह पर मास्क नहीं था, लेकिन आधे से ज्यादा लोगों के बदन पर कपड़े भी पूरे नहीं थे, उनसे मास्क, साबुन और सैनिटाइजर की बात करना भी किसी भद्दे मजाक जैसा था।"[16] साफ है कि पत्रकारों के लिए संक्रमण का खतरा था लेकिन कई लोगों के लिए रोजागार जाने का खतरा उससे भी बड़ा था। तकरीबन सभी टीवी चैनलों और अखबारों ने वेतन में कटौती की, कई संस्थानों ने स्टाफ की छंटनी भी की। जाहिर है कि नौकरी जाने का तनाव हर किसी के दिमाग में है, कर्मचारी संस्थान के व्हाट्सऐप ग्रुप में गुहार लगा रहे थे कि उन्हें संकट में धकेला जा रहा है लेकिन जिम्मेदार लोगों को उसकी परवाह नहीं थी। यहां तक कि क्राउडेड को जब पुलिस नाकों पर रोकती तो उसे अपने संपर्कों के जरिए पास करवाया जा रहा था। नतीजें में हमने देखा कि एक ही संस्थान में लगभग 40 लोग कोरोना पाजिटिव पाए गए। एक संस्थान के संपादक अपनी टीआरपी रेंटिग का हवाला देकर लोगों को हर हाल में दफ्तर पहुंचने की धमकी दे रहे थे। कोरोना काल में पत्रकारों को संस्थाओं द्वारा निकाला जा रहा है, महामारी में संक्रमण का खतरा और मौत उनके लिए दोहरा सबब लेकर आई है।

1.2.9) समयांतर पत्रिका में प्रकाशित लेख **'जनता की कीमत पर पूंजीपतियों का लाभ'** में मुकेश असीम लिखते है, " कोविड के नाम पर घोषित आर्थिक पैकेज हो या वित्तीय वर्ष 2021-22 का बजट सबमें विभिन्न तरीकों–जरियों से निजीकरण की प्रक्रिया को ही तेज किया जा रहा है। रेलवे, बंदरगाह, हवाई अड्डे, बिजलीघर जैसे आधारभूत ढांचे के विशाल उघोग हो, टैंक –पनडुब्बी आदि से लेकर स्कूलों के मिड डे मील से लेकर या आंगन बाड़ी में बच्चों को पोषक भोजन के कार्यक्रम हो हर मुमकिन जगह और क्षेत्र में निजीकरण को बढावा देना मौजूदा सरकार की आर्थिक नीति का प्रमुख अंग है।"[17] हम कोविड पैकेज में घोषित ढांचागत सुधार व ईज आफ डुंइग बिजनेस के जरिए होने वाले निजीकरण का उदाहण ले सकते है। कोविड के लिए भारत में विकसित कोवैक्सीन टीका भी इसका उदाहण है। इसके विकास और परीक्षण का मुख्य काम सार्वजनिक क्षेत्र के शोध संस्थान इंडियन काउंसिल आफ मेडिकल रिसर्च तथा सरकारी अस्पतालों में हुआ, मगर उसका मालिकाना हक निजी कंपनी को देकर अब सरकार इसे ऊंचे दामों में खरीद रही है। जहां कोविड महामारी के दौरान निजी स्वास्थ्य सेवाओं के विनाशकारी अनुभव के बाद पूरी दुनिया में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं को सार्वत्रिक और सशक्त करने की जरूरत बताई जा रही है, वही भारत जितनी सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था अभी मौजूद है, उसे भी निजी करने का

काम तेजी से हो रहा है। "जैसे गुजरात में एक मेडिकल कालेज जाइडस कैडीला नामक फार्म कंपनी को सौंपा गया है । इसी तरह 100 सरकारी स्कूलों को सैनिक स्कूल बना निजी एनजीओ को सौंपना है, जबकि इसके लिए सरकारी खर्च सरकारी कोष से किया जाएगा। जबकि कोविड तालाबंदी के कारण देश में पहले ही भारी बेरोजगारी है और बडी तादाद में अस्थाई, दिहाड़ी रोजागार के अलावा एक करोड़ 20 लाख नियमित वेतन वाले रोजगार भी समाप्त हुए है। निजीकरण और मौद्रीकरण सार्वजनिक क्षेत्र को तुलनात्मक रूप से कुछ बेहतर वेतन तथा सुरक्षा वाली अधिकांश स्थाई नौकरियों को कीस तरह जिंदा रहने वाली 12-14 घंटे काम के बाद 10-12 हजार रूपए वेतन वाली नौकरियों में तब्दील कर देगें इसका सबसे बुरा प्रभाव समाज के उन ऐतिहासिक तौर पर वंचित समुदायों पर होगा जिन्हें सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था और सरकारी –सार्वजनिक क्षेत्र में आरक्षित रोजागार से थोड़ी राहत की सांस मिली थी।"[18] उनमें से बहुतों को फिर अत्यंत बेहद गरीबी और घोर शोषण के गड्डे में वापस धकेल दिया जाएगा। निजीकरण का दुष्प्रभाव ये हुआ स्टिंगर और ठेके पर नौकरी पर रखे गए पत्रकारों को बिना अनुमति के निकाल दिया गया है, या उनकी सैलरी कम करी दी गई है। लेख के निजीकरण की जो अवधारणा का विस्तृत व्याख्या की है, पत्रकारों के लिए ये कहानी की तरह है, लगभग सभी समाचार पत्रों ने महामारी का लाभ उठाकर पत्रकारों को नौकरी से निकाला है या उनकी सैलरी कम की है।

1.2.10) जन मीडिया पत्रिका में प्रकाशित लेख **'कोरोना महामारी में डिजिटल स्वास्थ्य परसमाजशास्त्रीय दृष्टिकोण'** में डेबोरा लुप्टन लिखती है कोरोना वायरस के उभार ने बडें सामाजिक और आर्थिक बदलाव लाए है। इन बदलावों में लोगों द्वारा उपयोग की जाने वाली डिजिटल स्वास्थ्य सेवाएं भी शामिल है। "लुप्टन कोरोना वायरस संकट को तीन रूपों में रेखांकित करती है –राजनैतिक अर्थव्यवस्था, फाकलडियन दृष्टिकोण, मोर-दैन-ह्यूमन थ्योरी। कोविड-19 संकट के संदर्भ मे एक राजनैतिक अर्थव्यवस्ता का दृष्टिकोण सभी नागरिक डिजिटल स्वास्थ्य प्रौघौगिकी के साथ जुड़ने या विभिन्न वेबसाइटों ऐपों और सरकारी विज्ञापनों द्वारा हिमायत किए जाने वाले बचाव के तरीकों को सामाजिक रूप से वंचित होने, आवास के स्थान या शिक्षा की कमी जैसे सामाजिक निर्धारकों के कारण अपना पाने में सक्षम नहीं है। फाकलडियन दृष्टिकोण में कहा गया है कि सत्ता का प्रयोग उत्पादक और दमनकारी दोनों हो सकता है। यह तर्क दिया जाता है कि महामारी को नियंत्रित करने के क्रम में सरकारों द्वारा अपनाई गई कुछ डिजिटल तकनीकें लोगों की आजादी में दखलअंदाजी करती है और प्रतिबंध

लगाती है। मोर –दैन –ह्यून थ्योरी के सिद्धांत से पता चलता है कि कोविड-19 के मामले में महामारी समुच्चय के लगातार बदलते रहने से महामारी का रूप उभर कर आया। नई डिजिटल स्वास्थ्य तकनीकों का एक समूह भविष्य में उभरेगा। जो संक्रामक बीमारी के नए प्रकोपों के साथ–साथ दीर्घाकालिक स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान देगा।"[19] इस तीनों दृष्टिकोणों ने कोरोना और पत्रकारों को रेखांकित करती है, जहां एक ओर सरकारों ने डिजिटल की आड़ में पत्रकारों के कार्यों पर परोक्ष या अपरोक्ष से नियंत्रण की शुरूआत की है। लेकिन वहीं दूसरी और नई टेक्नेजाली ही सरकार के इस नियंत्रण को रोकने का नया हथियार होगी।

1.2.11) प्रीति सिन्हा "फिलहाल" पत्रिका के अपने संपादकीय लेख **'कोविड अर्थशास्त्र'** में लिखती है "कोविड-19 महामारी ने पूंजीवाद की बुनियादी प्रवृत्ति को और मजबूत किया है, यानी कि समृद्ध् लोगों और तबकों को और मजबूत बनाना और कमजोर और हाशिए पर फेंक दिए गए लोगों को और दुर्दशा की ओर धकेलना। कोविड-19 महामारी के दौरान सरकारों की बदइंतजामी और लापरवाही के साथ-साथ कारपोरेट मुनाफाखोरी को बढाया है।"[20] दूसरी और एसबीआई के आंकड़े बताते है, "बीते साल जून से दिसंबर के बीच परिवारों के बचत आधी से कम रह गई। परिवारों की कुल वित्तीय बचत, यानी रूपए पैसे के रूप में रखी गई बचत देश के सकल देशीय उत्पाद का 21 फीसदी थी जो सिंतबर में घटकर 10.4 फीसदी रह गई।"[21] जबकि इसी बीच कोविड -19 महमारी ने सैनिटाइजर, दास्ताने, पीपीइ किट्स ,दवाएं और फिर टीके के उत्पादन से मुनाफा बटोरने के बेशुमार मौके दिए। इसके साथ ही जरूरी और उससे भी ज्यादा गैरजरूरी जांच के नाम पर पैसे बटोरने के भी। साथ ही तुर्रा ये है कि पैसे वसूले जाते है, नमूने लिए जाते है और रिपोर्ट तक नहीं आती। ये हाल तमाम रेलवो स्टेशनों और हवाई अड्डो का है वर्तमान इतिहास के सबसे ज्यादा उतार चढाव वाले इस दौर में वाशिगंटन पोस्ट द्वारा किए गए एक विश्लेषण के मुताबिक अमेरिका की सबसे ज्यादा बेशकीमती 45 से 50 फीसदी सार्वजनिक कंपनियों का मुनाफा बदस्तूर बढता जा रहा है। जबकि कुल मिलाकार इन कंपनियों से 1,00,000 कामगारों को काम से हटाया गया। जिस समय पर कंपनियों कोविड-19 में वैक्सीन और टीके के नाम पर बेइंतहा मुनाफा कमाती जा रही है। जब कि इसके इतर ओर दुनिया मानव इतिहास में सबसे भीषण गैरबराबरी, भारी पैमाने पर बेरोजगारी, अल्पबेरोजगारी, गरीबी, भूख, कंगाली और उत्पादन और जीवन के नुकसान का सामाना कर रही है। हाल ये तमाम पूंजीपूतियों की संपति कोरोना काल में अत्यधिक बढोतरी हुई है। भारत में

इससे अछूता नहीं है, भारत के सर्वाधिक अमीर व्यक्तियों की संपतियों में लगातार इजाफा हो रहा है। जबकि एक तबका गरीब होता जा रहा है। यही हाल मीडिया मालिकों का भी है, वो लगातार नए प्लेटफार्म और कंपनियों खोलते जा रहै है, पत्रकारों को मजदूर की भांति निकाला जा रहा है।

1.2.12 इंडिया टुडे पत्रिका में प्रकाशित लेख '**थोड़े को बहुत ही समझे** 'में सोनाली आचार्जी लिखती है। कोरोना वायरस से फैली महामारी के दौरान ऐंटीबायोटिक की खपत में बढ़ोतरी ने चिकित्सा विशेषज्ञों को चिंता में डाल दिया। "भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद की माइक्रोबायोलाजिस्ट कामिनी वालिया कहती है, सेकंडरी बैक्टीरयल इंफेक्शन के डर या कोविड का निश्चित इलाज नहीं होने से जमकर ऐंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध दवाइयां लिखी गई। ऐंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध अपने आप में भारत में खामोश महामारी है, जिसे कोविड और बढ़ रहा है। भारत के लोगों ने अप्रैल में 15,662 करोड़ रुपये की दवाइंया खरीदी, पिछले साल के मुकाबले 51.5 फीसदी ज्यादा। रिसर्च फर्म एआइओसीडी – एसब्लयूएसीएस की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, संक्रमण रोधी दवाइयों में 134 फीसदी का इजाफा। इन दवाइयों का बड़ा हिस्सा ऐंटीबायोटिक्स है। 2020 के आखिर तक वाकई ऐसे अध्ययन सामने आने लगे, जिन्होंने निर्णायक तौर पर कहा कि कोविड के इलाज में ऐंटीबायोटिक मदद नहीं करते।"[22] कोरोना महामारी के दौरान लगातार दी जा रही एंटीबायोट्किस के कारण यह निष्कर्ष निकाला गया कि हास्पिटल में भर्ती कोविड के मरीजों के लिए एजिथ्रोमाइसिन कारगार नहीं है। लेकिन "भारत के केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने मार्च के 2020 के दिशा निर्देशों में एजिथ्रोमाइसिन की सिफारिश की गई थी। लेकिन जुलाई में इसे हटा लिया गया। आने वाले समस्या इस बात की है कि ऐंटीबायोटिक्स का जरूरत से ज्यादा गलत इस्तेमाल करने से ऐसा न हो कि बैक्टीरया कुछ दवाओं का आदी हो जाए, उस पर उन दवाओं का असर ही न हो।"[23] आने वाले समयमें मुसबीत तब आयेगी जब कोरोना खत्म हो जायेगा। जब अगली बार बैक्टीरिया के संक्रण के इलाज के लिए ऐंटीबायोटिक देने की जरूरत होगी, क्योंकि वह दवा बैक्टीरिया पर तब तक बेअसर हो चुकी होगी, यह बैक्टीरिया दूसरों को भी संक्रमित कर देगा। तमाम निष्कर्ष यह कहते है कि ऐसा कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है, कि जो कोविड के इलाज में ऐंटीबायोटिक्स के इस्तेमाल का समर्थन करता हो। कोरोना वायरस के लक्षण होने पर कोई दवाई नहीं लेने का मतलब यह नहीं यह नहीं कि आप लक्षणों का इलाज न करें, ऐंटीबायोटिक अद्भुत दवाइंया है और जीवन रक्षा का इनका इतिहास रहा है। बात बस इतनी है कि इनका सही इस्तेमाल हो।

1.2.13) पंकज बिष्ट द्वारा संपादित पत्रिका समयांतर के एक लेख **'क्या स्वास्थ्य हमारे लिएअब भी प्राथमिकता नहीं है?'** में शैलेश विश्लेषित करते है, चिकित्सा विशेषज्ञ काफी वर्षों से ही भारत की बेहाल स्वास्थ्य ढांचे के प्रति चेतावनी देते आ रहे है। विशेषज्ञों ने कल्पना भी नहीं की होगी कि उनकी निराशाजनक भविष्यवाणी में इतनी बदतर हालत की कल्पना नहीं की गई थी। जिससे इस देश में शासन करने वाले की हद दर्जे की संवेदनहीनता और खुदगर्जी को तो बेनकाब ही कर दिया है, इसके साथ ही कोरोना महामारी की समस्या को कमतर आंकने वाली उनकी शुतुरमुर्गी दृष्टि और खोखले अंहकार को भी चकनाचूर कर दिया है।वायरस से उपजी महामारी ने यूं तो पूरे तंत्र को बेनकाब किया है, इसके साथ ही चिकित्सा व्यवस्था की तो इसने कलई खोल कर रख दी है। "कोरोना महामारी के दौरान शासक जिस तरह निरूपाय दिख रहे है और जिस तरह से उन्होंने अपने हाथ खड़े कर दिए है और आम लोगों को उनके हाल पर छोड़ दिया है, वह अपराधिक है। हालत यह है कि सत्ता विराजमान लोग या सीधे–सीधे हिस्सेदारी करने वाले पदों पर बैठे लोग जिनमें आईएएस, विधायक, पत्रकार तक अपने लोगों को अस्पतालों में बेड नहीं दिला पाए और उन्हें मरते हुए असहाय देखते रहे। क्या सत्ता के चरणामृत में ही मगन रहने वाले और ऐंठे-ऐंठे चलने वाले ये सभी कल सरकार पर सार्वजनिक स्वास्थ्य ढांचे पर निवेश करने और निशुल्क स्वास्थ्य व्यवस्था के लिए आंदोलन छेड़ेगे? शायद ही ये कोई ऐसा आंदोलन छेडे या किसी आंदोलन का खुलकर समर्थन करे।"[24] एक ओर जहां डाक्टारों और अन्य स्वास्थ्य कर्मचारियों का यह प्रशिक्षण दिया जाता है, कि वे मर रहे व्यक्ति में हर संभव कोशिश करे कि वो व्यक्ति बच जाएं। लेकिन एक ओर मर रहे और जनविमुख होते जा रहे स्वास्थ्य ढांचे में जान फूंकने का काम वे कर नहीं सकते। यह काम केवल मौलिक अधिकार बनाने और मुफ्त और उत्कृष्ट स्वास्थ्य प्रणाली की मांग करने वाला एक सशक्त जनआंदोलन ही कर सकता है। चूंकि भारत वासियों की स्मृतियों की उम्र बहुत छोटी है, चाहे वह कोरोना वायरस से उपजी महामारी को लेकर या फिर कोई अन्य जनविरोधी कार्यों के लेकर हुआ आंदोलन। स्मृतियों का धुंधला होना, जो कि हमारे लिए फायदेमंद है, तो नुकसानदेह भी है।

1.2.14) न्यूज लाउंड्री में प्रकाशित लेख **'पक्षकारिता: आज मर रहे पत्रकारों को बचाइए, उम्मीदबची तो कल पत्रकारिता भी बच जाएगी'** में महामारी के कसते शिंकजे के आलोक में हिंदी के ज्यादातर अखबारों के अचानक बदले चरित्र और जनपक्षधर रिपोर्टिंग ने इशारा किया है। अभिषेक श्रीवास्तव लिखते है "अक्सर खबरें वे नहीं होती जो छप जाती है जो रद्दी की टोकरी में फेंक दी जाती है।

कोरोना वायरस से उपजी महामारी में भाषायी पत्रकारिता की हकीकत ये है कि क्षेत्रीय और स्थानीय पत्रकारों की मौत को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया गया है। जब मैं पत्रकार कह रहा हूं तो उसका सीधा आशय उनसे है जो कलमजीवी है, जिनकी आय का स्रोत लिखना है, गांव और छोटे शहरों से चलकर दिल्ली के कांच के मीडियाप्लेक्सों का तबाही के मंजर का अहसास तब हुआ जब जनता की खबर लेने वाले कोई 300 पत्रकार कोरोना काल में कुद काल कवलित हो चुके थे।"[25] कोरोना वायरस महामारी ने बीते 13 महीनों को अगर उदारीकरण के साथ जोड़ दे तो वैश्वीकरण से आए मशीनीकरण ने लेखकों-पत्रकारों को बुनियादी जरूरतों के लिए तरसा दिया है। भारत के लोकतंत्र यानि कि चुनाव के समय जब दिल्ली और नोएडा के लखटकिया वेतन उठाने वाले मीडियाकर्मी जिलों में जाते है? तब यह अपने सोर्स को फोन करते है, यह सोर्स कौन होता है, वही स्थानीय और क्षेत्रीय पत्रकार होता है। जो आज थोक के भाव महामारी का शिकार हो रहा है। जर्नलिज्म अगर सत्ता तक पहुंचने की सीढ़ी या केवल पावर का मसला भर होता तो इस समय देश के हर जिले से लगभग पचास अखबार और वेबसाइटों नहीं निकल रही होती और केंद्र के सत्ता प्रिय पत्रकार उच्च चिकित्सीय सहायता के बावजूद मर नहीं रहे होते। महामारी के इस अंधेरे वक्त मे लौ को भरसक जलाए रखने वाले पत्रकार स्वंय मोम के जैसे पिघल रहे है, पत्रकारों को पत्रकारिता करने को किसी ने नहीं कहा है, न ही किसी ने इसका टेंडर आवंटित किया है, पत्रकार बस एक उम्मीद के साथ आशा की किरण जगाए हुआ है, ये किरण उसे प्रेरणा के रूप में अलग - अलग विचारों आदर्शों के रुप में प्राप्त होती है, जिनमें कोई गांधी, अंबेडकर, गणेश शंकर विघार्थी के विचारों की बुनियाद में एक उम्मीद के सहारे अपनी जमीन और समाज को आशा और जनचेनता के लिए पत्रकारिता की राह पकड़ रहा है। जिसके कारण हमें यह समझना होगा "कि अखबार अकेले पूंजी, मशीन या मालिक से नहीं चल सकते, अखबार के मूल में उसका पत्रकार है। पत्रकार में उम्मीद बचेगी, तो ही पत्रकार बचेगा और अखबार भी बचेंगा, अखबार बचा, तो ही वो पढ़ने वालों की उम्मीद को बांध पाएगा। अखबार बचा, तो सही वक्त आने पर उसके लिए तोप भी मुकाबिल होगी।"[26] लेख का आधार यही है कि अखबार का अस्तित्व पत्रकार से है, अगर पत्रकार नहीं रहेगा तो अखबार का कोई भविष्य नहीं रहेगा। महामारी ने क्षेत्रीय पत्रकारों को मौत के मुंह में ढकेल दिया। जब कि सूचना का पहले केंद्र वही है,अगर वह बचेगा, तो पत्रकारिता और अखबार स्वंय बच जायेगे।

1.2.15) जनपथ पत्रिका के विशेषांक कोरोना: वैश्विक महामारी के प्रकाशित लेख **'महामारी के दौरका साहित्य और साहित्यकार'** में शंभु पी. सिंह लिखते है "आज पूरा विश्व कोविड महामीर के दौर से गुजर रहा है। महाप्राण निराला ने अपनी आत्मकथ्यात्मक उपन्यास कुल्ली भाट में 1918-20 के दौरान फ्लू महामारी का चित्रण करते हुए लिखा है- दाह संस्कार के लिए लकडियां कम पड़ जाती थी और जहां तक नजर जाती थी गंगा के पानी में लाशें ही लाशें दिखाई देती थी। निराला के ये पंक्तियां आज के हालात को भी चित्रित करती है।"[27] कोरोना के कारण यही भयावहता आज के दौर में भी देखने को मिल रही है। महमारी के दौरान जान गंवाने लोगों का शव भी उनके परिवार वालों को नसीब नहीं हुआ, ज्ञान और विज्ञान चाहे जितना इंसान की तरक्की का ढिढोरा पीट ले जब-जब महामारी आई है, उसके आगे विज्ञान बेबस नजर आया है, जब संक्रामकता वीभत्स रूप ले लेती है। यही संक्रामकता रिश्तों की डोर खोल देती है, अपने पराये और पराये अपने हो जाते है। ऐसे समय में जब शर्मसार होती मानवता अपना वजूद तलाशने पर विवश हो जाती है। संवेदनाए कुंद पड़ जाती है। लेकिन कोरोना जैसी महामारियां अकारण नहीं आती है। हमारी लिप्सा इसका वाहक होती है। इसलिए जब तक प्रकृति से छेड़छाड़ होती रहेगी, ऐसी महामारियां भी आती ही रहेगी, मानव इसी तरह अकाल मृत्यु का शिकार होता रहेगा। जब कोरोना जैसी ही महामारी की भयावहता जब खत्म हो जाएगी। तब हम उन्हें भूल जाएंगे जिन्होंने इस समय को बांधने की कोशिश में खुद ही काल के जाल में फंस गए और अपने प्राणों की आहुति दे दी। कोरोना महामारी के सैकड़ों मनीषियों ने इस कारण अपने प्राणों की कुर्बानी दे दी, कि संपूर्ण मानवता को इस महामारी से बचाया जा सके। जिसका अंकन होना अभी बाकी है।

1.2.16) द वायर में प्रकाशित लेख **'कोरोना काल, दुनिया और भारत और मीडिया की स्वतंत्रता'** में राजू पांडे लिखते है, "रिपोर्टर्स विदाउट बार्डर्स द्वारा तैयार 2020 का विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक कोरोना काल में प्रेस की स्वतंत्रता को मिल रही चुनौतिया को रेखांकित करता है, रिपोर्टर्स विदाउट बार्डर्स के विशेषज्ञों के अनुसार आने वाला दशक पत्रकारिता के भविष्य के लिए निर्णायक सिद्ध होगा। कोविड-19 महामारी ने बिना किसी बंधन के स्वतंत्रता पूर्वक रिपोर्ट की गई विविधतापूर्ण और विश्वसनीय सूचनाओं की उपलब्धता के मार्ग में आने वाले संकटों को प्रमुखता से दर्शाया है। विभिन्न देशों ने वैश्विक महामारी की आड़ में मीडिया की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने की कोशिश की है और विश्व प्रेस फ्रीडम इंडेक्स में उनकी रैंकिग पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। वुहान में कोरोना के आरंभिक

आक्रमण से संबधित खबरों को प्रसारण पर रोक लगाने के आरोप झेल रहे चीन की रैंकिग 180 देशों में 177 वीं है।"[28] तमिलनाडु प्रांत में सिम्पलिसिटी न्यूज पोर्टल के संस्थापक और सीईओ पांडियन को एपिडेमिक डिसीज एक्ट के उल्लघंन के आरोप में हिरासत में लिया गया है। महामारी के संक्रमण की रोकथाम को आधार बनाकर सरकारें अपनी निगरानी बढा रही है। कोरोना काल में मीडिया के दमन को लेकर आई बढ़ती प्रवृत्ति की व्याख्या करने के लिए नाओमी क्लेन की शाक डाक्ट्रिन की अवधारणा का सहारा ले रहे है। क्लेन के अनुसार सरकारें युद्ध, विद्रोह, आतंकवादी हमले, बाजारों की गिरावट और प्राकृतिक आपदा आदि का सहारा लेकर ऐसे कारपोरेट समर्थक सुधारों को लागू करने की कोशिश करती है। ऐसी परिस्थितियों का सामान्य समय में लागू करने पर जनता का भारी विरोध और मीडियाकर्मी का भी दबाव देखने को मिलता है। भारत का प्रेस स्वतंत्रता के मामले में स्थान अच्छा नहीं रहा है। हाल ही में जारी हुई इस वर्ष के विश्व प्रेस फ्रीडम इंडेक्स में भी हम दो स्थान नीचे खिसकर 142 वें स्थान पर रहे है। भारत में प्रेस की स्वतंत्रता का मामला सरकार बनाम प्रेस जैसा सरल नहीं है। भारतीय प्रेस के दो वैचिरिक धड़ों के संघर्ष की जटिलता को स्वंय में समेटे है, जिसमें सरकार को कुछ करना नहीं है वह एक तरह से रेफरी की भूमिका में है। मीडिया की स्वतंत्रता की समस्या की जडे प्रेस के भीतर ही फैली हुई है। और इसके समाधान का कोई भी प्रयास वैसा ही कठिन होगा जैसा कि मरीज के दवारा स्वंय सर्जरी करना। महामारी के भीषण संक्रमण में भी एक बड़े भाग ने सस्ते, दिखावटी और सजावटी राष्ट्रवाद को बढावा दिया है। महामारी के प्रसार की सांप्रदायिक व्याख्याएं की है, नायकत्व पूजा को एक तरह से रोमाटसाइज किया है। मीडिया के तमाम खामियों के बावजूद अभी भी उम्मीद मीडिया से ही है।

1.3) अध्ययन की समस्या

इस शोध के अंतर्गत कोरोना वायरस के कारण उपजी महामारी से पत्रकारों के दैनिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। जिसका पूर्ववर्ती शोध में वर्णन नहीं किया गया है। पूर्व के शोध में प्रिंट मीडिया एवं पत्रकरों का जिक्र किया गया है,लेकिन उनकी दैनिक समस्याओं जैसे कि कोरोनामहामारी के दौरान पत्रकरों को मीडिया संस्थान ने क्या मदद की और रिपोर्टिंग और सूचना संग्रहण के दौरान उनको किन मुश्किल और चुनौतियों का सामना करना पड़ा है,इसका अध्ययन नहीं किया गया है। प्रस्तुत शोध के अंतर्गत पत्रकारों को कोरोना से आई चुनौतियों और जीवन में आई विसंगतियों कोशोध के अंतर्गत

समस्या के रूप में चिन्हित किया गया है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से इन प्रश्नों और समस्याओं का उत्तर देने का प्रयास किया गया है।

1.4) शोध के उद्देश्य

1.4.1 कोविड-19 के दौरान प्रिंट मीडिया पत्रकारों की कार्यप्रणाली पर पड़ने वाले प्रभावअध्ययन करना।

1.4.2 कोविड-19 के दौरान प्रिंट मीडिया पत्रकारों की जीवन से जुड़ी असुरक्षा और विसंगतियों का अध्ययन करना ।

1.4.3 महामारी के इस दौर में पत्रकारों द्वारा अपने जीवन और आजीविका के बीच संतुलन को ज्ञात करना ।

1.4.4 कोविड से संक्रमित प्रिंट मीडिया पत्रकारों के प्रति संस्थान द्वारा सहायता का विश्लेषण करना।

1.5) शोध प्रश्न

1.5.1 कोविड-19 ने प्रिंट मीडिया पत्रकारों की कार्य प्रणाली को किस प्रकार प्रभावित किया है?

1.5.2 कोविड-19 के कारण प्रिंट मीडिया पत्रकारों के जीवन में किस प्रकार असुरक्षा की भावना आई है?

1.5.3 महामारी के इस दौर में पत्रकारों ने अपने जीवन और आजीविका के बीच किस प्रकार संतुलन स्थापित किया?

1.5.4 कोविड-19 से संक्रमित पत्रकारों के इलाज के लिए मीडिया ने संस्थान ने किस प्रकार सहायता उपलब्ध करायी है?

1.6) शोध का महत्व

1.6.1 इस शोध के माध्यम से प्रिंट मीडिया पत्रकारों के जीवन संघर्ष और बलिदान से जनमानस को अवगत कराना।

1.6.2 यह शोध सरकार को प्रिंट मीडिया पत्रकारो के लिए कई हितकर एवं कल्याणकारी योजना बनाने में सहायक होगा।

1.6.3 इस अध्ययन के माध्यम प्रिंट मीडिया पत्रकारों के प्रति संस्थान एवं समाज को संवेदनशील बनाने में मदद करना।

1.6.4 यह शोध कार्य प्रिंट मीडिया पत्रकारों को उनके अधिकारों के प्रति जागरुक करने में सहायक होगा।

1.7) शोध अभिकल्प

इस लघु-शोध कार्य में वर्णनात्मक एंव विश्लेषणात्मक शोध अभिकल्प का उपयोग किया है ।इस शोध के अंतर्गत कोविड के पत्रकरों का प्रभाव जाने के लिए विश्लेषणात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है।

1.8) शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में कोविड महामारी का प्रिंट पत्रकारों पर प्रभाव जानने का प्रयास किया गया है ,जिसके लिए सर्वेक्षण पद्ति का उपयोग किया गया है। जिससे पत्रकारों के कोविड पर विचारों,प्रभाव एवं मत का आकलन किया जा सके।

1.9) शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में अ-संभाव्यता निदर्शन पद्ति का उपयोग किया गया है, जिसके अंतर्गत उद्देशयात्मक निदर्शन पद्धति अपनाई गई है।

1.9.1) अध्ययन की इकाई

शोध की इकाई के रुप में कोविड-19 के दौरान लखनऊ के सबसे ज्यादा प्रसारित होने वाले हिंदी के समाचार पत्रों में कार्यरत 100 पत्रकारों का चयन किया गया है ।

1.9.2) अध्ययन का समग्र

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ इस अध्ययन का क्षेत्र है,जिसके अंतर्गत लखनऊ के प्रमुख दैनिक हिंदी राष्ट्रीय समाचार पत्रों का चयन किया गया है। जिनमें सर्वाधिक प्रसारित दैनिक हिंदी के चार प्रमुख समाचार पत्र दैनिक जागरण,अमर उजाला,हिंन्दुस्तान,नवभारत टाइम्स को शामिल किया गया है।

1.9.3) अध्ययन के उपकरण

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक सूचना के लिए प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया है,जिसमें उत्तरदाताओं से कोविड का प्रभाव और मीडिया संस्थानों की मदद संबधी प्रश्न पूछे गए है।

1.9.4) तथ्यों का संकलन

प्राथमिक स्त्रोत – इस शोध के अंतर्गत तथ्यों के संकलन के प्राथमिक स्त्रोत के लिए प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।

दितीयक स्त्रोत – तथ्यों के संकलन के दितीयक स्त्रोत के लिए सार्वनिक स्त्रोत का उपयोगकिया गया है,जिनमें लेख,पुस्तके,मीडिया रिपोर्ट,पत्रिकाओं को शामिल किया गया है।

1.10) निष्कर्ष

मानव जैसे ही संपूर्ण दुनिया पर एकाधिकार स्थापित करने लगता है, वैसे ही दुनिया का आकार बिगडने लगता है,यही से मनुष्यता पर संकट आना आंरभ हो जाता है। कोरोना वायरस महामारी भी इस का प्रतिरूप है,चाइना जो कि प्रकृति और पर्यावरण को अपने अनुरूप ढालना चाहता है,जिसके कारण उसने ऐसे शोध किए जिससे दुनिया का प्रारूप बदल सके। इसी कड़ी में कोरोना वायरस(सार्स) की शुरूआत सबसे पहले 2002 में चाइना में हुई,तब से यह वायरस अपने आकार बदलता रहता है। वर्ष 2019 में कोरोना वायरस अगला प्रारूप सार्स कोव-2 आया। जिसने चाइना के साथ-साथ दुनिया की सामाजिक,आर्थिक संरचना को बदलकर रख दिया है,इसी क्रम में अगले अध्याय में कोरोना के व्यापक स्वरूप,प्रभाव,लक्षण की व्याख्या की गई है,जिससे संपूर्ण दुनिया प्रभावित हुई है

1 चौधरी, बी.आर. (2020). कोविड-19 षड़यंत्र से समाधान तक.डांयमड पाकेट बुक्स ,पृष्ठ-40

2 चौधरी, के.(2018).प्रिंट मीडिया का अस्तित्व कठिन है मगर...द पालिसी टाइम्स .http://the policytimes.comexistence-of-print-media-path-is-difficult/

3 असीम, एम. (2021). आपदा में अवसर पर किसके लिए?. *समयांतर (*अंक-10),पृष्ट-20

4 Ibid.pp-20.

5 प्रसाद, आर(2021). कोरोना के दौर में दुनिया भर में मीडिया पर कसत सरकारों का शिंकजा . बीबीसी हिंदी.

6 प्रधान, ए. (2020). स्वास्थ्य और संकट संचार के क्षेत्र में गंभीर शोध की जरूरत. संचार माध्यम. पृष्ठ सं-3

7 रस्तोगी, के.सिंह.एस. (2020). कोविड-19 व सरकार के सुरक्षात्मक संवैधानिक अधिकार. प्रभात एग्जाम, पृष्ठ-24

8 सत्यार्थी, के. (2021). कोविड-19 और सभ्यात का संकट. प्रभात पेपरबैक्स. पृष्ठ सं-20

9 चौधरी, बी. (2020). प्रा-यमराज का विज्ञान. डायमंड बुक्स, पृष्ठ सं-40-41

10 रस्तोगी .के .सिहं.एस. (2020). कोविड-19 और लॉकडाउन-अनलॉक डाउन. प्रभात एग्जाम. पृष्ठ-26-29

11 ठाकुर. आर.(2021) .कोरोना के बाद दुनिया कैसी होगी?, आईसेक्ट पब्लिकेशन, पृष्ठ-75

12 प्रधान, ए.(2020). आंशका और अनिश्चितता के बीच वर्तमान और भविष्य की गुत्थियां. अभिनव कदम,पृष्ठ-28

13 श्रीवास्तव,ए. (2021) बीते दो हफ्ते में कोरोना के हाथों मारे गए सो बेनाम पत्रकारों को क्या आप जानतेहै?. जनपथ

14 Ibid-8

15 कमलेश. (2020). कोरोना संकट के बीच पत्रकारों पर मीडिया हाउस गिरा रहे है गाज. बीबीसी हिंदी

16 कृष्णकांत.(2021). कोरोना काल में पत्रकार जान बचाएं या नौकरी? द वायर

17 असीम, एम. (2021). जनता की कीमत पर पूंजीपतियों का लाभ. समंयतार ,पृष्ठ-15-18

18 Ibid-19-20

19 लुप्टन, डी.(2020) कोरोना महामारी में डिजिटल स्वास्थ्य पर समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण. जन मीडिया, पृष्ठ-9-10

20 सिंहा, पी. (2020). कोविड अर्थशास्त्र, पत्रिका.पृष्ठ-1-2

21 Ibid- page no-3-5

22 आचार्जी, एस.(2021). थोड़े को बहुत कम ही समझें, इंडिया टुडे.पृष्ठ -43

23 Ibid-page -43-44

24 शैलेश. (2021) क्या स्वास्थ्य हमारे लिए अब भी प्राथमिकता नहीं है ?. समयांतर ,पृष्ठ-19-21

25 श्रीवास्तव, ए. (2021). पक्षकारिता:आज मर रहे पत्रकारों को बचाइए, उम्मीद बची तो कल पत्रकारिता भी बच जाएगी. न्यूजलांउड्री.

26 ibid

27 सिंह, एस.(2021). महामारी के दौर का साहित्य और साहित्याकार.जनपथ-पृष्ठ-49-51

28 पांडे, आर.(2021). कोरोना काल,दुनिया और भारत और मीडिया की स्वतंत्रता. द वायर.

अध्याय-द्वितीय

कोविड-19 का परिचयात्मक संदर्भ

2.1) कोरोना वायरस परिचय

लैटिन भाषा में वायरस शब्द का अर्थ है –'जहर'। ''वायरस का आकार 18 नैनोमीटर्स से लेकर 400 नैनोमीटर्स तक होता है। वायरस पोषक कोशिका-निर्भर कण है, ये अपनी संरचना के निर्माण के लिए पोषक कोशिका मशीनरी का उपयोग करते है। वायरस, प्रोटीन कोट से ढका हुआ न्यूक्लिक एसिड का एक अणु है, जो संक्रमण फैलाने में सक्षम होता है।''[1] विषाणु एक सूक्ष्म अवकोशिकीय जीव है, जिसको अगर जीवित कोशिका नहीं मिलते तो वह सैकड़ों वर्षों तक सुषुप्तावस्था में पड़ा रहता है। जैसे ही विषाणु को एक जीवित कोशिका मिलती है, वह जीवित हो उठता है और अपने वंश को बढ़ाने लगता है। विषाणु जैसे ही किसी जीवित कोशिका में प्रवेश करता है, उसके बाद ही मूल कोशिका के आरनए एवं डीनए की जेनेटिक संरचना को अपनी जेनेटिक संरचना में बदलने लगता है और विषाणु से प्रभावित कोशिका अपने जैसे संक्रमित कोशिकाओं का पुनरूत्पादन शुरू कर देती है। विषाणु अपने आप प्रजनन नहीं कर सकता, इसी कारण विषाणु को जीवित नहीं माना जाता, लेकिन जैसे ही विषाणु जीवित कोशिका में प्रवेश करता है, वह पुन सक्रिय हो जता है। इस प्रकार विषाणु जीवन और मृत्यु के बीच बारीक-सी रेखा पर खड़ा पाया जाता है। विषाणु को सजीव और निर्जीव के बीच की कड़ी कहा जा सकता है।

विषाणु कई प्रकार के होते है। जैसे - जंतु विषाणु। ये ऐसे विषाणु है, जो कि जंतुओं में फैलने वाले संक्रमणों के लिए उत्तरदायी है। इस प्रकार के विषाणु में न्यूक्लिक अम्ल प्राय डीनए और कभी-कभी आरनए में भी होता है। जैसे -इन्फ्लूएंजा, मम्पस विषाणु। पादप विषाणु, इस प्रकार के विषाणु होते है, जो पादपों में होने वाले संक्रमण फैलाने के लिए उत्तरदायी होते है। इसमें न्यूक्लिक अम्ल आरनए का होता है।

2.1.1) कोराना वायरस

कोरोना का लैटिन भाषा में अर्थ है - राजमुकुट (क्राउन)। इसे जब सूक्ष्मदर्शी द्वारा देखा गया तो इसकी संरचना कांटों जैसे प्रतीत हुई, जिसके कारण यह एक मुकुट (क्राउन) जैसे प्रतीत हो रहा था। जिस

कारण इस कोरोना नाम दिया गया। इस तरह के वायरस मनुष्य के श्वसन तंत्र को ऐसे संक्रमित करते है, कि जिससे सांस लेना मुश्किल होता चला जाता है। कोरोना वायरस एक गंभीर श्वसन सिण्ड्रोम (सार्स) परिवार का एक बेहद खतरनाक वायरस है। कोराना वायरस एक प्रकार का आरनए वायरस है। इसका आकार 120 से 160 नैनोमीटर होता है।

ऐसे वायरस किसी भी संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने के कारण फैलता है और यह वायरस जब शरीर के भीतर प्रवेश करता है, तब कोशिकाओं को तोड़कर उनका प्रयोग खुद को फिर से उत्पादन करने के लिए करने लगता है। कोरोना वायरस ऐसा वायरस जिससे प्राय जानवर और मनुष्य को बीमारी होती है। ये मुख्यत बिल्ली, चमगादड़ के जरिए मानव में प्रवेश करता है। संक्रमित व्यक्ति से यह वायरस अन्य मनुष्यों में प्रवेश कर जाता है।

2.1.2) कोराना वायरस का नामकरण (कोविड-19)

आंरभ में एक नए प्रकार के कोरोना वायरस होने के कारण इसे नोबल कोरोना वायरस 2019(n Cov-2019) का नाम दिया गया, जो इसका एक अस्थायी नाम था। कोरोना वायरस दिसंबर 2109 में चीन के वुहान शहर के खाद्य बाजार में नोवेल कोरोना नामक विषाणु से उत्पन्न हुआ, इसीलिए इसे कोविड-19 नाम दिया गया। इस वायरस के सार्स वायरस के साथ समानता देखते हुए , ''द कोरोना वायरस स्टडी ग्रुप आफ इंटरनेशल कमेटी के आन टेक्नोलाजी आफ वायरस ने इसका नाम सार्स-कोव-2 रखा। विश्व स्वास्थय संगठन ने कोविड-महामारी को एक सर्वव्यपी महामारी घोषित कर दिया। अंतत विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना वायरस का आधिकारिक नाम कोविड-19 रखा। इसमें को का अर्थ कोरोना ,वि का अर्थ वायरस तथा डी का अर्थ डिसीज है। इस विषाणु की पहचान पहली बार 31 दिसंबर 2019 को चीन में हुई थी। जिस कारण में वर्ष 2019 में से 19 का अंक लिया गया है।''[2]

कोरोना वायरस एक आरनए वायरस है। श्वसन इन्फुएंजा वायरस होने का अर्थ यह है, कि यह केवल मुंह और नाक से सीधे मानव के शरीर के भीतर प्रवेश करता है। आरनए श्वसन इंन्फलुएंजा वायरस है जिसके कारण इसके लिए कोई दवा या वैक्सीन इसके लिए बहुत कारगर नहीं हो सकता है, क्यों कि इसका कारण यह है कि ये वायरस बहुत आसानी से और जल्दी अपना रूप बदलता है। यूनिवर्सिटी आफ लंदन के शोध के मुताबिक यह वायरस अब तक 198 बार बदल चुका है। इस कारण यह निश्चित तौर पर कहा

जा सकता है, जब यह वायरस वुहान में फैला तब से यह कई बार अपना स्वरुप बदल चुका है। जिसके कारण ऐसे वायरस के लिए जो इतना बार उत्परिवर्तन करते है। कोई टीका या दवा बहुत प्रभावी नहीं हो सकते है।

2.2) कोरोना वायरस के प्रकार

प्रमुख मानव कोरोना वायरस निम्न है-

सार्स- सार्स वायरस सर्वप्रथम चीन के गुआंगदोगं शहर में 2002 में उत्पत्ति हुई। वायरस का नाम इसकी सतह के चारों ओर एक हेलोलाईइक कोरोना या क्राउन की तरह दिखने के कारण रखा गया। "सार्स का अर्थ सीवियर एक्यूट रेसपिरेटरी सिंड्रोम है। यह मूलत जूनोटिक मूल का वायरस डिजीज है, जिसके कारण कोरोना वायरस(सार्स-कोव) होता है। सार्स-कोव की उत्पत्ति के मुख्य स्त्रोत चमगादड़, गिलहरी, रैक्कोन, कुत्ते आदि थे। विश्व स्वास्थ्य संगठन सार्स कोरोना वायरस कुछ ही सप्ताह के भीतर 37 देशों में फैल गया। इस महमारी से अब तक 8096 मामले दर्ज हुए है, जिसमें सर्वाधिक मौतें हांगकागं(774) हुई है।"[3] सार्स वायरस से कोराना वायरस बीमारी से जुडा हुआ है, सार्स कोरोना वायरस एक प्रकार का आरनए वायरस है, जो फेफड़ो के भीतर कोशिकाओं को संक्रमित करता है। सिवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम एक ऐसे वायरस के कारण होता है जो सीधे शरीर की कोशिकाओं को प्रभावित करता है और इन कोशिकाओं का इस्तेमाल कर अपने आप ही पूरे शरीर में फैल जाता है। सार्स वायरस मनुष्य के शरीर के बाहर किसी भी वस्तु की सतह पर कई घंटों तक जीवित रह सकता है। यह प्लास्टिक की सतह पर और कमरे के तामपान में 24 घंटे जीवित रह सकता है। ठंडे माहौल में और अधिक समय तक जीवित रह सकता है। सार्स गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम के कारण होने वाली बीमारी है। जिससे कई गंभीर बीमारी हो जाती है। सार्स वायरस सीधे मनुष्यों को संक्रमित नहीं कर सकता है। मनुष्यों में वायरस एक संक्रमित व्यक्ति के माध्यम से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। सार्स कोरोना वायरस सांस की एक बीमारी है । जिसका कोई विशिष्ट टीका या उपचार उपलब्ध नहीं है। इसे एंटीबायोटिक या एंटीवायल आदि को निर्धारित करने या इंजेक्शन लगाने से वायरस को रोका जा सकता है। जो के बुखार और खांसी में दिए जाते है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा ऐसे मरीजों को अन्य आबादी से अलग क्वारंटीन रखने की सलाह दी जाती है तथा इसके फैलने से बचाव के लिए मास्क लगाने की सलाह दी जाती है। सार्स कोरोना वायरस

मुख्य श्वसन प्रणाली को प्रभावित करता है। सांस रुकने के कारण मौते होती है। मुख्यत यह वायरस 60 वर्ष के आयु को अधिक प्रभावित करता है। सार्स से संक्रमित व्यक्ति में अन्य बीमारियों में फाइब्रोसिस और फेर्मल नेक्रोसिस शामिल है।

2मर्स (मिडिल ईस्ट रिस्पेरिटरी सिड्रोम)- "इस वायरस की पहचान सर्वप्रथम 2012 में की गई थी। यह वायरस सबसे पहले सऊदी अरब में पाया गया, इसके पश्चात 25 अन्य देशों में बहुत तेजी से फैल गया।"[4] मर्स सबसे पहले ऊंटों में पाया गया, इसके बाद मानव शरीर में प्रवेश किया और मनुष्य को संक्रमित करना प्रांरभ किया। इसके सामान्य लक्षणों में बुखार, खांसी और सांस में तकलीफ जो कि प्राय: निमोनिया का रूप धारण कर लेता है। मर्स से संक्रमित 10 मरीजों में से 3-4 मरीज की मृत्यु हो गयी। इसके लक्षण 2 से 14 दिनों तक नजर आते है। वर्तमान में मर्स से पूर्णत बचाव के लिए टीका उपलब्ध नहीं है। इससे बचाव का उपाय सामाजिक दूरी और स्वच्छता है।

2.3) कोविड-19 के लक्षण

अधिकांश लोग अपने जीवन में कभी न कभी कोरोना वायरस के मानवीय स्ट्रेन के संपर्क में आते है। यह बीमारी अल्पकालीन अवधि के लिए अस्तित्व में रहती है, और इसके मुख्य लक्षण है:

- बुखार
- खांसी
- सिरदर्द
- जुकाम
- गले में दर्द

इसके अतिरिक्त कोविड-19 में अन्य लक्षण देखे गए है। मानवीय कोरोनावायरस अधिक गंभीर बीमार का कारण हो सकता है, जैसे- निमोनिया और ब्रोंकाइटिस। यह हृदय रोगियों और फेफड़ों से संबधी बीमारी है या फिर जिनकी रोगप्रतिरोधक क्षमता कम है,बच्चों और बुजुर्गों में यह सामान्य रूप से देखने को मिलता है।

2.4) कोविड के वैरियंट

वायरस हमेशा म्यूटेशन करते रहते है, जिसके कारण नए वैरियंट, या स्ट्रेन की उत्पत्ति होती है। इस महामारी के दौरान पूरे विश्व में कोविड-19 के कई वैरियंट को दर्ज किया गया। कभी -कभी नये वैरियंट उत्पन्न होते है और समाप्त हो जाते है और कुछ नए वैरियंट ऐसे होते है एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को संक्रमित करते है। मई 2021 में कुछ वैज्ञानिकों के समूह ने इन वैरियंट का नामकरण किया, जिसमें उन्होंने ग्रीक वर्णमाला (अल्फा, बीटा, गामा) का उपयोग किया।

अल्फा (B.1.17) - अल्फा सार्वधिक प्रसारित होने वाला पहला वैरियंट था। "अल्फा सबसे पहले ग्रेट ब्रिट्रेन में नवबंर 2020 आया और उसी वर्ष दिसंबर महीने में संक्रमण बढ़ना शुरु हुआ। जल्द ही यह पूरे विश्व में फैल गया और अमेरिका में इसका सर्वाधिक विकराल रूप देखा गया, जहां सेंट्रल फार डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन ने इसे वैरियंट आफ कंसर्न के रूप में चिह्नित किया।"[5] डेल्टा वैरियंट के आने के बाद अल्फा वैरियंट की गति धीमी पड़ गई।

बीटा (B.1.351)- "बीटा वैरियंट की पहचान 2020 के अंत में दक्षिण अफ्रीका में की गई और उसके पश्चात यह अन्य देशों में फैल गया।"[6] इसमें होने वाले कई म्यूटेशन और एंटीबाडी को प्रभावित करने की क्षमता को लेकर विशेषज्ञों ने चिंता जाहिर की। बीटा वैरियंट मूल वायरस की तुलना में ज्यादा तेजी से फैला, लेकिन इसने लोगों को गंभीर रूप से बीमार नहीं किया।

गामा (P.1)- जनवरी 2021, विशेषज्ञों ने ब्राजील से जापान की यात्रा करने वाले लोगों में कोविड-19 के इस वैरियंट को चिह्नित किया। जनवरी के अंत में इस वैरियंट को अमेरिका में भी देखा गया। गामा वैरियंट पूर्व के वैरियंट से अधिक संक्रामक था और यह कोविड-19 से पहले से संक्रमित मरीजों को भी संक्रमित करने की क्षमता रखता था।

डेल्टा (B.1.617.2) - "यह वैरियंट दिंसबर 2020 में भारत में चिह्नित किया गया। अप्रैल 2021 के मध्य में इस वैरियंट ने विकराल रूप धारण कर लिया। यह अत्यधिक तेजी से फैलने वाला वैरियंट यूके, यूएस, आस्ट्रेलिया और पूरे यूरोप समेत 178 देशों में पाया गया।"[7] यह यूएस और यूके का सबसे प्रभावित करने वाल वैरियंट था।

ऐसे लोग जिन्होंने कोरोना वायरस की वैक्सीन नहीं ली है वे डेल्टा वैरिंयट ने गंभीर रूप से बीमार हुए। वैक्सीनिटेड भी इस वैरियंट से संक्रमित हुए लेकिन गंभीर रुप से बीमार नहीं हुए और मृत्यु दर भी कम रही।

म्यू (B.1.621) - विशेषज्ञों ने सबसे पहले जनवरी 2021 में कोलबिंया में इस वैरियंट की खोज की। उसके पश्चात यह दक्षिण अमेरिका और यूरोपीय देशों में म्यू वैरियंट का विस्तार देखा गया। सीडीएस के अनुसार म्यू वैरियंट अमेरिका में जून 2021 के समय अपने चरम पर होगा। सितंबर माह की शुरूआत से ही इस वैरियंट के प्रभाव में गिरावट दर्ज की गई। अगस्त 2021 में विश्व स्वास्वथ्य संगठन ने इसे "वैरियटं आफ इंटरेस्ट" की संज्ञा दी। लेकिन इसे "वैरियंट आफ कंसर्न" जैसे अल्फा, बीटा, गामा और डेल्टा से कम क्षति पहुंचाने वाला पाया गया।

आर.1 – वैज्ञानिकों ने सबसे पहले जापान समेत कई देशों में इसकी पहचान की। "मार्च 2021 में केंटकी नर्सिंग होम में इस वैरियंट का विस्फोट हुआ, जब एक बिना टीका लगावाए स्वास्वथ्य कर्मी ने 45 अन्य स्वास्वथ्य कर्मियों और वहां रहने वाले लोगों को संक्रमित कर दिया। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अप्रैल 2021 में इसे "वैरियंट अंडर मानिटरिंग" का नाम दिया।"[8] जिसका अर्थ यह है कि इसके कुछ लक्षण भविष्य में मनुष्यों के लिए हानिकारक हो सकते है। अक्तूबर 2021 में सीडीसी ने इसे वैरियंट आफ कंसर्न या इंटरेस्ट का दर्जा नहीं दिया।

ओमिक्रॉन (B.1.1.529) – "24 नवबंर 2021 को ओमिक्रान वायरस की दस्तक सबसे पहले दक्षिण अफ्रीका में हुई। 24 नवबंर को गौतेंग(दक्षिण अफ्रीका) के 30 क्लीनिकों में 100 अन्य नमूनों की जीनोटाइपिंग एकत्रित की गई, जिससे यह जांच की सके कि वायरस अपना रुप बदल रहा है कि नहीं। उसी दिन साउथ अफ्रीका में एक नये रुप का पता चला। जिसे ओमिक्रॉन का नाम दिया गया। जो कि अब तक आए सभी कोरोना वैरियंट से ज्यादा संक्रामक और नया रूप धारण करने वाला है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार नए ओमिक्रान वायरस की गंभीरता भले ही कम हो, लेकिन केसों में तेजी आने से स्वास्थ्य ढांचा पूरा तरह चरमरा सकता है।"[9] ओमिक्रॉन वायरस अन्य वैरियंट से इस प्रकार भी अलग है, कि इसके पाजिटिव व्यक्ति में कोई असामान्य लक्षण नहीं होते है। पाजिटिव व्यक्ति में मांसपेशियों में दर्द, रात में पसीना आना, सूखी खांसी जैसे सामान्य लक्षण ही पाए है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ओमिक्रॉन

वायरस को वेरिएंट ऑफ कंसर्न नाम दिया, ऐसा वेरियंट जो पहले के आए वेरियंट से ज्यादा अधिक संक्रामक, घातक और टीकों के खिलाफ अधिक प्रतिरोधी है।

2.5) पोस्ट कोविड (लांग कोविड)

"विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे परभाषित किया है। इसके अनुसार लांग कोविड संभावित या पुष्टि व्यक्तियों में होता है। इनको क्लीनिकली डायग्योनोसिस से नहीं समझाया जा सकता है। कोविड-19 से ठीक होने के बाद लोगोमें न्यूरोलॉजिकल, थकान, सांस में तकलीफ, खांसी सिरदर्द जैसे समस्याएं दिख रही है। इसमें से ज्यादातर लक्षण कोविड-19 से संक्रमण के दौरान देखे गए थे, जो कि उपचार होने के बाद भी महीनों तक बने रहे। जिसे लांग कोविड या पोस्ट एसक्यूट सीक्वेल ऑफ सार्स-सीओवी-2(पीएएसी) नाम दिया गया।"[10] पोस्ट कोविड न केवल वास्तविक हैऔर यह अत्यधिक घातक भी है। जिसके प्रभाव को अभी तक दस्तावेज नहीं किया गया है। "जर्नल ऑफ क्लिनक एपिडेमियोलॉजी में प्रकाशित शोध पत्र में यह उल्लेखित किया गया है कि पोस्ट कोविड की तुलना में कोविड-19 से हुई मृत्यु कूल मौतों का एक छोटा हिस्सा है। नेशनल टास्क फोर्स ने इसकी प्रमुख जटिलताओं को चिन्हित किया है। इसके अनुसार 80 फीसदी रोगियों में दिल की धकडन तेज हो रही है, जबकि युवाओं में ईसीजी की गई तो उसमें गडबडियां मिली और पोस्ट कोविड के इन रोगियों में कार्डियक अरेस्ट के कारण मौत भी हो रही।"[11] भारत पोस्ट कोविड मरीजों की संख्या को ट्रैक नहीं करता है। पोस्ट कोविड का अभी पूरी तरह ट्रैंकिग नहीं हुई है, जिससे कारण यह पूरी तरह नहीं कह जा सकता, कि लांग कोविड प्रभावित व्यक्तियों की संख्या कितनी है, लेकिन तमाम वैज्ञानिक और डाक्टर कोविड की अपेक्षा लांग कोविड को ज्यादातर खतरनाक मान रहे है क्योंकि इससे अत्यधिक मौंते हो रही है या अन्य बीमारियों का कारण भी बन रहा है।

2.6) भारत में कोविड-19 और लाकडउन

भारत में सबसे पहले उन लोगों में संक्रमण पाया गया, जो कि विदेश से यात्रा करके आए थे। इसे पहले स्टेज कहा गया, दूसरे स्टेज में उन्हे सम्मिलित किया गया जो विदेश की यात्रा करके आए लोगों के संपर्क में आए। तीसरे चरण को सामुदायिक संक्रमण कहा गया। इस स्टेज में बडे स्तर पर कोरोना के

संक्रमण का प्रसार हुआ। चौथे स्टेज महामारी का अंतिम स्टेज है, जब वायरस पूरी तरह से वृहद समाज में फैल गया है।

भारत में लाकडाउन कोविड-19 जैसे खतरनाक महामारी का संक्रमण रोकने के लिए यह आवश्यक था कि लॉकडाउन किया जाए, ताकि लोग एक दूसरे के संपर्क में न आए और जिससे संक्रमण को रोका जा सके। अत:22 मार्च को 2020 को केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार ने जनता कर्फ्यू के दो दिन बाद देश में संपूर्ण लाकडाउन की घोषणा की। देश में लाकडाउन के मुख्यत चार चरण थे। "लाकडाउन 1.0 - 24 मार्च2020 से 14 अप्रैल 2020 तक, लाकडाउन2.0- 15 अप्रैल से 3 मई तक, लॉकडाउन3.0 – 4 मई से 17 मई 2020 तक, लॉकडाउन4.0 -18 मई 2020 से 31 मई 2020 तक।"[12] लाकडाउन के तहत समस्त सिनेमाघर, ट्रेन, मेट्रों सभी धार्मिक स्थल को पूरी तरह बंद किया गया। स्कूल, कालेज, सैलून, जिम, रेस्टोरेंट को बंद किया गया। लाकडाउन के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए भारत सरकार ने देश को कुल तीन जोनों में बांटा। 1.रेड जोन 2. ऑरेंज जोन 3. ग्रीन जोन

1.रेड जोन - ऐसे क्षेत्र जिनमें कोविड का संक्रमण अत्यधिक था। इन क्षेत्रों में संक्रमण की दर अत्यधिक उच्च थी और बडी संख्या में कोविड के केस आ रहे थे, जिस कारण इन क्षेत्रों में केवल आवश्यक सेवाओं की अनुमित दी गई और बाकी सभी आने -जाने की प्रक्रिया पर सख्त प्रतिबिंध लागू किए गए।

2.ऑरेज जोन - ये ऐसे क्षेत्र थे, जहां 14 दिनों के भीतर कोविड का कोई नया केस सामने न आया हो। इन क्षेत्रों में सीमित व्यापार की गतिविधि और खेत की उपज काटने की अनुमित दी गई।

3.ग्रीन जोन - ग्रीन जोन वो क्षेत्र थे, जिनमें पिछले 21 दिनों के भीतर कोविड का कोई मामला दर्ज न किया गया हो। गृह मंत्रालयके अनुसार ग्रीन जोन में स्थित दफ्तरों को सीमित स्टाफ संख्या और सोशल डिस्टेसिंग के साथ खोलने की अनुमित दी गई। इसके अलावा आवश्यक सेवाओं और लघु स्तर के उघोगों को भी खोलने की अनुमित दी गई।

2.7) कोरोना महामारी और भारत सरकार के संवैधानिक अधिकार

कोरोना जैसा वैश्विक महामारी से देशवासियों को बचाने के लिए भारत सरकार व राज्य सरकरों को ऐसे कानूनों की जरूरत थी, जिससे उन्हें सुरक्षात्मक संवैधिनिक शक्तियों प्राप्त हो और वे इस असाधारण समय में इन विशेष अधिकारों का प्रयोग कर देस की जनता को ज्यादा से सामाजिक -

आर्थिक सुरक्षा प्रदान कर सके। कोरोनो महामारी से उबरने के लिए सरकार निम्न कानून का प्रयोग कर रही है।

1. महामारी रोग अधिनियम, 1897
2. राष्ट्रीय आपदा प्रंबधन अधिनियम, 2005
3. आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1995
4. भारतीय टेलीग्राफ अधिनियम, 1885

2.7.1) महामारी रोग अधिनियम (Epidemic Diseases act,1897)

"भारतीय गर्वनर जनरल की परिषद के सदस्य जे वुडबर्न ने 23 जनवरी 1897 को ब्लैक डेथ (प्लेग) के दौरान इस कानून को प्रस्तुत किया था। 123 साल पुराना यह कानून महामारी से निपटने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों को विशेषाधिकार प्राप्त कराता है।"[13] इस कानून के तहत राज्य सरकारें अपनी राज्य की सीमा में प्रवेश के लिए नियम बना सकती है। कोविड -19 महामारी के समय भी इस अधिनियम का प्रयोग किया गया, जिसके तहत संक्रमित व्यक्ति को सरकार राज्य के बाहर कोविंड सेंटर में भेज सकती है। इस नियम की धारा 3 के अनुसार कानून का उल्लंघन करने वालों को भारतीय दंड संहिता आईपीसी की धारा 188 के समान होगी, जिसके तहत कानून का उल्लंघन करने पर 1 महीने से लेकर 6 महीने कैद का प्रावधान है। 22 अप्रैल 2020 को तत्कालीन केंद्र सरकार ने सुरक्षा कर्मियों,स्वास्थ्य सेवा कर्मियों के लिए इस कानून में संशोधन का अध्यादेश पारित किया,जिसे राष्ट्रपति ने मंजूरी दे दी है। संधोधित कानून में स्वास्थ कर्मियों पर हमले को गैर जमानती बनाता है। हिंसा के ऐसे कृत्यों को करने या उकसाने पर 6 महीने से लेकर 5 साल तक की जेल हो सकती है और जुर्माने के रूप में 50 हजार से लेकर 2 लाख रूपये तक के दंड का प्रावधान है।

2.7.2) राष्ट्रीय आपदा अधिनियम (Disaster management act, 2005)

इस कानून के तहत केंद्र सरकार से लेकर राज्य और जिला से लेकर स्थानीय स्तर तक प्रंबध योजना को तैयार करने और लागू करने विस्तृत योजना प्रदान करता है। "इस कानून के अंतर्गत धारा 51 से लेकर 60 तक में लाकडाउन का उल्लंघन करने वालों पर कारवाई करने का प्रावधान है।"[14]

धारा -51 (बाधा पहंचाने के लिए सजा) – इस धारा के तहत गृह मंत्रालय के द्वारा जारी आदेशों के तहत यह कानून केंद्र सरकार और राज्य सरकार को अधिकारियों और कर्मचारियों के काम में बाधा डालने वाले व्यक्ति को एक साल की जेल से लेकर दंड तक का प्रावधान है।

धारा -52 (झूठे दावे के लिए) – इस धारा के तहत अगर कोई व्यक्ति किसी भी तरह का लाभ प्राप्त करने का झूठ दावा करता है,तो उसे अधिकतम दो साल की जले या जुर्माना हो सकता है।

धारा -53 (धन या सामग्री का गबन)- यदि कोई आपदा या महामारी के समय धन या किसी वस्तु और सामग्री का गबन करता है, तो उसे अधिकतम 2 साल की जेल हो सकती है।

धारा -54 (झूठी चेतावनी देना) – इस धारा के तहत अगर कोई व्यक्ति आपदा (महामारी) के समय किसी तरह की झूठी खबर फैलता है। तो उसे 1 साल की जेल और जुर्माना दोनों हो सकता है।

धारा -55 (सरकारी विभाग द्वारा अपराध) – इसे धारा के तहत अगर किसी सरकारी विभाग में अपराध होता है,तो उस विभाग के प्रमुख को दोषी मान जाएगा। लेकिन यदि वह अपने बचाव यह साबित कर देता है कि अपराध उसकी बगैर जानकारी के हुआ, तो इस स्थिति में वह बच सकता है।

धारा -56 (ड्यटी निभाने में विफल या कानून के उल्लंघन पर मिलीभगत में) – इस धारा के तहत अगर कोई अधिकारी अपनी ड्यटी को सही ढंग से नहीं करता है, तो उसे 1 साल की सजा या जुर्माना दोनों हो सकते है।

धारा-57 (आवश्यकता संबधी निर्देशों का उल्लंघन करने पर) - इस धारा का उल्लघंन करने पर 1 साल की जेल एवं जुर्माना दोनों हो सकते है।

धारा-58 (कंपनी द्वारा अपराध) – इस धारा के तहत अगर किसी कंपनी द्वारा अपराध किया जाता है, कंपनी के वो सदस्य जिसने अपराध किया है, जिसके पास कंपनी के उस कार्यों की जिम्मेदारी है, उन्हें दोषी माना जाएगा। उन पर केस चलाया जाएगा।

धारा 59- (अभियोजना को मंजूरी)- इस धारा के तहत अपराध के लिए प्राधिकृत अधिकारी की पूर्व मंजूरी के नहीं लगाया जाएगा।

धारा 60- (अपराधों पर संज्ञान) - इस धारा के तहत कोई भी न्यायालय इस कानून के तहत की गई शिकायत के अलावा किसी अपराध का संज्ञान नहीं लेगा।

2.7.3) आवश्यक वस्तु अधिनियम (Essential commodities act, 1955)

यह कानून 1955 में ऐसे समय में लाया गया था जब भारत भंयकर रूप से खाद्य सामग्री की किल्लत से जूझ रहा था। इस कानून का मुख्य उद्देश्य वस्तुओं की जमाखोरी और कालाबाजारी रोकना था ताकि उचित दाम पर खाद्य सामग्री उपलब्ध करायी जा सके। इस कानून के तहत केंद्र सरकार आवश्यक या विशिष्ट वस्तु की सूची बनाती है, जिसमें किसी वस्तु को हटाने और जोडने का अधिकार केंद्र सरकार के पास होता है। "कोरोना महामारी के समय में केंद्र सरकार ने आवश्यक वस्तु का प्रचलन जारी रखा। जिनमें सरकार ने कुछ चीजों जैसे मास्क, सैनिटाइजर, जैसे वस्तुओं को आवश्यक वस्तु कानून के दायरे में रखा। इस कानून में जून 2020 में संशोधन किया गया, जिसके तहत दाल, तेल, प्याज, आलू, अनाज को आवश्यक वस्तु अधिनियम से बाहर रखने का प्रावधान है।"[15] इस कानून के तहत सरकार किसी वस्तु को आवश्यक वस्तु घोषित करने पर उस वस्तु की उत्पादन, आपूर्ति, वितरण पर नियंत्रण कर सकती है। इसके साथ ही सरकार उस वस्तु के संबध में एक स्टाक सीमा भी जारी कर सकती है।

2.7.4) भारतीय टेलीग्राफ अधिनियम (Indian Telegraph Act, 1885)

यह कानून अक्टूबर 1885 में लागू किया गया, जिसके तहत केंद्र सरकार या राज्य सरकार को आपतकाल या लोक सुरक्षा के हित में फोन को टैप एवं प्रतिबंधित करने का अधिकार है। देश में कोविड महामारी के मामले को ट्रैक करने के लिए भारतीय टेलीग्राफ अकानून के अनुसार सार्वजनिक सुरक्षा के हित में उपयोगकर्ता के डेटा (फोन) की अनुमति देता है। "गृह मंत्रालय द्वारा की अनुमति लेकर राज्य सरकार को फोन के डेटा की जानकारी प्राप्त करने का अधिकार है। इसे कानून के नियम 419 एवं 419 ए में फोन के संदेशों की निगरानी और पांबदी की प्रकिया का उल्लेख किया गया है।"[16]

2.8) कोविड-19 से संबधित ऐप्स

भारत सरकार ने कोरोना महामारी पर नियंत्रण और जनता को जागरुक रखने के लिए विभिन्न प्रकार के ऐप्स निकाले, जिससे कोरोना से संबधित भ्रम को दूर किया जा सके और सही आंकडे जनता के सामने आ सके, जिसमें कुछ मुख्य एप्स निम्न है।

1. आरोग्य सेतु एप्स - "आरोग्य सेतु एप्स भारत सरकार द्वारा निर्मित एप्लीकेशन है जो की कोरोना वायरस से संबधित मामलों की ट्रैंकिग करता है। यह एप्स राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र द्वारा विकसित

किया गया है, जो कि सूचना एवं प्रौघौगिकी मंत्रालय के तहत आता है।"[17] यह एप्स कोविड से संबधित जानकारी देता है, कोविड संबधी मामलों की अपडेट देता है और यह सुनिश्चित करता है कोविड का संक्रमण कितना है। आरोग्य सेतु एप्स भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में उपलब्ध है।

2. कोविड इंडिया सेवा पोर्टल – यह एप्प केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा 21 अप्रैल को 2020 को विकसित किया गया था। इस एप्स के तहत कोविड महामारी से संबधित समस्या से संबधित जानकारी को तेजी से उपलब्ध कराना एवं नागरिकों के सवालों के जवाब तेजी से देना।

3. कोविड-19 क्वारंटाइन अलर्ट सिस्टम ऐप - यह ऐप दूरसंचार विभाग और सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ टैलोमैट्रिक्स द्वारा विकसित किया गया है, जिसके हर किसी संक्रमित व्यक्ति के क्वारंटाइन से भगाने की स्थिति में अधिकृत सरकारी एंजेसी को ई-मेल या मैसेज एलर्ट भेजता है। इस ऐप के तहत दूरसंचार कंपनी अपने यूजर का डेटा के लिए एक मानक साइन किया है। जिसके तहत एक सामान्य सुरक्षित प्लेटफार्म पर डिवाइस के स्थान सहित फोन का डेटा एकत्र करता है और स्थानीय ऐजेसियों को कोविड-19 संक्रमित व्यक्तियों के क्वारंटाइन मामले में उल्लंघन का एलर्ट देता है।

4. एसेस कोरोना एप – यह एप्प कोरोना वायरस महामारी के क्षेत्रों में अधिकारियों को रियलटाइम आकंडों के सर्वेक्षण में सहायक है।

5. कोविड -19 राष्ट्रीय दूरभाष परामर्श केंद्र- "यह ऐप केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा विकसित किया गया है। इस एप्प का उद्देश्य जनता को कोविड -19 और अन्य बीमारियों से संबधित जानकारी उपलब्ध कराता है। जिसके तहत जनता किसी भी समय चिकित्सा विशेषज्ञ से बीमारी संबधित सवाल-जवाब एवं उससे जुड़ी अन्य जानकारी प्राप्त कर सकती है।"[18] इस एप्प के तहत विभिन्न देश के चिकित्सा विशेषज्ञ एक प्लेटफार्म पर जोड़े गए है, ताकि वे चर्चा के दौरान जनता को सर्वोत्म उपचार की जानकारी दे सके।

6. स्ट्रेंडेट इन इंडिया पोर्टल - यह एप को पर्यटन मंत्रालय द्वारा मार्च 2020 में विकसित किया था। जिसके तहत के भारत में लाकडाउन के समय विदेशी पर्यटक की सहायता की जा सके। इस पोर्टल से विदेशी पर्यटक विभिन्न प्रकार की जानकारियां दी जाती थी।

7.संयम एप- यह एक मोबाइल एप्लीकेशन है, जिसमें जीपीएस ट्रैंकिग है। जिसके तहत क्वारंटाइन किए गए लोगों के घर से बाहर निकलने पर स्थानीय प्रशासन को तुंरत अलर्ट आ जाता है। यह एप पुणे नगर निगम द्वारा विकसित किया था।

2.9) कोविड महामारी लहर की व्यापकता और प्रभाव

सभी देशों ने कोविड -19 के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए कार्ययोजनाएं लागू की। भारत में बिना किसी पूर्व सूचना के 22 मार्च को जनता कफ्यू का ऐलान प्रधानमंत्री की ओर से किया गया, जिसके बाद 25 मार्च को पूरे देश में लाकडाउन लग दिया गया। लाकडाउन लगने के बाद कोविड संक्रमितों की संख्या में एक तरह से बाढ़ आ गई, अचानक लाकडाउन लगने से करोड़ों मजदूरों दिल्ली से अपनें घरों के लिए लौटने लगे, व्यवस्था का कोई सिरा कही पर मदद नहीं किया, जिससे कारण कोविड संक्रमित की संख्या बढ़ती चली गई। “वल्डो मीटर्स के अनुसार प्रथम लहर के दौरान 5 अक्टूबर, 2020 को भारत में कोविड-19 की स्थिति निम्नवत थी, जिसमें कुल मामलों में संक्रमण की संख्या - 66,23,815 संक्रमण से ठीक हुए लोगों की संख्या - 55,86,703, कोरोना संक्रमण से मौतों की संख्या- 1,02,714 थी। जो कि कुल संक्रमितों का 1.5 फीसदी है। 12 अक्टूबर2020 को भारत में कुल मामलों की संख्या बढकर लगभग 72 लाख हो गई, मरने वाले की संख्या 1 लाख से ऊपर चली गई। इसका अर्थ यह है, प्रथम लहर में लगभग 816 मौतें रोज हो रही है।”[19] जिसमें सर्वाधिक कोरोना संक्रमितों की मौत वाले प्रदेश में महाराष्ट्र, तमिलनाडु, यूपी, बंगाल है। जिन राज्यों में सख्ती से लाकडाउन लागू किया गया वहां संक्रमण और मौतों की दर काफी कम रही, जिसमें केरल सबसे प्रमुख रहा। प्रथम लहर का समूचे भारत में विस्तार होने पर संक्रमण और मौतों की दर 500-700 के अंदर थी, लेकिन दूसरी लहर मौतों की दरों इतनी तेजी से बढ़ी कि भारत की संपूर्ण स्वास्थ्य एवं सरकार के परख्चचे उड़ गए। “टाइम्स आफ इंडिया के मुताबिक 7 मई 2021 को भारत में कुल संक्रमण के संख्या 2.23 करोड़ थी, जिसमें 2.42 संक्रमितों की मृत्यु हो गई, वहीं 10 जून को संक्रमितों की संख्या 2.92 करोड़ थी। जिसके कारण 3.63 लाख की मृत्यु हो गई। वास्तविक तौर पर मौतों की संख्या का आंकड़ा और इसकी संख्या और अधिक हो सकती है।’’[20] खासकर दूसरी लहर में सरकार दवारा की गई लापरवाही में कोरोना संक्रमण बढ़ने के लिए जिम्मेदार है,

बीच संक्रमण में उत्तर प्रदेश के ग्राम पंचायत चुनाव के कारण सैकड़ों शिक्षक संक्रमित हो गए। करीब 1100 शिक्षकों की कोरोना संक्रमण से मृत्यु हो गई। इसी दौरान हरिद्धार में कुंभ मेले का आयोजन संक्रमण के लिए विस्तार के मौके लेकर आय़ा। इसके इतर भारत समाज में मास्क, सैनिटाईजर न इस्तेमाल के कारण महामारी का प्रसार अत्यधिक तेजी से हुआ। दूसरी लहर स्वास्थ्य व्यवस्था की कमियों खुलकर सामने आ गई। जिसमें वेटीलेंटर, आक्सीजन, बेड, दवाएं शामिल है। यह तथ्य भी उजागर हुआ कि स्वास्थ्य व्यवस्था का बढ़ा हिस्सा निजी हाथों में है, जहां अत्यधिक रुपये का खर्च था, जिस कारण सामान्य लोगों वहां नहीं जा सके, जिससे मौतों का सिलसिला लगतार बढ़ता ही चला गया। कोरोना की दूसरी लहर सरकार और स्वास्थ्य विभाग के लिए चेतावनी है, कि महामारी चुनाव की तरह नहीं आती, लोगों को भी ये समझना होगा कि ये अवसर नही है, अगर आपदा को रोकना है, तो स्वासथ्य व्यवस्था का ढांचा सरकारी निर्मित करना होगा, जो सार्वजनिक तौर पर सबके लिए उपलब्ध हो, वरना आपदा तो आती रहेगी, सरकारें जनता को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करती रहेगी।

निष्कर्ष

कोरोना वायरस एक आरनए वायरस है। आरनए वायरस होने कारण यह बहुत आसानी और जल्दी अपना रूप बदलता है। अतः ऐसे विषाणुओं के लिए जो इतनी तेजी से उत्परिवर्तन करते है, इनका कोई दवा या टीका सौ फीसदी कारगार नहीं हो सकती है। भारत में देशव्यापी लाकडाउन और उस पर सरकरों ने तमाम कानूनों के जरिए यह दिखाने की कोशिश की संकट बहुत बडा है, इसे सबके साझे सहयोग से निपटा जा सकता है। इसके अलावा केंद्र सरकार मास्क और पीपीई किट को आवश्यक वस्तु अधिनियम के अंतर्गत ले आई, लेकिन कोरोना महामारी फिर भी संपूर्ण भारतीय समाज पर एक व्यापक प्रभाव डालकर गई है। जिसका एक स्वरूप लांग कोविड जिसका असर भारतीय समाज में लंबे समय तक दिखने को मिलेगा। अगले अध्याय में कोरोना महामारी के पत्रकारों पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया है।

1 रस्तोगी, के.सिंह.एस. (2020).वायरस/कोरोनावायरस, प्रभात एग्जाम

2 Ibid. पृष्ठ-9

3 शर्मा, एस. (2021). सर्वव्यापी महामारी कोविड-19: राज्य बनाम समाज. जनपथ

4 NFID, (n.d.). Coroanvirus http: //www.nfid.org

5 WEBMD. (n.d.) variants of coronaviruses.http://www.webmd.com.

6 Virginia Department of health.(2/622).variants of covid-19.http://www.vdh.virginia.gov.

7 पांडे, के.(जनवरी.2022). महामारी के इतिहास में दर्ज .डाउन टू अर्थ .पृष्ठ सं-18-19

8Katella,k (December,20,2021).omicron,Delta,alpha,and more:whtat ot know about the coronavirus variants.http://ww.yalemedicine.org/news/covid-19varianrs-of concern-omicron

9 पांडे, के. देओल.टी. (जनवरी,2022). नया खतरा.डाउन टू अर्थ

10 आचार्जी, एस. (जून,3,2021). लांग कोविड का लंबा साया.इंडिया टुडे.पृष्ठ सं-24-28

11 कौर, आर . (2022).अंतहीन मर्ज .डाउन टू अर्थ. पृष्ठ सं-23-29

12 रस्तोगी, के.सिंह,एस. (2020). कोविड-19 और लॉकडाउन/अनलॉक डाउन.प्रभात एग्जाम.पृष्ठ सं-25-26

13 इंडियन एक्सप्रेस (मई, 7,2020). महामारी रोग अधिनियम.http://www.indianexpress.com

14 रस्तोगी, के.सिंह,एस. (2020).राष्ट्रीय आपदा अधिनियम (2005). प्रभात एग्जाम.पृष्ठ-21-22

15 द हिंदू (सितंबर,23,2020). आवश्यक वस्तु संशोधन अधिनियम, 2020.http://the hindu.com.

16 अमर, उजाला. (नवबंर,19,2013). भारतीय टेलीग्राफ अधिनियम. http://www.amarujala.com/news archives/other-archives/the -indian-telegraph-act-1885

17 रस्तोगी, के.सिहं.ए.(2020) .कोविड-19 से संबधित ऐप्स एंव पोर्टल स्थिगत आजोजन.प्रभात पेपरबैक्स-पृष्ठ सं-70

18 Ibid-page -66

19 शर्मा, एस.(2021).सर्वव्यापी महमारी कोविड-19 राज्य बनाम समाज.जनपथ .पृष्ठ सं-13-14

20 Ibid page no-17-20

अध्याय-तृतीय

कोविड-19 एंव प्रिंट मीडिया पत्रकार

दुनिया भर में इंसानी सभ्यता के सामने कोविड -19 महामारी एक बडे संकट के रूप में सामने आई है। वर्तमान पीढी के सामने सबसे बडा संकट है। पत्रकार भी इस संकट से अछूते नहीं रहे है, बल्कि हुआ यह है कि पहले से चली आ रही असामनता, भ्रष्टाचार और विषमता और अन्याय भी उजागर हो रहे है। दुनिया में युद्धों की तरह हर बडी महामारी ने इतिहास का स्वरूप बहुत कुछ बदल दिया है। हर महामारी कई अच्छे बुरे-निशान छोड कर जाती है, इतिहास बातता है कि महामारी के बाद दुनिया वैसी नहीं रह जाती है, जैसी महामारी के पहले होती है। कोरोना महामारी भी उन्ही महामारियों से एक है, जिस कारण यह दुनिया के स्वरुप को बदलकर ही जायेगी। लोकतंत्र का चौथे खंभा कहे जाने पत्रकार और मीडिया संस्थानों पर इस महामारी का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। कोरोना महामारी ने पत्रकारों के सामने नई चुनौतियों खडी की है, जिसमें तथ्यपरक सूचना संग्रहण, खुद को महामारी से बचाना,नई तकनीकी से खुद को लैस करना, मास्क को लगाना और जीवन की सुरक्षा शामिल है। “ पत्रकारी बिरादारी की संकट यह है, जो पत्रकार फील्ड पर रहकर सूचनाए देते थे,कोरोना महामारी से उनका काम लगभग खत्म हो गया, घुंमतू पत्रकार को कोरोना महामारी ने एक तरीके खत्म ही कर दिया है। एक ओर घुंमतू पत्रकार के खत्म होने का संकट है, तो दूसरी ओर तमाम मीडिया संस्थान पत्रकारों की छंटनी कर रहे है, क्योंकि लैपटाप और दफ्तर से काम होने के कारण अब बहुत कम पत्रकारों की आवश्यकता रह जाती है।”[1] अब जब संकट इतना भयावह है तो जो पत्रकार मीडिया संस्थान में काम कर रहे है, उनके लिए कोरोना के रिपोर्टिंग करना बेहद जोखिम भरा कार्य है, जिसमें जान जाने का खतरा है। कोविड महमारी के समय संक्रमित होने पर घर से लगातार वर्क फार्म करना मानसिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में सामने आया है। कोविड महामारी के समय पत्रकार लगातार कोरोना का भी शिकार हो रहे है। खतरा केवल वायरस का नहीं है, पुलिस,सरकार उनकी स्वतंत्रता पर पहरा लगा रहे है,तो मीडिया संस्थान उनकी नौकरी पर एक प्रश्नवाचक चिन्ह लगाए हुए है, चूंकि पत्रकारों पर हमले पहले भी होते थे,लेकिन कोरोना महामारी ने एक बड़ी तस्वीर दिखा दी है।जिससे पत्रकार के जीवन और नौकरी बचाना मुश्किल हो गया है।तमान चुनौतियां से घिरा पत्रकार लगातार खबरे लिए अपने जान को जोखिम में डाल रहा है। पत्रकार के लिए

पत्रकारिता करना ताकत और पावर का मामला होती तो, तो तमाम जिलों से सैकडों अखबार नहीं निकल रहे होते। लगातर कवरेज कर रहे तमाम पत्रकार कोरोना महामारी का शिकार हुए है, मुश्किल उनके लिए ये है उनकी खबर लेने वाला कोई नहीं है। सूचना के फटाफट के दौर में कोरोना महामारी प्रिंट पत्रकारों के लिए नई चुनौतियां के रूप में आया है, जिसमें मुख्य चुनौतियां और संकट निम्न है:

3.1) कोविड- 19 महामारी और रिपोर्टिंग की चुनौती

"कोविड महामारी अचानक और बहुत तेजी से आई, जिससे मीडिया संस्थान में अचानक चुनौतियों का अंबार लग गया, सामजिक दूरी, मास्क, सैनिटाइजर, नये उपकरण का प्रयोग, नये फार्मट का प्रयोग मीडिया संस्थान के लिए न्यू नार्मल जैसा है। महामारी के समय जनता को सूचना देना और अपडेट करना बेहद मुश्किल भरा कार्य है, एक ओर जहां विश्वसनीय आंकडें और डाटा अपने सोर्स से प्राप्त करना बेहद मुश्किल हुआ है। सरकार की ओर जारी लाकडाउन ने इसे और मुश्किल किया है। बड़े मीडिया संस्थान को तो रिपोर्टिंग करने के लिए एक्सेस दिया जा रहा है, छोटे मीडिया संस्थानों के लिए खबरों की रिपोर्टिंग और सूचना को कवर करना बेहद मुश्किल हो गया है।"[2] तमाम मीडिया संस्थान कवरेज के दौरान अपने रिसोर्स की कमी से जूझ रहे है। कोरोना वायरस की समस्या के कारण मीडियासंस्थानों के लिए न्यूजरूप में जगह का वितरण बेहद मुश्किल भरा कार्य है। सभी पत्रकारों को डिजिटलउपकरण देना और रिपोर्टिंग के लिए जरुरी मेडिकल संबधी है। रिपोर्टिंग पर गया रिपोर्टर को इंटरनेट कनेक्शन और सामाजिक दूरी के साथ रिपोर्टिंग करना बेहद मुश्किल भरा कार्य है,विषमता भरे देश में जहां लोग लाकडाउन के दौरान सडकों से हजारों किलोमीटर पैदल जा रहे है, वहां अगर पत्रकार उनसे मास्क पीपीईकिट लगाकर बात करेंगें तो बेहद अजनबी सा लगेगा, लेकिन उन्हें खबर तो लानी है और मीडिया संस्थान में उसे रिपोर्ट भी करना है। ऐसे माहौल में कोरोना का संक्रमण का खतरा बेहद आम है। अब जब तमाम मीडिया संस्थान का ने अपना स्वरूप बदला है, प्रिंट मीडिया संस्थान कोरोना महमारी के दौरान डिजिटल की ओर शिफ्ट हुए है, पत्रकारों के लिए विशेषकर लाकडाउन के समय और कोरोना संक्रमित इलाकों से विज्अल लाना और रिपोर्टिग करना अपने आप एक चुनौती के समान है।

3.2) कोरोना संक्रमण और मृत्यु का खतरा

पत्रकारिता का कार्य का स्वरुप अन्य कार्यों से बेहद अलग है, ये एक मिशनकारी कार्य है। जिसमें जीवन जाने का खतरा हमेशा बना रहता है, जैसे ही सत्ता, उघोगपतियों के खिलाफ रिपोर्टिंग या खबर अखबारों में झापी जाती है। कोरोना महामारी ने इस संकट को और गहरा कर दिया है। यूं तो लगभग सभी जगह पत्रकारों को कोविड हुआ, लेकिन भाषायी पत्रकारों कोरोना संक्रमण और जान जाने का खतरा सर्वाधिक ज्यादा हुआ, क्योंकि बिना किसी मेडिकल फैसिलटी के ये पत्रकार खबरों को हकीकत का रुप दे रहे थे। "न्यूजलाउंड्री के मुताबिक करीब 450 से ज्यादा पत्रकार अपनी जान खो चुके है, जब हकीकत ये है कोविड महामारी ने स्थानीय या क्षेत्रीय पत्रकारों की मौत को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया है, जिनका कोई आंकडा नहीं है, न उनके परिवार को आर्थिक सुविधाए मिली है। एक ओर मौत और संक्रमण के बीच पत्रकार केवल इसीलिए इस पेशे में है, क्योंकि खबर देना उसका नैतिक कार्य है, अपनी जान को जोखिम में डालकर भी। हालांकि पत्रकार की मौत से ज्यादा बड़ा है यह सवाल की मौत से पहले अस्पताल, बिस्तर, प्लाज्मा, दवा के लिए जो संघर्ष शुरू होता है और मौत के बाद परिवार का खर्च चलाने तक जाता है। जबकि उन्हें देखने सात्वंना देने कोई नहीं पहुंचता है।"[3] पत्रकारिता पेशे में ज्यादातर स्थानीय पत्रकार बिना बीमा और पेंशन के काम करते है। केवल इस आशा में कि वो समाज के लिए सच का, विश्वसनीयता का तथ्यपरक सूचना पहुंचाने का एक रुप है। पत्रकारिता केवल पावर का मामला भर नहीं है। तमाम छोटे शहरों के पत्रकार अपनी जान की बाजी लगाकर पत्रकारिता कर रहे है, या यूं कहे असली पत्रकारिता तो छोटे शहरों में ही हो रही है। एक ओर जहां दिल्ली का पत्रकार जब मरता है, तो प्रधानमंत्री तक ट्वीट कर रहा है। लेकिन स्थानीय पत्रकारों की मौत पर उनका अखबार भी उनकी रपट सही से नहीं लिख रहा है। ऐसे वीभत्स माहौल में एक लौ के रुप में जल रहा पत्रकार खबरों की रोशनी दिखाते -दिखाते खुद पिघल रहा है। जब कि सबसे बडी चुनौती पत्रकार के जीवन बचाने की है, अगर वो बचा रहेगा तो अखबार भी बचा रहेगा, पत्रकारिता भी बची रहेगी। "पत्रकारों के जीवन बचाने को लेकर एक मुहिम उड़ीसा सरकार ने की है, जिसके तहत पत्रकारों की मौत पर 1 लाख का प्रावधान किया गया है। तेलगांना में पत्रकारों के लिए लाख रुपये के अनुदान की घोषणा की गई है। वहीं उत्तर प्रदेश में प्रेस क्लब के अध्यक्ष के अनुसार पत्रकारों की मौत पर उनके परिवारों को 5 लाख रूपये की धनराशि दी गई है। वहीं कमेटी टू प्रोटेक्ट जर्नलिस्ट ने एक मुख्य प्रावधान किया है, लेकिन इसके बावजूद भी इस वैश्विक महामारी के मौके पर भारत में पत्रकारों की जान बचाने के लिए कोई व्यवस्थित तंत्र नहीं है, न ही संस्थान

मदद करते है, न ही प्रशासन, निजी और सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से कुछ मदद आती है, तब तक जीने की गुंजाइंश नहीं बचती है।"[4] वैश्विक महामारी में अखबार तभी बचेगा, जब उसके पास खबर बचेगी, खबर तभी आयेगी, जब पत्रकार बचेगा, जब पत्रकार बचेगा तो सही समय आने पर उसके लिए तोप भी मुकाबिल होगी।

3.3) कोविड का संकट और मीडिया की स्वतंत्रता पर खतरा

"रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स के अनुसार विश्व भर में तमाम सरकारें कोविड महामारी की भयावहता की आड़ में मीडिया की स्वतंत्रता को बाधित और पत्रकारों का दमन कर रही है। विश्व भर की सभी सरकारों के मीडिया की आजादी पर शिकंजा कसने का सबसे आदर्श समय है। विश्व के सभी मुल्क कोरोना महामारी की भयावहता का यह स्वरूप देख कर हतप्रभ है, लगभग सभी राजनीतिक गतिविधियां बंद है, धरना-आंदोलनों पर रोक लगी हुई है, ऐसे में कोविड महामारी से उपजी आपातकाल स्थिति ने सभी सरकारों की असीमित शक्तियां प्राप्त हो गई है। ऐसे में सरकारों द्वारा पत्रकारों पर नियत्रंण और दमन पर लोगों का ध्यान कम ही जाएगा। सरकारें इसका पुरजोर तरीके से फायदा उठा रही है।"[5] कोविड-19 महामारी की संक्रमता को कम करने और लोगों में इस महामारी का संक्रमण न फैलें इसकी आधार बनाकर तमाम सरकारों पत्रकारों पर निगरानी कर रही है। सरकारों द्वारा पत्रकारों के फोन टैप किए जाए रहे है।। एक ओर जहां कोरोना महामारी ने केवल पूरी विश्व को प्रभावित किया है, बल्कि सरकारों को बुरी तरह झकझोर कर रख दिया है। अनेक देशों ने महामारी की व्यपाकता और उसकी संक्रमता की आड़ लेकर मीडिया पर नियत्रंण करने की कोशिश की है। चीन जहां से कोरोना वायरस की शुरूआत हुई, कई पत्रकारों पर इसलिए मुकदमें किए गए, जिससे कोरोना से संबधित खबरें अन्य देशों में न पहुंच पाए, चीन के पत्रकारों का मानना है कोरोना के आंकड़ों और वहां हुई मौतों को झुपाने के लिए मीडियाकर्मियों पर दबाव बनाया जा रहा है, उन पर मुकदमें किए जा रहे है। चीन मीडिया स्वतंत्रता के मामले में 180 देशों की सूची में 177 वें नंबर है। एक ओर जहां सभी देशों की तमाम खामियां खुलकर सामने आ गई है, जिनमें अस्पतालों की कमी, वेंटिलेटंर, आक्सीजन सिलेंडर से लेकर डाक्टर और स्टाफ तक की कमी शामिल है। ऐसे में सभी सरकरों ने प्रयास किए समाचार संस्थाएं उन्हीं आंकडों को जारी करें जो सरकार द्वारा उन्हें उपलब्ध कराएं जाएं या वे सराकरी वेबसाइट पर उपलब्ध हो। भारत के संदर्भ में मीडिया की

आजादी पहले ही बडा मुद्दा रही है, वर्तमान दौर में सरकार को सेंशरशिप और इमरजेंसी लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है, सरकार का काम मीडिया समर्थक समूह स्वंय किए दे रहे है। जिसके फलस्वरुप सरकार सीधे स्वतंत्रता के प्रश्न से पल्ला झाड़ ले रही है। "रिपोर्टर विद आउट बार्डर के मुताबिक भारत पत्रकारों की स्वतंत्रता के मामले मे 180 देशों में 142 नंबर पर है। कोरोना महामारी के समय लाकडाउन ने इसे और संकुचित कर दिया है। पत्रकारों को आधिकारिक सूचना की पहुंच तक सीमित कर दिया गया है। मीडिया संस्थानों को सरकारी आंकडें जारी करने के लिए बाध्य किया गया है। पत्रकारों के आने -जाने पर तमाम तरह की पांबदियों लगाई गई है, सरकार की आलोचना करने पर तमाम पत्रकरों पर अनावश्यक मुकदमें किए जा रहे है। कई पत्रकरों की जेल भी पहुंचा जा रहा है, क्योंकि ये स्थानीय स्तर सरकार और अधिकारियों की नाकामी की खबर को प्रकाशित कर रहे है।"[6] सरकारें कानून का भय दिखाकर पत्रकरों और मीडिया संस्थान पर दबाव डाल रही है। जिनमें राष्ट्रीय आपदा कानून से लेकर, भारतीय टेलीग्राफ तक के कानून शामिल है। जिसके तहत सरकार मीडिया की स्वतंत्रता को बाधित कर रही है। महामारी के समय भारत सरकार ने सुप्रीम कोर्ट से मांग की मीडिया गलत रिपोर्टिंग कर रही है और समाज में पैनिक का वातावरण तैयार कर रही है। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले ने मीडिया को हिदायत दी कि हम ऐसी आशा करते है कि मीडिया (प्रिंट, इलेक्ट्रानिक, डिजिटिल) अपना कार्य सुचिता पूर्वक करेगें। सरकार का इस तरीके से सुप्रीम कोर्ट से शिकायत करना और आपदा प्रंबधन के कानून के माध्यम से मीडिया पर अनौपचारिक नियंत्रण और दबाव है, जिससे प्रेस की स्वतंत्रता बाधित हो रही है। मीडिया कर्मियों की चुनौती ये है कि वे महामारी में रिपोर्टिंग करते समय खबर की गंभीरता को समझे और गलत खबरों को प्रकाशित न करें।

3.4) मानसिक स्वास्थ्य और पत्रकार

कोरोना महामारी के प्रभाव ने दुनिया भर के लोगों को मनोवैज्ञानिक रुप से प्रभावित किया है। मानसिक स्वास्थ्य दुनिया में एक नई समस्या बनके उभरा है, प्रिंट मीडिया पत्रकार भी इस महमारी से मनोवैज्ञानिक रुप से प्रभावित हुए है। जिसका सबसे बडा कारण लाकडाउन और संक्रमित होने पर विचार न प्रेषित कर पाना, अकेलापन और परिवार के लोगों से न मिलना शामिल है। "विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि कोविड-19 महामारी ने मनुष्य का दैनिक जीवन बदल कर रखा दिया है, आवाजाही पर

रोक, संक्रमण होने का खतरा ने मनुष्य के रोजमर्रो के जीवन को बदल कर रख दिया है।”[7] वरिष्ठ पत्रकार का कहना है कि कोरोना महामारी के समय सभी रिपोर्टर हमेशा तनाव में रहते है, जिससे उनका कार्य भी प्रभावित होता था। कोविड ने न्यूजरुम के दैनिक व्यवस्था को बदल कर रखा दिया, ज्यादातर पत्रकारों को वर्क फाम होम करने को कहा गया, जिससे उनमें डिप्रेशन, तनाव जैसे कई मानसिक बीमारी हो गई।” पत्रकार की चुनौतियों को लाकडाउन ने और बढ़ा दिया, रिपोर्टिंग जाने वाले पत्रकारों के लिए ग्रांउड पर जाना बेहद मुश्किल भरा था। कोरोना महामारी ने स्वास्थ्य और जीवन पर खतरा उत्पन्न ही किया लेकिन यह एक मानसिक त्रासदी के रूप में आया, जिसने संपूर्ण मानव सभ्यता को किसी ने किसी रूप में मानसिक रूप में प्रभावित किया। प्रिंट पत्रकार को न्यूजरुप को एक रेखीय रुप में बुलाया जाने लगा, रिपोर्टर को बीट के अनुसार बुलाया जाने लगा। पत्रकारों का एक-दूसरे न मिल पाना और सूचनाओं के अंबार को इस पार से उस पार करना उनके लिए मानसिक चुनौती के रूप में आया, लगभग सभी प्रिंट दफ्तरों और पत्रकारों ने तनाव, डिप्रेशन को कोरोना महामारी के समान चुनौती के रुप में ही माना है।

3.5) वायरस का खतरा और नौकरी जाने की चुनौती

पत्रकार वायरस की चुनौती से जूझ ही रहा था, मीडिया संस्थाओं ने कोरोना की आड़ में प्रिंट पत्रकारों को नौकरी से निकाल पर उन पर दोहरी महामारी लाद दी। लगभग सभी मुख्य न्यूज ग्रुप ने अपने यहां से पत्रकारों को नौकरी से निकाला एंव उनकी सैलरी कम कर दी। “प्रिंट में टाइम्स आफ इंडिया ग्रुप ने अपने यहां के लगभग सभी प्रिंट पत्रकारों की सैलरी कम कर दी। हिंदू अखबार ने अपने यहां के पत्रकारों की लगभग 8 फीसदी सैलरी में कटौती कर दी। द क्विंट ने लगभग अपने 45 पत्रकारों को नौकरी से निकाल दिया।”[8] पत्रकारों को यह कहकर नौकरी से निकाला गया कि उनको विज्ञापन कम प्राप्त हो रहा है या कोविड महामारी के समय इतने लोगों को की आवश्यकता नहीं, जबकि प्रधानमंत्री ने यह कहा था कि किसी व्यक्ति को नौकरी से न निकाल जाए। एक ओर प्रधानमंत्री ने 22 मार्च के अपने संबोधन न में कहा कि पुलिस कर्मी और मीडिया और स्वास्थ्यकर्मी की भूमिका महामारी में अहम होगी, लेकिन दुनिया की रोज-रोजी के संकट पर बात करने वाले पत्रकारों का भविष्य कोविड के समय खुद खतरे में है। कोविड के

खतरों के लेकर मीडिया के प्रोफेसर का कहना है सरकार का निजी कंपनियों पर ज्यादा जोर नहीं चल सकता है, सरकारें स्वंय वित्तीय मदद कर सकती है लेकिन यह कंपनी और कर्मचारी के बीच का मामला है, सरकार पर भी कंपनियों की ओर से काफी दबाव रहता है। एक ओर मीडिया संस्थान के मुख्य अखबारों में ये खबरें झपती रही है, किसी कर्मचारी को नौकरी से न निकाला जाए, मीडिया संस्थाएं खुद अपने यहां कार्य करने वाले पत्रकारों को बिना कारण बताए नौकरी से निकालती रही या कोई न कोई कारण बताकर उन्हें नौकरी से निकालने पर मजबूर कर दिया। "दिल्ली -एनसीआर से चलने वाले न्यून नेशन ने लगभग 16 लोगों की अग्रेंजी डिजीटल टीम को नौकरी से निकाल दिया।" नवभारत टाइम्स ने भी अपने यहां के पत्रकारों की छंटनी शुरू की और पत्रकारों को अचानक नौकरी से निकाला दिया गया, दिल्ली, लखनऊ और लगभग सभी ब्यूरों से पत्रकारों को नौकरी से निकाला गया।"[9] एक तरफ पत्रकारों पर संक्रमण का खतरा था ही, मीडिया संस्थानों ने नौकरी जाने को उन्हें एक महामारी के रुप में धकेला, ऐसे में पत्रकारों पर दोहरी चुनौती आई, एक ओर तमाम मीडिया संस्थान अपने यहां से छंटनी कर रहे थे, लेकिन दूसरी ओर कोरोना काल में उन्ही कही नई नौकरी मिलना बेहद चुनौती पूर्ण कार्य था।

3.6) कोविड महामारी, प्रिंट पत्रकारों की विश्वसनीयता और सोशल मीडिया

कोविड महामारी पत्रकारिता और पत्रकारों के लिए प्रश्न चिन्ह लेकर उभरी है, एक ओर जहां पत्रकार हर खबर के लिए अपने सूत्र या स्थानीय रिपोर्टर से तलब करता था, तथ्यपरक खबरों के लिए। महामारी के समय लाकडाउन ने रिपोर्टरों और सिटीजन जर्नलिस्टों को शिथिल कर दिया कि वो घर में रहे। जिससे पत्रकारों को लगातार ग्रांउड से सूचना मिलना लगभग खत्म हो गया। जिससे पत्रकार और उसकी विश्वसनीयता खतरे में आ गई, एक ओर जहां पत्रकारों की विश्वसनीयता खतरें में है, वहीं दूसरी ओर पत्रकारों को इसे बरकार रखने की चुनौती है। कोरोना महामारी के समय तेजी से बदलते संक्रमितों के आंकडें और मौतों की संख्या ने प्रिंट मीडिया पत्रकारों के लिए एक सबब लेकर आई, जिसकी कमी सोशल मीडिया के जरिए पूरी हुई। "सोशल मीडिया प्रिंट पत्रकारों के लिए सूचना का नया सोर्स बनकर उभरा, जिसमें जनता स्वंय खबर दे रही है और तमाम देश के बड़ें नेता और सरकारी संस्थाएं सोशल मीडिया के माध्यम से आंकड़ें एवं जरूरी सूचनाएं जनता तक उपलब्ध करा रही है। पत्रकारों की चुनौती ये है कि वे किस प्रकार सोशल मीडिया के दौर में अपनी विश्वसीनयता बनाए रखें और प्रिंट के तमाम

माध्यम को सूचना के केंद्र में फिर से ला सकें। एक ओर जनता जहां सीधें सोशल मीडिया के माध्यम राजनीतिक नेताओं से बातचीत कर रही है, पत्रकारों की उसमें कोई भूमिका नहीं है, इसका नुकसान ये है, जनता से आई खबर की पुष्टि कौन करें, कि खबर सत्य की है कि नहीं। सबसे बड़ा सावल पत्रकरों की पास खबरें की कंट्रोल का बहुत देर अधिकार नहीं होता है।”[10] जिससे ये होता है कि गलत सूचना खबर करने पर वह बहुत तेज से फैल जाती है, पत्रकार चाह कर भी इसे फैलने से नहीं रोक सकता है। कभी-कभी गलत खबर और वीडियों जल्दबाजी में पत्रकारों से पोस्ट हो जाती है, जिससे जनता में गलतफहमी फैल जाती है। पत्रकारों की विश्वनीयता खतरे में आ जाती है। कोरोना महामारी के दौर में प्रिंट पत्रकार भी सूचनाए के लिए सोशल मीडिया पर केंद्रित हो गया, लेकिन गेटकेपिंग न होने का कारण कई बार गलत सूचना भी इस माध्यम से फैल जाती है। कोरोना में ज्यादातर अफवाहें सोशल मीडिया के कारण फैली, सोशल मीडिया ने सूचनाएं की ऐसी झड़ी लगा दी लोगों को समझना दूभर हो गया कि कौन सी खबर सत्य है कौन सी असत्य। सोशलमीडिया में इतनी गलतफहमी वातावरण में फैला दी, जिससे बिना वहज तनाव का माहौल बन गया। पत्रकारों के लिए ये बेहद मुश्किल भरा कार्य था कि सोशल मीडिया से आई खबरों की स्पीड और स्केल को कैसे सुनिश्चित किया जाए। एक ओर जहां सोशल मीडिया ग्रुप ने स्वंय आधारहीन खबरों और हिंसा जनक वीडियों पर रोक के निर्धारण के नियम निर्धारित किए है। लेकिन गलत सूचना के लिए सोशल मीडिया के पास रोकने का कोई यंत्र नहीं है। पत्रकारों की महामरी के दौर मुख्य चुनौती यह है कि वह अपना ट्रस्ट कैसे वापस लाए और खबरों की समझ और समाज के बड़ें व्यापक रूप से देखने की प्रकृति पर वापस लौटने की है। पत्रकार केवल खबर नहीं देता है, वह खबरों के देखने का ज्ञान और अपने अनुभव का आधार उस खबर में झोंक देता है, जो व्यक्ति आमतौर पर प्राप्त नहीं कर सकता है। यहीं पर पत्रकार का ट्रस्ट कार्य करता है, पत्रकारिता कार्य करती है। विश्वास पत्रकारिता का मुख्य आधार होता है। विभिन्न शोध ये रेखांकित करते है कि महामारी के दौर पर मीडिया पर जनता का विश्वास क्षीण हुआ है। प्रिंट पत्रकारों के लिए ये चुनौती भरा है कि वे अपना खोया हुआ आधार कैसे वापस पाए या फिर सोशल मीडिया पर खुद और मीडिया संस्थान को कैसे स्थापित करें।

3.7) महामारी, समाचार-पत्र उघोग की चुनौतियों और प्रिंट पत्रकार

कोरोना महामारी से पहले ही समाचार-पत्र उघोग अत्यधिक उत्पादन लागत से परेशान था। छोटे और मध्यम श्रेणी के समाचार पत्र इससे पहले से ही परेशान थे कि हार्ड कापी को कैसे प्रकाशित किया जाएऔर उसके राजस्व कहां से आए। चूंकि कि प्रिंट अखबारों को चलाने का सबसे बड़ा आधार विज्ञापन है। विश्व समाचार पत्र संगठन का कहना है कि भारतीय समाचार पत्र उघोग राजस्व न होने के कारण डूब रहे है, तमाम मीडिया हाउस बंद हो रहे है। कोरोना वायरस से उपजी महामारी ने समाचार पत्र के वितरण पर कई तरीके से विराम लगाया है। एक ओर जहां आधारहीन एवं अफवाहें से यह फैला कि अखबारों के सर्कुलेट होने के कारण इसे कोविड होने के खतरा होता है, जिसके कारण ज्यादातर लोगों ने अखबार पढ़ना बंद कर दिया और अखबरों वाले के आने-जाने से भी मना कर दिया, जिससे समाचार पत्र वितरक और अखबारों के लाने वालों दोनो को आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ा। कई जगह पर पत्रकारों को भी खबर करने से रोका गया। कई सोसाइटियों ने अखबारों के डिलीवरी करने वाले सदस्यों को आना जाना प्रतिबंधित कर दिया। समाचार पत्र उघोग को कोरोना महामारी ने झटका दिया ही, कोविड के लाकडाउन ने अखबारों की बहुत तेजी से एक शहर के कोने से दूसरे शहर के कोने के प्रसार को पूरी तरह धीमा कर दिया। लाकडाउन छोटे क्षेत्रीय अखबारों और प्रकाशन केंद्र को पूरी तरह बंद होने पर मजबूर कर दिया क्योंकि क्षेत्रीय अखबारों के पास अपने प्रिंटिग प्रेस नहीं होते है, वे अपने अखबार को प्राइवेट प्रिटिंग प्रेस में प्रकाशित करने के लिए भेजते है। इसी कारण पाठक सूचना के लिए डिजिटल माध्यामों की ओर बढ़ें या अन्य इलेक्ट्रानिक, वेब पेज की ओर अपनी आवश्यकता अनुसार बढ़े। इसका नुकसान ये क्षेत्रीय अखबार या तो पूरी तरह बंद हो गए या डिजिटल प्लेटफार्म की ओर बढ़े। जिसका नुकसान ये हुआ, इनमें काम करने वाले तमाम प्रिंट पत्रकारों को अपनी नौकरी से हाथ धोना और कई पत्रकरों को जो डिजिटल माध्यमों में इतनी निपुणता नहीं रखते थे, उन्हें काम नहीं मिला। अन्य जो क्षेत्रीय अखबार जो डिजिटल की ओर बढ़े उनमें राजस्व की कमी के कारण बहुत से प्रिंट पत्रकारों को निकाल दिया गया या बहुत कम वेतन पर रखा गया। कोविड महामारी ने के तत्कालीन समय के सारे सार्वजनिक सामारोह, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विभिन्न तरह के खेल कार्यक्रम(आइपीएल) या तो निरस्त कर दिए गय या फिर उन्हें आगे बढ़ा दिया गया। महामारी ने आर्थिक रूप से ठहराव की स्थिति ला दी, अन्य सभी उघोगों के लिए जिनमें रियल स्टेट, राजनीतिक सामारोह, अन्य मुख्य सामारोहों के रूकने से न्यूज पेपर उघोग के सामने एक अकल्पनीय आर्थिक समस्या खडी कर दी। “इंडियन न्यूज पेपर सोसाइटी के

आकड़ों के मुताबिक लाकडाउन के समय करीब 4500 करोड रुपये के नुकसान न्यूज पेपर उघोग को उठाना पडा। इंडियन न्यूज पेपर सोसायटी के अनुसार आने वाले समय में यह नुकसान करीब 15,000 करोड का होगा। एबीपी के चीफ एग्जिकेटिव कहना है न्यूजपेपर उघोग का 80 से 85 फीसदी आय का स्त्रोत विज्ञापन है, लेकिन कोविड के आने के बाद और खासकर लाकडाउन के बाद ये लगभग शून्य हो गया है। जिसके कारण इंडियन न्यूज पेपर सोसासयटी ने केंद्र सरकार से अनुरोध किया है कि जो न्यूजपेपर पर कस्टम ड्यूटी 5 फीसदी है, उस पर छूट दी जाए और केंद्र सरकार से ये सिफारिश की जो क्षेत्रीय और शहरीय समाचार पत्र है, उन्हें भी विज्ञापन दिया जाए। इंडिन न्यूज पेपर सोसायटी के अध्यक्ष शैलेश गुप्ता ने लिखित में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय को सूचित किया कि न्यूज पेपर उघोग बिना विज्ञापन राजस्व के अभूतपूर्व संकट का सामना कर रहा है। इंडियन न्यूज पेपर सोसायटी के अनुसार न्यूजप पेपर उघोग करबीन 8-10 लाख लोगों का सीधे रोजगार देता है, जबाकि अप्रत्यक्ष रुप से यह 18-20 लाख लोगो को रोजगार देता है। विज्ञापन राजस्व कम होने के कारण न्यूजप्रिंट कंपनी ने कैसे उत्पादन लागत कम हो और कैसे फिर से कंपनी कंट्रोल करे, इसके लिए नए रास्ते तलाश किए। जिसे तहत न्यूजपेपर के मैनेजमेंट की देख- रेख करने वालों ये सुनिश्चित किया कि प्रिंट पत्रकारों की वेतन कम की जाए और कम से कम पत्रकारों को नौकरी पर रखा जाए। इसके अलावा उन्होंने स्ट्रिंगर और अन्य काम की देख -रेख में जहां अधिक लोग थे, उन्हें नौकरी से निकाल दिया। इसके अलावा विभिन्न अखबारों ने स्पेशल एडीटोरियल निरस्त कर दिए और कई अखबारों ने अखबार की लागत को कम करने के लिए अखबारों के पन्नों की संख्या कम कर दी। द हिन्दू ग्रुप ने अपने प्रिंट एडिशन के स्पोर्टस स्टार नामक मैगजीन को बंद कर दिया, जिसका प्रकाशन 1978 से हो रहा था।”[11] विभिन्न न्यूज पेपर ने अपने अधीन पत्रकारों को कोविड के समय वर्क फार्म होम करने को दिया, लेकिन जो रिपोर्टर थे उन्हें जमीन से रिपोर्ट लानी पड़ी, जिससे कारण उन पर संक्रमण का खतरा सबसे अधिक था, जिन प्रिंट पत्रकारों की बीट स्वास्थ्य थी, उन्हें अस्पताल और कोरोना संक्रमित क्षेत्रों से रिपोर्टिंग एवं सूचनाएं संग्रहित करनी थी, जिससे उन पर संक्रमण का खतरा सबसे अधिक था। सरकार के पास कोई ऐसी कोई पालिसी या बीमा नहीं है, जिससे यह सुनिश्चित किया जाए कि पत्रकार का जोखिम एवं उसकी जान भी उतनी ही कीमती है, जितनी अन्य फ्रंट लाइन कार्य करने वालों की है। न्यूज पेपर इंडस्ट्री भी मुख्य संपादकों को तो बीमा देती है या मेडिकल सुविधाएं देती है, लेकिन सामान्य रिपोर्टर एवं पत्रकारों की बीमा की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं होती है। कोविड

महामारी से न्यूज पेपर इंडस्ट्री के एक और नुकसान यह हुआ कि लोगों ने अखबार खरीदना कम किया और व्यक्ति खबरों के लिए डिजिटिल प्लेटफार्म की ओर अग्रसरित हुए। जिसमें युवाओं का बडा वर्ग जिसने मोबाइल फोन, टैबलेट, लैपटाप के जरिए सूचना लेना अधिक उपोयगी और आसान समझा। न्यूजपेपर इंडस्ट्री के लिए ये चुनौती है कि वे अपने खोए हुए पाठक को कैसे वापस लाए और न्यूज पेपर को वेब पर कैसे प्रसारित करे। न्यूज पेपर इंडस्ट्री की सबसे बडी चुनौती उत्पादन लागत की है और सरकार की कस्टम ड्यटी की है। एक ओर जहां समाचार पत्र उघोग अधिक लागत से जूझ रहे है, वहीं डिजिटल प्लेटफार्म के पास ऐसा कोई जोखिम नहीं है, वे मुफ्त में खबरें प्रसारित कर सकते है। “इंडियन रीडरशिप सर्व के शोध के मुताबिक वर्तमान 35 की उम्र के लोग 56 फीसदी सूचना आनलाईन लेते है और वे आनलाइन पाठक भी है। इसके उलट करीब 16 फीसदी ही प्रिंट के माध्यम से सूचना ग्रहण करते है। क्षेत्रीय अखबारों और स्थानीय अखबारों की हालत और खराब है। मुख्य समाचार पत्रों को तो डिजिटल रीडरशिप आसानी से मिल जाती है। उनके सब्सक्राबर भी बेहद तेजी से बढ़ जाते है।”[12] मुख्य न्यूजपेपर को डिजिटल प्लेटफार्म पर भी विज्ञापन मिलने लगते है, लेकिन स्थानीय अखबारों के डिजिटल प्लेटफार्म को अधिकतर जनता सब्सक्राइब नहीं करती है, न उन्हें किसी तरह विज्ञापन प्राप्त होता है और न उन्हें किसी मीडिया हाउस से इनकम आने का सोर्स होता है। कोविड महामारी ने स्थानीय समाचार पत्रों को समाप्ति की ओर ला दिया है, इनमें कार्य करने वाले पत्रकारों की नौकरी भी खत्म ही है। बड़ा सवाल यही है जब न्यूज पेपर इंडस्ट्री अखबार स्वंय अस्तित्व में ही नहीं रहेंगें, तो वे प्रिंट पत्रकारों को कैसे नौकरी पर रखेगें। पत्रकारों की चुनौती यह है वह न्यूज पेपर के डिजिटल प्लेटफार्म में खुद को समावेशित कैसे करें और अपने कार्य की निरंरता को कैसे बनाए रखे।

3.8) फेक न्यूज और इनफोडैमिक और प्रिंट पत्रकार

कोविड -19 को लेकर पहले एक खबर आई, फिर उसके बाद उसके विपरीत खबर आई। धीरे-धीरे सही और गलत सूचना का एक अंबार लगने लगा। एक तरफ कई आकड़े आते कि आज पूरे देश में कोविड संक्रमित संख्या इतनी है, उसके बाद खबर आती ये खबर गलत थी, तमाम सही और गलत सूचनाएं महामारी के समय समाज में फैल रही थी, खबर इतनी तेज फैलती कि पत्रकारिता जब तक उसकी फैक्ट चेक करते, तब तक दूसरी खबर आ जाती, पत्रकारों के अत्यधिक सूचना और विशेषकर

गलती सूचना ने उनकी विश्वसनीयता पर एक संकट ला दिया। कोरोना एक समय सूचनाएं एक तरह से सूनामी की तरह आती, घर में अकेला बैठा आदमी भी व्याकुल होने लगता, अब क्या होगा। “विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार कोरोना महामारी के सूचनाओं की इतनी अधिकता हो गई कि यह तय करना मुश्किल हो गया कि कौन सी खबर सही है और कौन सी गलत है, किस खबर पर भरोसा किया जाए, किस खबर पर नहीं। जिसके कारण एक नयी गाइडालाइन की जरूरत थी, जिसके आधार पर इनफोडैमिक शब्द की अवधारणा आई।”[13] महामारी के समय आये इस नए शब्द ने पत्रकारों के लिए संकट और चुनौती की स्थिति ला खड़ी कर दी, महामारी के शुरू में पत्रकार वैज्ञानिक आधार पर खबरों का चयन करता, लेकिन धीरे-धीरें इतनी सूचनाएं आने लगी कि पत्रकारों को अपनी ही खबर पर पुन विश्वास प्राप्त करते। इसके अलावा पत्रकारिता करने का तरीका भी काफी हद तक बदल गया, लगभग पत्रकारों के पास अस्पष्ट आंकडें होते और खबरों में कितनी खबर सच और कौन सी झूठ है, इसके लिए कोई स्पष्ट वैज्ञानिक पद्धति न थी। इसके इतर कोरोना वायरस से उपजी महमारी ने गलत सूचनाओं की एक तरीके से बाढ़ ला दी, मुख्यत आनलाईन प्लेटफार्मों के कारण गलत खबरों वैश्विक रूप से इतने फैलाव हुआ, कि पूरी की पूरी फर्जी खबरें आनलाईन डिजिटल प्लेटफार्म पर चलती है, जो कोरोना वायरस की तरह खतरनाक थी। फेक न्यूज ने महामारी की सूचना के अलावा कार्य और बढ़ा दिया, एक तरफ महामारी की खबर दिखाना, दूसरी ओर फेक न्यूज से कैसे खत्म किया जाए, ये पत्रकारों के लिए ब्रडी चुनौती थी। पत्रकारों का मानना है कि जब से डिजिटल प्लेटफार्म और सोशल मीडिया का उदय हुआ है, तब से कोई भी व्यक्ति अपने विचार इंटरनेट, ब्लाग पर, अपने व्यक्तिगत यू ट्यूब और फेसबुक से लाइव वीडियो या आफलाइन वीडियों डाल देता है, जिसकी विश्वसनीयता या कोई जवाबदेही नहीं होती है। व्यक्तिगत पोस्ट और वीडियो को नुकसान यह होती है कि अगर पोस्ट या वीडियो अत्यधिक बार शेयर या देखा जाता है, तो लोग उस घटना को सच मान लेते है। उदाहरण के तौर पर कई लोगों ने ऐसे वीडियों पोस्ट किए ये प्राकृतिक दवाएं लेने से कोरना वायरस नहीं फैलता है, लेकिन जब तक स्वास्थ्य अधिकारियों से इस बात की पुष्टि होती तब तक खबर फैल चुकी थी, इसका नुकसान ये होता है कि साधारण जनता इन खबरों को सच मानकर प्राकृतिक और अन्य दवाओं का सेवन करने लगती है और अन्य बीमारी और रोगों से घिर जाती है। गलत सूचना में कई बार बिना जाने या धोखे से कोई फोटो या वीडियों शेयर कर देती है, खासकर कोरोना के टाइम में आंकड़ों को अनजाने बहुत ज्यादा ही शेयर किया गया। इसके उलट कई बार

कार्पोरेट घराने जानबूझकर गलत खबरे फैलाई जिसके उनके व्यक्तिगत और व्यापारिक हित सध सकें। तमाम नेताओं ने कोविड वैक्सीन पर सवाल उठाएं, जिससे उन्हें राजनीतिक लाभ प्राप्त हो सके। इसके परिणाम यह हुए कि विश्व स्वास्थय संगठन को यह कहना पड़ा कि फेक न्यूज कोरोना वायरस से तेजी से और आसानी से फैलता है और उसी की तरह खतरनाक होता है। "आवाज नामक एक संस्था की तरफ से 100 गलत खबरों की एक सूची बनाई गई, जो 6 भाषाओं में प्रसारित हुई थी, जिसे करीब 17 लाख शेयर कियागया था, फेसबुक इन खबरों करीब 1 करोड 17 लाख लोगों ने देखा था। इससे फेक न्यूज बहुत तेजी प्रसारित होने का अंदाजा लगाया जा सकता है। कोविड के परिप्रेक्ष्य में सर्वाधिक गलत सूचनाएं यूटयूब के माध्यम से प्रेसित की गई।"[14] महामारी के समय यह देखा गया कैसे समाचार सोशल मीडिया के माध्यम से अनधिकृत तरीके से कैसे न्यूज वेबसाइट पर पहुंच रहे है। पत्रकारों के लिए ये बहुत मुश्किल हो गया कि फेक न्यूज को कैसे न्यूज वेबसाइट पर आने से रोके। इस तरह विभिन्न प्रकार के विदेश प्लेटफार्म या वैश्विक प्रकृति के सोशल नेटवर्किग साइट पर गलत सूचनाएं को नियमित करने का तरीका काफी मुश्किल भऱा है। रायटर इंस्टीयूट ने पत्रकारिता पर एक शोध किया महामारी के दौरान जिससे यह पता चला कि जो मुख्य सामाजिक हस्ती है, जिनमें राजनीति भी शामिल है, उनमें गलत सूचनाओं का आकार और बड़ा कर दिया है, कोविड महामारी के समय गलत सूचनाओं का बड़ा हुआ सामान्य लोगों की ओर से आया है। इसी प्रकार राजनीतिक नेताओं, सेलिब्रेटीऔर आनलाईन मीडिया को प्रभावित करने वालें लोगों ने महामारी के समय गलत सूचनाओं की अत्यधिक प्रसारित किया। " रायटर के शोध के मुताबिक राजनीतिज्ञ, सेलिब्रेटी और मुख्य सामाजिक हस्तियों ने सोशल मीडिया पर प्रसारित 69 फीसदी फेक न्यज में से करीब 20 फीसदी सूचनाएं पोस्ट की। जिसका कारण यह है ज्यादातर नेताओं अपनी सरकार या अपनी राजनीतिक हित के लिए सूचनाओं को पोस्ट करते है।"[15] फेक न्यूज को कैसे समाचार से बाहर रखना है ये बेहद चुनौती भरा करा काम है। कई सारी मीडिया संस्थाओं ने फेक न्यूज और तथ्यहीन सूचनाओं को हटाएं के लिए फैक्ट चेकर रखने शूरु कर दिए है, महामारी के समय सभी मीडिया संस्थानों में फैक्टचेकर की मांग बढ़ी है। पत्रकारों के लिए यह तो मुश्किल है ही कैसे कोविड के दौरान फेक न्यूज से मुकाबला किया जाए, लेकिन बडी चुनौती सामान्य जन के भरोसे की है, जो महामारी के समय बहुत कम हो गया है। पत्रकारों जो समाज में सूचना का आधार होता है, सामान्य जन उनके ज्ञान और अनुभव के आधार पर कह गई बात को भरोसा करते है, महामारी के समय यह पूरी तरह

विखण्डित हो गया है। पत्रकार जो एक समय विश्वसनीयता का आधार होते थे, महामारी के समय इनकी विश्वसनीयता की कमी आई है, पहले जहां सामान्य जन बिना फैक्ट चेक पत्रकार द्वारा कही गई बात का भरोसा कर लेते थे। पत्रकारिता का मुख्य आधार उसकी विश्वसनीयता है, विभिन्न शोधों के मुताबिक महामारी के समय मीडिया की विश्वसीनयता एक मुख्य चुनौती के रुप में सामने आई है, विश्व के लगभग हर देशों में मीडिया की विश्वसनीयता सवालों के घेरे में है। "कोरोना वायरस के समय एक यू गर्वमेंट की तरफ से शोध किया गया, जिसमें करीब 26 देशों को चिन्हित किया गया, जिसमें लगभग 50-70 फीसदी आबादी मीडिया की विश्वनीयाता पर है, जिनमें मलेशिया और वियतनाम में यह 80 फीसदी से ऊपर है, बाकी सभी देशों में मीडिया की विश्वनीयता सवालों के घेरे में है। इन आंकड़ों में बड़ा यह है कि अभी सरकारें मीडिया पर भरोसा कर रही है, तभी उनकी विश्वनीयता कम जरूर हुई है, पर खत्म नही है।"[16] महामारी के खत्म हो जाने के बाद भी पत्रकारों को अपनी विश्वसनीयता साबित करनी होगी, क्योंकि जिस हिसाब से फेक न्यूज का कारोबार बढ़ रहा है, पत्रकारिता और पत्रकारों के लिए सबसे जरूरी है कि वो अपनी विश्वसनीयता बनाए रखें। विश्सनीयता ही पत्रकारिता का मूल आधार है, विश्वनीयता बनी रहेगी जनता मीडिया और पत्रकारों के पास सूचनाओं के लिए जाती रहेगी।

निष्कर्ष -

कोरोना वायरस से उपजी महामारी ने संपूर्ण दुनिया को प्रभावित किया है,लेकिन पत्रकारों के लिए यह महामरी दोहरा सबब लेकर आई। पत्रकारों के लिए यह महामारी संक्रमण से मृत्यु के साथ-साथ नौकरी जाने का भी संकट लेकर आई। सभी मीडिया संस्थानों ने अपने यहां कार्य करने वाले पत्रकारों के वेतन में कटौती की,कईयों को बिना किसी जवाब के ही नौकरी से निकाल दिया गया। पत्रकारों के लिए यह सूचना को लेकर एक बाढ़ की तरह आई, जिससे पत्रकारों के लिए रोकना अंसभव हो गया, सोशल मीडिया में प्रेसित किसी जानकारी पर पत्रकारों का ज्यादा देर नियंत्रण नहीं रहता था। महामारी के कारण पत्रकारों की कार्यप्रणाली और उनके काम के घंटे भी प्रभावित हुए। महामारी के बीच सूचना संग्रहण और कार्यप्रणाली में आई चुनौतियों का पत्रकार ने किस प्रकार सामना किया है, इसका अध्ययन चतुर्थ अध्याय में किया गया है।

[1] ठाकुर, आर. (2021).कोरोना के बाद की दुनिया कैसी होगी?.आईसेक्ट पब्लिकेशन.पृष्ठ सं-75

[2] Radcliffe,d.(sep 2020) the impact of covid-19 on journalism in emerging Econmies and the Global Soutth.ThomsonRecutersfoundation.http://ssrn.com/abstract=3796666

[3] श्रीवास्तव, ए.(सितंबर,2021). पक्षकारिता आज मर रहे पत्रकारो को बचाइए , उम्मीद बची तो कल पत्रकारिता भी बच जाएगी, न्यूजलांउड्री.

[4] Ibid.

[5] पांडे, आर. (2021) कोरोना काल, दुनिया और भारत और मीडिया की स्वतंत्रता. द वायर,- http://www.the wire.com

[6] Ibid

[7] Who(n.d.).mental health and covid-19. https://who/teams/mental-health-and-substance-use/mental -health-and-covid-19

[8] सक्सेना, वि. (मई,2021).कोविड-19 का भारतीय राषट्रीय प्रिंट मीडया पर प्रभाव.आईजेआरएर.https://www.ikrar.org

[9] कमलेश. (जून,2020). कोरोना सेकट के बीच पत्रकारों पर मीडिया हाउस गिरा रहे हैं गाज. बीबीसी हिंदी. http://www/bbc hindi.com

[10] Radcliffe, d. (sep2020) the impact of covid-19 on journalism in emerging Economies and the Global Soutth. Thomson Recutersfoundation.http://ssrn.com/abstract=3796666

[11] सक्सेना, वि. (मई, 2021). कोविड-19 का भारतीय राषट्रीय प्रिंट मीडया पर प्रभाव.आईजेआरएर.https://www.ikrar.org

[12] ibid

[13] Radcliffe,d.(sep 2020) the impact of covid-19 on journalism in emerging Econmies and the Global Soutth.ThomsonRecutersfoundation.http://ssrn.com/abstract=3796666

[14] ibid

[15] Ibid

[16] Perreault, m. (2021). journalist on covid-19 journalism: communication Ecology of pandedmicreprortingh.sagepub.com

अध्याय-चतुर्थ

आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण

तृतीय अध्याय में प्रिंट पत्रकारों का कोरोना महामारी का पत्रकारों पर प्रभाव का अध्ययन किया गया था। इस अध्याय में प्रिंट पत्रकारों पर कोरोना के प्रभाव को विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध वर्णानात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इस शोध पत्रकारों पर कोरोना महामारी का प्रभाव जानने के लिए सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है। जिसके लिए शोध उपकरण के रुप में प्रश्नावली का प्रयोग किया है। जिसमें लखनऊ के 100 प्रिंट पत्रकारों का चयन किया गया है।

प्रस्तुत अध्याय में प्रिंट पत्रकारों पर कोरोना वायरस के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। जिसके तहत लखनऊ के सर्वाधिक प्रसारित राष्ट्रीय समाचार-पत्रों(दैनिक जागरण, हिंदुस्तान, अमर उजाला, नवभारत टाइम्स) का चयन किया गया है तथा उदेश्यपरक निर्दशन पद्ति के माध्यम से प्रत्येक समाचार-पत्र से 25-25 पत्रकारों को उत्तरदाता के रुप में चयनित किया गया है। जिनमें फोटो जर्नलिस्ट, रिपोर्टर, स्ट्रिंग, संपादक, उप संपादक सभी शामिल है।

इन उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के माध्यम से संकलित तथ्यों का विश्लेषण इस प्रकार है:

4.1) सर्वेक्षण पद्धति के माध्यम संकलित तथ्यों का विश्लेषण

Name of the institution

		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	Dainik Jagran	25	25.0	25.0	25.0
	Amar Ujala	25	25.0	25.0	50.0
	Hindustan	25	25.0	25.0	75.0
	NBT	25	25.0	25.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

सारणी संख्या-1

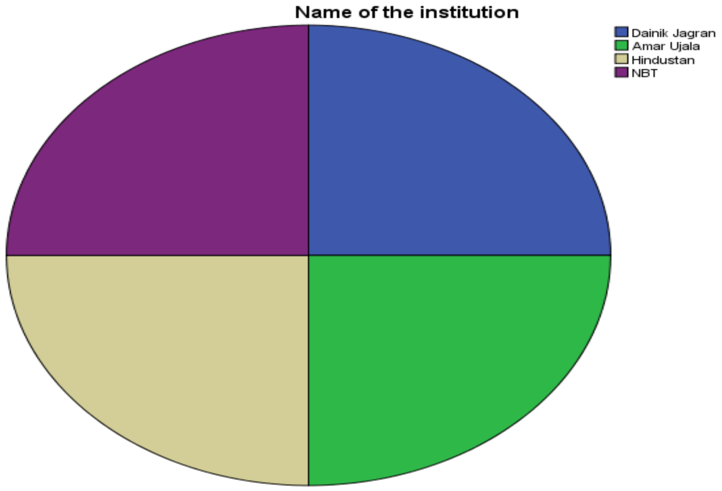

ग्राफ -1

संस्था के रुप में उत्तरदाता की संख्या हर संस्थान की 25-25 फीसदी है, जिसमें लखनऊ के प्रमुख राष्ट्रीय अखबार है, जो मुख्यत दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स है।

4.2) Gender of the respondent

		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	Male	87	87.0	87.0	87.0
	Female	13	13.0	13.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

सारणी संख्या-2

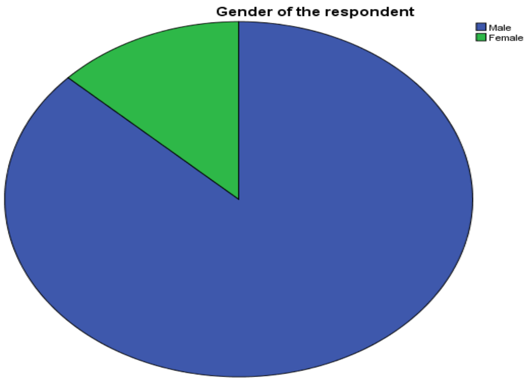

ग्राफ-2

सर्वेक्षण के रुप में 100 उत्तरदाता का चयन किया गया है। जिसमें उत्तरदाओं में पुरुषों की संख्या 87 फीसदी है, जबकि महिलाओं की सख्या 13 फीसदी है।

4.3) क्यारिपोर्टिंग के दौरान कोविड-19 से रोकथाम के लिए मास्क, पीपीई किट, सैनिटाईजर उपलब्ध था?

Whether mask, PPE kit and sanitizer were available to avoid corona during reprorting?

		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	yes	80	80.0	80.0	80.0
	NO	20	20.0	20.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

सारणी संख्या-3

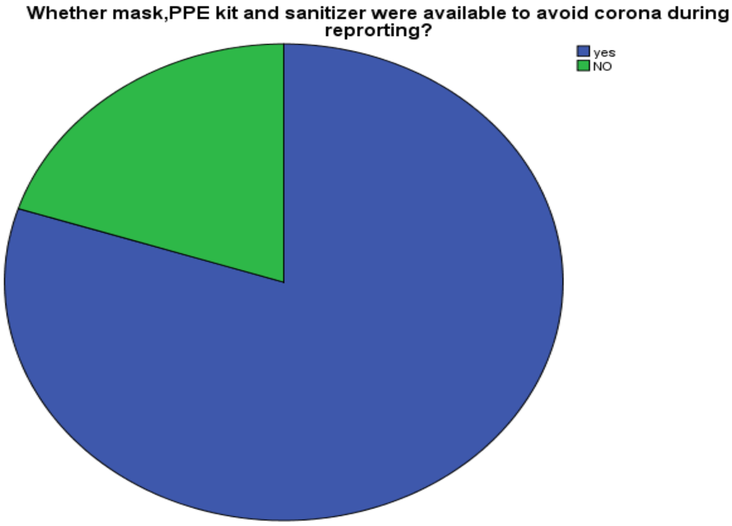

ग्राफ संख्या-3

पहले प्रश्न में 100 उत्तरदाताओं ने जवाब दिए है, जिनमें 80 फीसदी ने हां में उत्तर दिया है कि कोविड -19 की रोकथाम के लिए उन्हें मास्क और पीपीई किट उपलब्ध था, जबकि 20 फीसदी उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिया है कि उन्हें मास्क, पीपीई किट उपलब्ध नहीं था।

4.4) क्या कोविड-19 महामारी के दौरान विश्वसनीय आंकड़े और सूचना संग्रहण का कार्य प्रभावित हुआ?

Did reliable data and information compilation work affect during covid-19 pandemic?

		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	Yes	79	79.0	79.0	79.0
	No	21	21.0	21.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

सारणी संख्या-4

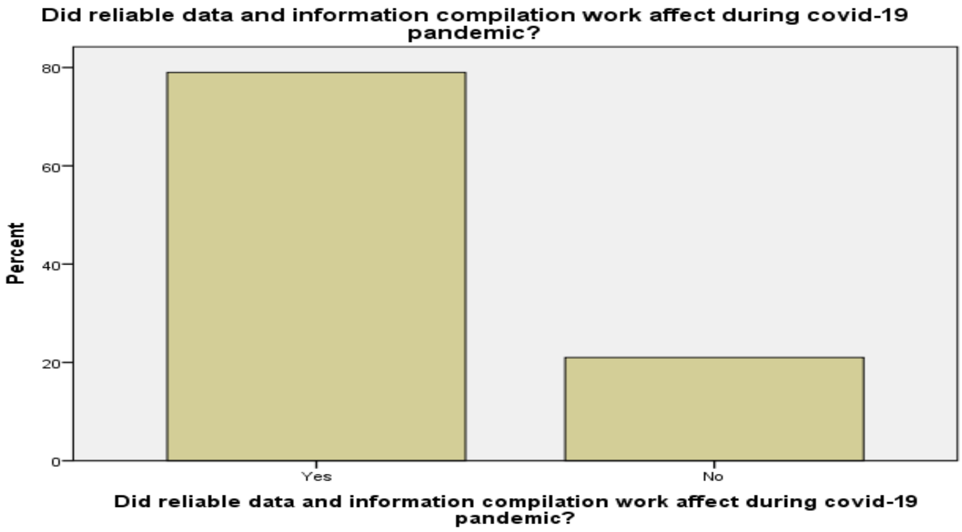

ग्राफ संख्या-4

कोरोना महामारी के समय दुनिया एकदम थम सी गई, लाकडाउन के कारण पत्रकारों को कई प्रतिबंधों का सामना भी करना पडा, जिसका असर इस प्रश्न के उत्तर में दिखता है, जिसमें 79 फीसदी उत्तरदाताओं ने हां में उत्तर दिया है कि कोरोना वायरस के समय उनके सूचना संग्रहण का कार्य प्रभावित हुआ, जबकि 21 फीसदी उत्तरदाता ने नहीं में उत्तर दिया है, कि कोरोना के समय उनकी कार्यप्रणाली और सूचना का कार्य प्रभावित हुआ।

4.5) कोविड -19 से संबधित सूचनाओं के लिए आपने किन साधनों का सबसे अधिक उपयोग किया?

What resources did you use the most to collect information on covid -19?

		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	social media	48	48.0	48.0	48.0
	Government website	34	34.0	34.0	82.0
	Radio	5	5.0	5.0	87.0
	Television	2	2.0	2.0	89.0
	Other mediums of print	11	11.0	11.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

सारणी संख्या-5

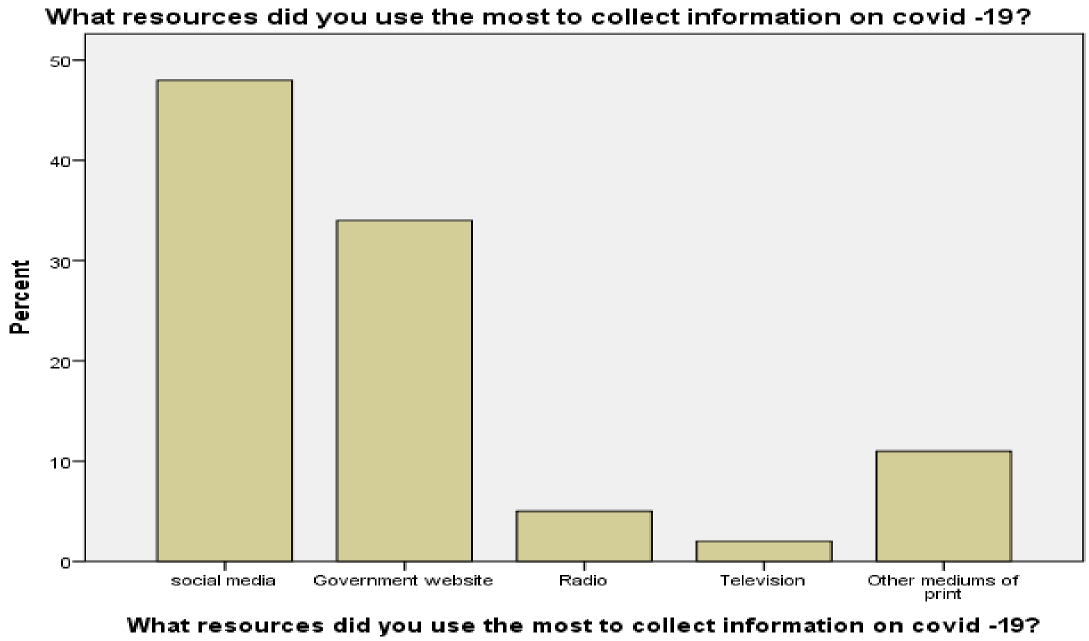

ग्राफ संख्या -5

कोरोना वायरस आने के बाद संपूर्ण दुनिया एक तरीके से आनलाईन की तरफ अग्रसर हुई, पत्रकारों के लिए अपने पुराने संसाधनों से सूचना एकत्रित करना मुश्किल हो गया, उन्हें इसके लिए कई अन्य संसाधन का प्रयोग किया। जिसके तहत सूचनाओं के लिए सबसे अधिक उपयोग में 100 में से 48 उत्तरदाताओं का मानना है कि उन्होंनों सूचना के लिए सोशल मीडिया का सबसे अधिक उपयोग किया, जबकि 34 फीसदी उत्तरदाताओं का मानना है कि सूचना के साधन के रुप सरकारी वेबसाइटों का उपयोग किया। जबकि 5 फीसदी का मानना है उन्होंने रेडियो का उपयोग किया, टेलीविजन को 2 फीसदी उत्तरदाताओं ने सूचना के माध्यम के रुप में चयनित किया है। जबकि 11 फीसदी उत्तरदाताओं ने सूचना के लिए प्रिंट के अन्य माध्यम का उपयोग किया है। उत्तरदाताओं के इस उत्तर से पता चलता कि उन्होंने सबसे अधिक सूचना के लिए सोशल मीडिया का उपयोग किया, जिससे उत्तरदाताओं की मनोस्थिति का भी पता लग रहा है, कि सूचना के लिए उन्हें ग्रांउड रिपोर्टिंग करना बेहद चुनौती पूर्ण है, जिसके कारण उन्हें सोशल मीडिया को ही सर्वाधिक उपयुक्त माध्यम चुना, क्योंकि ग्रांउड की खबरें सोशल मीडिया पर बहुत तेजी से और आसानी से उपलब्ध हो जाती है।

4.6) क्या रिपोर्टिंग के दौरान कोविड पाजिटव होने का खतरा महसूस हुआ?

Did you feel at risk of being covid positive during reporting?

		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
	Yes	78	78.0	78.0	78.0
Valid	NO	22	22.0	22.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

सारणी संख्या -6

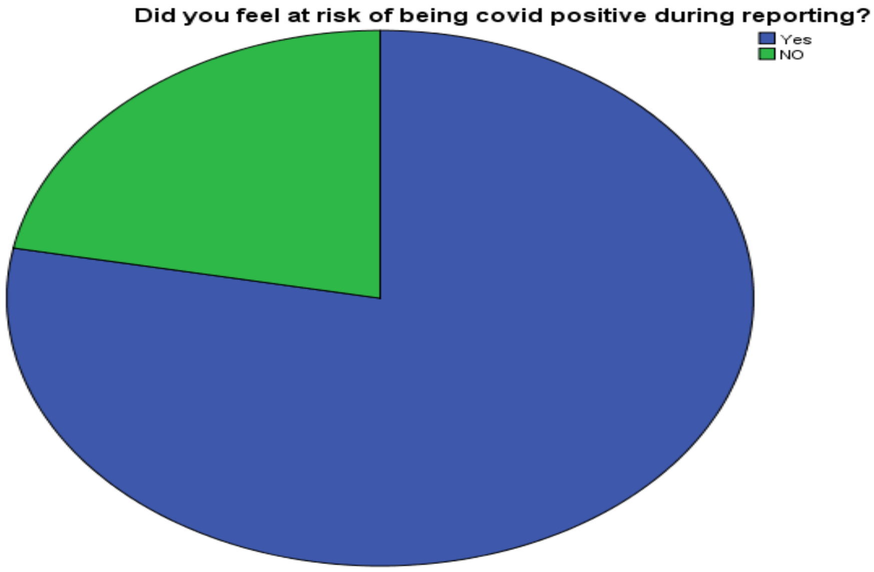

ग्राफ संख्या-6

कोरोना वायरस से उपजी महामारी से मानव सभ्यता प्रभावित हुई, जिससे पत्रकार भी अछूते नहीं है,देश में संपूर्ण व्यापी लाकडाउन और फिर उसके बाद करोडों मजदूर के पलायन के दौरान खबरें को रिपोर्ट करना खतरे से खाली नहीं था, ऐसे समय में पत्रकार को कोविड पाजिटव होने का खतरा अत्यधिक था, जिसकाजवाब इस प्रश्न के तहत उत्तरदाता देते है, 78 फीसदी उत्तरदाताओं ने हां में उत्तर दिया है, कि रिर्पोटिग के दौरान उन्हें कोविड पाजिटिव होने का खतरा महसूस हुआ, जब कि 22 फीसदी उत्तरदाताओं में नहीं में उत्तर दिया है।

4.7) **क्या रिपोर्टिंग के दौरान किसी प्रकार के हमले का सामना करना पड़ा**

Did you face any kind of attack during reporting?

		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
	Yes	21	21.0	21.0	21.0
Valid	No	79	79.0	79.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

सारणी संख्या -7

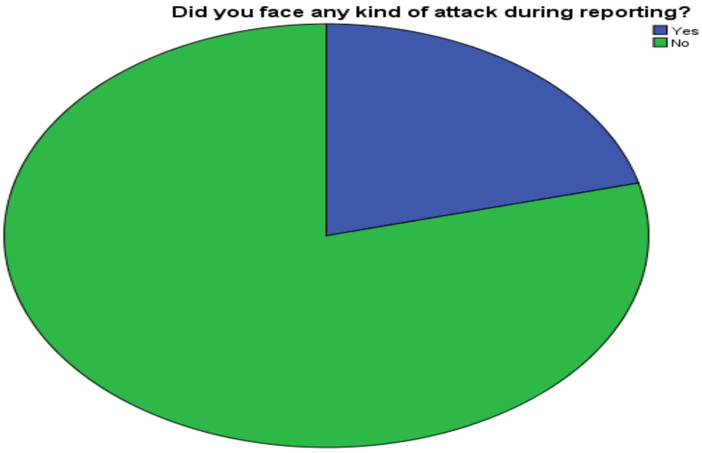

ग्राफ संख्या -7

रिपौंटिंग के दौरान पत्रकारों को अनेक मुसबीतों का सामना करना पड़ा, जिससे तहत पत्रकारों पर हमले और हिंसा भी शामिल है,जिसमें 21 फीसदी उत्तरदाताओं ने हां में उत्तर दिया है कि उन्हें हमले का सामना करना पड़ा, जबकि 79 फीसदी उत्तरदाता नहीं में उत्तर देते है।

4.8) क्या जब आपके साथी पत्रकारों की कोरोना में मृत्यु हुई तब आपने खुद को असुरक्षित महसूस किया?

Did you feel insecure when your fellow journalists died of corona?

		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	Yes	74	74.0	74.0	74.0
	No	26	26.0	26.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

सारणी संख्या -8

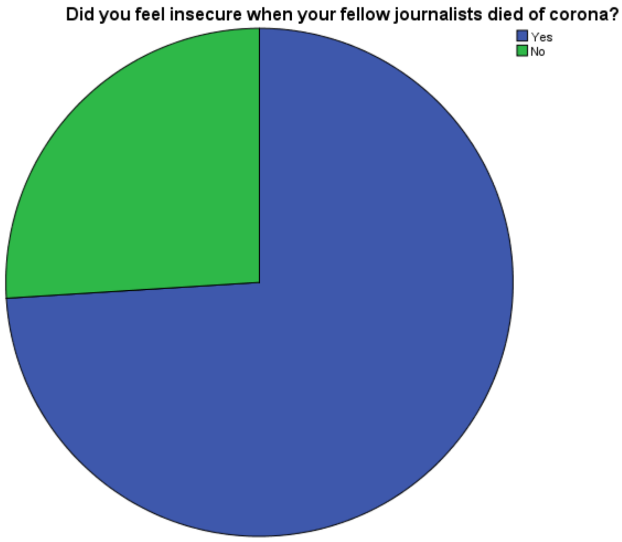

ग्राफ संख्या -8

इस सर्वेक्षण में शामिल 74 फीसदी उत्तरदाताओं ने हां में उत्तर दिया है, कि जब इनके साथी कि कोरोना में मृत्यु हुई तब उन्होंने खुद को असुरक्षित महसूस किया, महामारी के समय तमाम पत्रकारों की मृत्यु हो गई, सूचना के लिए उन्होंने अपना जीवन कुर्बान कर दिया, इसका असर उनके साथियों पर पड़ना स्वाभाविक था, जबकि इसके केवल 26 फीसदी उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिया है, कि साथी पत्रकारों की मृत्यु से उन्होंने खुद को असुरक्षित महसूस नहीं किया है।

4.9) क्या जब कोविड-19 महामारी में साथी पत्रकारों को नौकरी से निकाला जा रहा था तब आपको खुद की नौकरी जाने का खतरा महसूस हुआ?

When your fellow journalists were being taken out of the job during covid-19 pandemic, did you feel the danger of risk of being removed from job?

		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	Yes	60	60.0	60.0	60.0
	No	40	40.0	40.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

सारणी संख्या-9

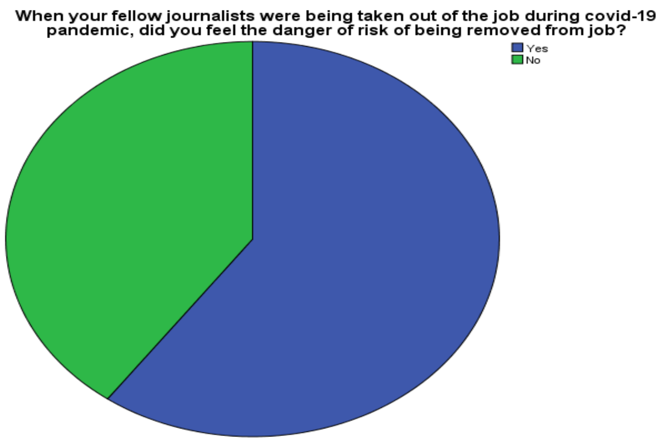

ग्राफ संख्या-9

महामारी के समय पत्रकारों पर संक्रमित होने का और मृत्यु का तो खतरा था ही, मीडिया संस्थानों महामारी के आड़ में पत्रकारों को नौकरी से निकालने का ध्येय बना लिया। लगभग हर संस्थान ने अपने यहां पत्रकारों की छटंनी की।

जिसके तहत 60 फीसदी उत्तरदाताओं ने हां में उत्तर दिया, कि साथी पत्रकरों की नौकरी जाने पर उन्हें खुद की नौकरी जाने का खतरा महसूस हुआ, जबकि 40 फीसदी पत्रकार ने नहीं में उत्तर दिया है। स्वाभाविक रुप से संपादक का नौकरी जाने का खतरा कम था, स्ट्रिंगर, स्थानीय रिपोर्टर सबसे पहले छंटनी के रूप में सामने आए।

4.10) क्या कोविड-19 के दौरान आपके वेतन में कटौती की गयी?

Had your salary get cut during covid-19?

		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	Yes	36	36.0	36.0	36.0
	No	64	64.0	64.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

सारणी संख्या -10

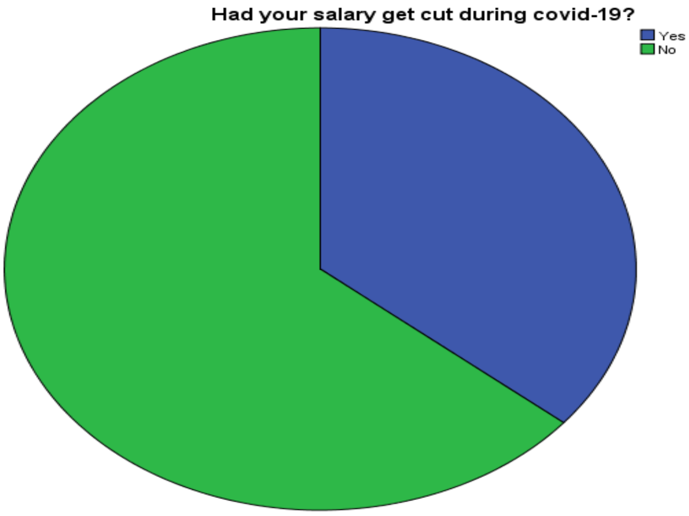

ग्राफ संख्या -10

जब उत्तरदाता से यह प्रश्न पूछा गया कि कोरोना महामारी के दौरान आपकी सैलरी में कटौती की गई ,तो उसके जवाब में 64 फीसदी मतदाता ने नहीं में उत्तरदाता दिया, जबकि 36 फीसदी मतदाता ने हां में उत्तर दिया है, कि कोविड के दौरान सैलरी कम की गई है।

4.11) क्या कोविड-19 से बचाव के लिए आपने वैक्सीन लगवाई?

Did you take the vaccine to save from corona?

		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	Yes	96	96.0	96.0	96.0
	No	4	4.0	4.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

सारणी संख्या -11

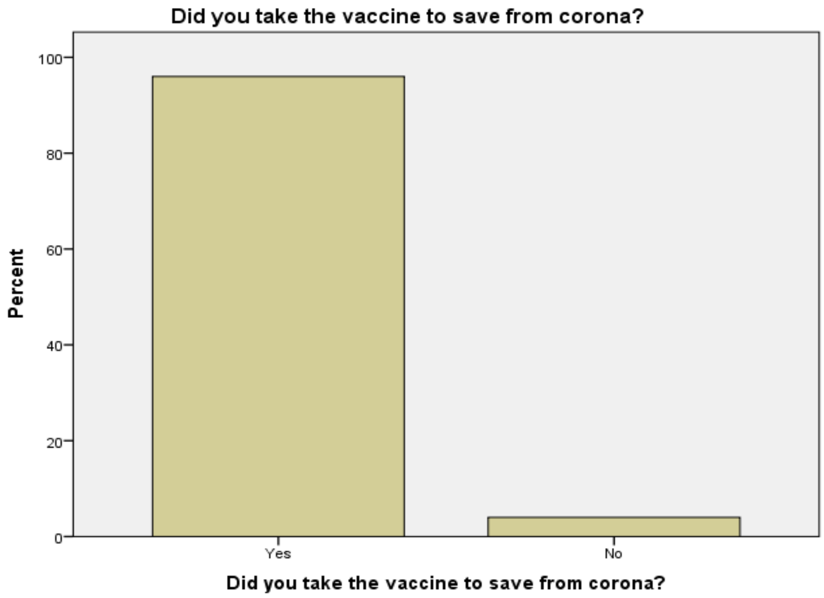

ग्राफ संख्या -11

कोरोना वायरस महामारी ने इतनी तेजी से दुनिया में फैला कि इसके इलाज के कोई दवा तुंरत प्रयोग में नहीं आई। संपूर्ण दुनिया को लगा के वैक्सीन ही इस वायरस से लोगों को बचा सकती है, जिसके तहत पत्रकार जो कि कोरोना वारियर के रुप में ही लड़ रहे थे, इन्होंने इससे बचने के लिए और सूचनाओं का कार्य जारी रखने के लिए वैक्सीन लगवाई। कोविड से बचाव के लिए 96 फीसदी उत्तरदाताओं ने हां में उत्तर दिया है कि उन्होने वैक्सीन लगवाई। मात्र 4 फीसदी पत्रकारों ने नहीं में उत्तर दिया। जिसमें कोविड से बचाव के लिए वैक्सीन की महत्ता को समझा जा सकता है।

4.12) क्या संक्रमित होने पर मीडिया संस्थान ने आपकों आर्थिक सहयोग किया?

Did the media instituting helped you financially when infected?

		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	yes	20	20.0	20.0	20.0
	No	80	80.0	80.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

सारणी संख्या -12

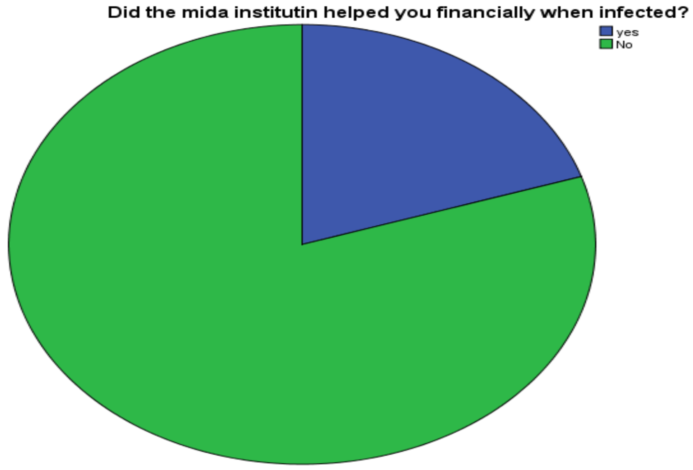

ग्राफ संख्या -12

महामारी के समय जब दुनिया को एक होना चाहिए था, तब असमानाता, असहयोग की खांई और बढ़ गई, जिसके उत्तर इस प्रश्न में भी मिलता है। कोविड संक्रमित होने पर सहयोग की जरूरूत थी लेकिन मीडिया संस्थानों ने सहयोग के इंकार के लिए अपने हाथ खड़े कर दिए, जिसके तहत संक्रमित होने पर मीडिया संस्थान के सहयोग के मामले में 20 फीसदी उत्तरदाता में हां में उत्तर दिया है, जबकि 80 फीसदी उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिया है। इनका मानना है कि इनको किसी प्रकार के आर्थिक सहयोग की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं कराई गई है।

4.13) क्या संक्रमित होने पर आपको मीडिय संस्थान ने वर्क फार्म होम की अनुमित दी?

Did the media institution allow you to work from home when infected?

		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	Yes	86	86.0	86.0	86.0
	No	14	14.0	14.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

सारणी संख्या -13

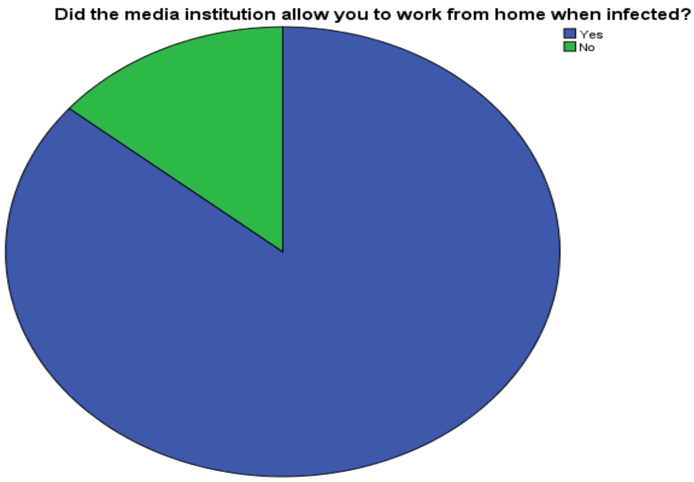

ग्राफ संख्या -13

कोविड संक्रमण के खतरे के अंदेशे को देखते हुए सभी मीडिया संस्थान ने पत्रकारों को वर्कफार्म करने के लिए जिससे संस्थान की इमेज पर किसी तरह का प्रशासनिक दबाव न आए, एक तो सरकारों स्वंय गाडडलाइन जारी कर रखी थी कि 50 फीसदी ज्यादा स्टाफ न बुलाए। इसका असर इस उत्तर में भी दिखता है, जहां 86 फीसदी उत्तरदाताओं ने हां में उत्तर दिया है कि उन्हें वर्कफार्म के अनुमति दी गई, जबकि केवल 14 फीसदी उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिया है। संक्रमित होने पर पत्रकारों को दफ्तर बुलाना बेहद जोखिम भरा कार्य था, मीडिया संस्थानों ने संक्रमित पत्रकारों को वर्कफार्म होम देना ही उचित समझा।

4.14) क्या कोविड संक्रमण से बचने के लिए मीडिया संस्थान ने वैक्शीनेशन कैंप लगवाया?

Did the media institution perform a vaccination camp to avoid covid infection?

		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	Yes	76	76.0	76.0	76.0
	No	24	24.0	24.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

सारणी संख्या -14

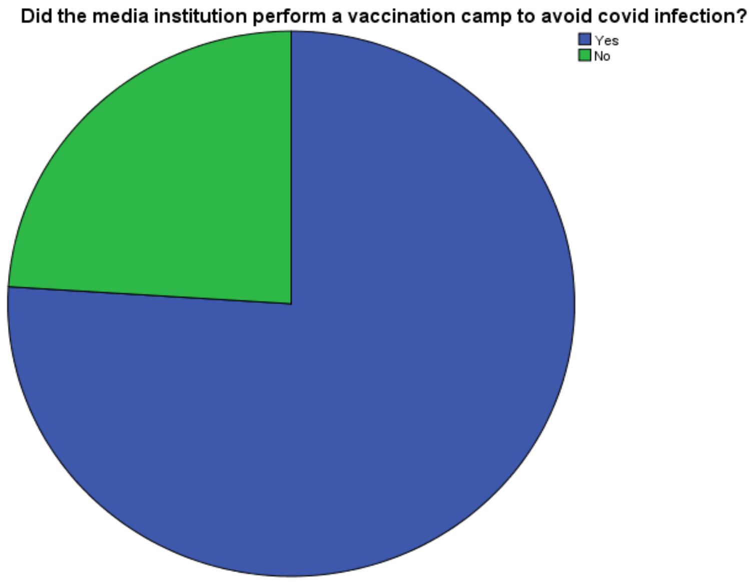

ग्राफ संख्या -14

मीडिया संस्थान कोरोना वायरस से जागरुक और उसके बचाव के लिए अभियान चला रहे थे, कि कैसे और किन चीजों को अपना के इस वायरस के बचा जा सकता है, जिसके तहत में बार-बार सैनिटाइजर से हाथ धोने से लेकर, मास्क के लगाने को प्रचारित कर रहे थे और कोरोना से बचाव के लिए वैक्सीन को सर्वाधिक उपयुक्त बता रहे है, जिससे उनकी इस प्रतिबद्धता का असर उनके संस्थानों में दिखता है। जिसके तहत 76 फीसदी उत्तरदाताओं ने हां में उत्तर दिया है कि उनके मीडिया संस्थान ने वैक्सीन के कैंप लगवाए, जबकि 24 फीसदी उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिया है कि उनके संस्थान ने कोरोना वायरस के बचाव के लिए वैक्सीनेशन कैंप नहीं लगवाए।

4.15) क्या कोविड संक्रमित होने पर आपके इलाज का खर्च मीडिया संस्थान ने उठाया?

Did the media institution incur your treatment expenses when infected?

		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	Yes	6	6.0	6.0	6.0
	No	94	94.0	94.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

सारणी संख्या -15

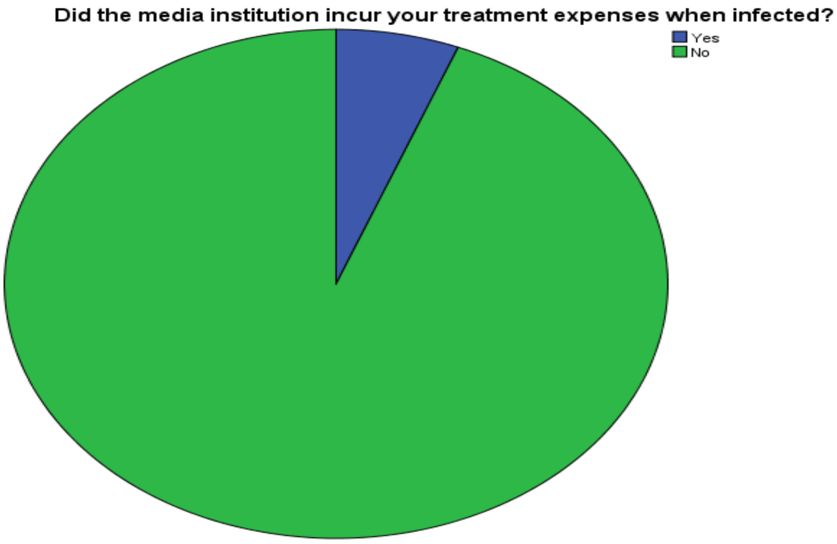

ग्राफ संख्या -15

कोरोना वायरस से उपजी महामारी ने संपूर्ण पूंजीवादी व्यवस्था को पैसे कमाने के और असमानता बढ़ाने के विभिन्न अवसर दिए, क्योंकि महामारी के समय लोगं आंदोलन, वेतन के लेकर असमतियों जैसे मुद्दे पर रुक जाते है। सरकार और व्यवस्था ने उन्हें इससे रोकने के लिए कई प्रतिबंध लगा देती है, जिसका असर इस उत्तर में दिखता है, जिसके तहत केवल 6 फीसदी उत्तरदाताओं ने हां में उत्तर दिया है, कि मीडिया संस्थान संक्रमित होने पर इलाज का खर्च उठाया। जबकि 96 फीसदी उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिया है। उनका मानना संक्रमित होने पर उनके इलाज का खर्च मीडिया संस्थान ने नहीं उठाया, ऐसे समय में जब पत्रकार अपने संस्थान के लिए सूचनाओं के लिए ही जान जोखिम में डाल रहा है, मुसीबत आने पर मीडिया संस्थान उनसे किनारा कर ले रहे है।

4.16) क्या कोरोना के इलाज के लिए मीडिया संस्थान ने पत्रकारों का स्वास्थ्य बीमा करवाया?

Did the media institution get journalists health insurance for the treatment of corona?

		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	Yes	21	21.0	21.0	21.0
	No	79	79.0	79.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

सारणी संख्या-16

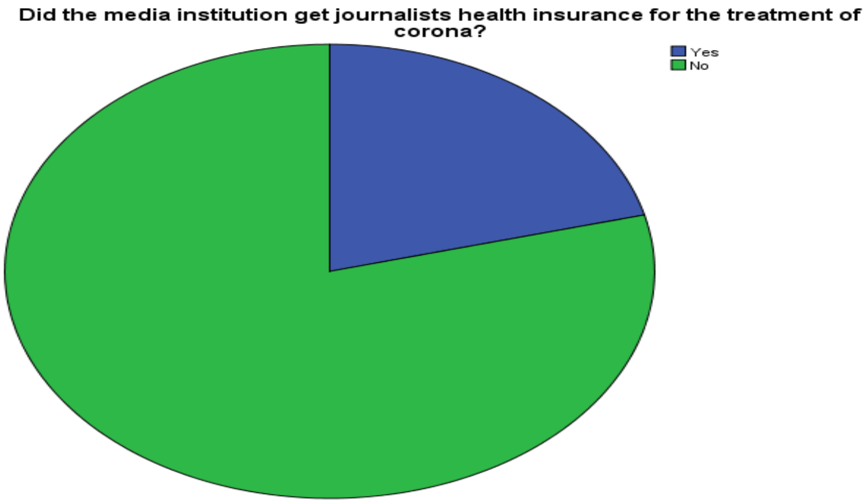

ग्राफ संख्या-16

महामारी ने संपूर्ण व्यवस्था को एक तरीके से आईना दिखाया है, मीडिया संस्थान भी उसी में शामिल है। मीडिया संस्थान पत्रकारों से काम तो ले रहे है, न तो नियमित रूप से मानक के अनुसार वेतन दे रहे है, न ही बीमा। इसका एक उदाहरण कोरोना महामारी भी है। पत्रकार संस्थान के लिए और उसके नाम के लिए अपनी जान जोखिम में डालकर खबर ला रहा है, लेकिन संस्थान को इससे कोई मतलब नहीं कि पत्रकारों की मूलभूत सुविधाएं प्राप्त है कि नहीं। महामारी के समय स्वास्थ्य बीमा के मामले में 79 फीसदी उत्तरदाताओं नें नहीं में उत्तर दिया है कि उन्हें किसी प्रकार का स्वास्थ्य बीमा नहीं कराया गया, जबकि 21 फीसदी उत्तरदताओं ने हां में उत्तर दिया है, कि उन्हें स्वास्थ्य बीमा करवाया गया।

निष्कर्ष - कोरोना वायरस महामारी संपूर्ण भारतीय व्यव्स्था को प्रभावित किया है, प्रिंट पत्रकार और मीडिया संस्थान भी इससे अछूते नहीं है। कोरोना के दौरान पत्रकारों को अपनी कार्यप्रणाली बदलनी पड़ी। मीडिया संस्थान इस कार्यप्रणाली और महामारी का लाभ उठाकर पत्रकारों को उनकी नौकरी से निकालने का काम किया है, ऐसा विश्लेषण के दौरान पता चलता है। सभी मीडिया संस्थान पत्रकारों को संक्रमित होने पर कोई भी आर्थिक सहयोग नहीं किया है और न ही संक्रमित पत्रकार को इलाज के खर्च उठाया है। इससे यह पता चलता जो पत्रकार महामारी के दौरान दूसरे के इलाज एवं स्वास्थ्य सेवाओं के लिए खबर कर रहा है, उसकी खुद की खबर स्वंय उसका मीडिया संस्थान नहीं ले रहा है। भारतीय व्यव्सथा में पत्रकारिता को जो मूल आधार है कोरोना महामारी ने उसके एक किनारे पर छोड़ दिया है, मीडिया संस्थानों ने पत्रकरों की मदद की बजाय अपने कारोबार को बचाने पर ध्यान दिया है, जबकि हकीकत ये जब पत्रकार बचेगा तब ही कारोबार बचेगा और तब ही पत्रकारिता का कोई अस्तित्व रहेगा। अंतिम अध्याय में पत्रकार की मूलभूत संरचना पर चर्चा की गई है, निष्कर्ष एवं सुझाव दिए गए है।

अध्याय- पंचम

निष्कर्ष एंव सुझाव

5.1) सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्ष

ये सर्वेक्षण मुख्यत लखनऊ के प्रिंट पत्रकारों पर किया गया था, जिसमें मुख्यत हिंदी के चार सबसे ज्यादा प्रसारित होने वाले समाचार पत्रों (दैनिक जागरण, हिंदुस्तान, अमर उजाला, नवभारत टाइम्स) का चयन किया गया था, जिसके तहत शोधार्थी ने प्रश्नावली के माध्यम से पत्रकारों पर कोरोना वायरस से उपजी महामारी के प्रभाव जानने का प्रयास किया है। प्रश्न मुख्यत पत्रकार पर कोरोना के प्रभाव और मीडिया संस्थान की पत्रकारों की सहायता पर केंद्रित है।

कोरोना वायरस के सर्वेक्षण पद्धति के उपयोग करने के पश्चात शोध -प्रश्नों के निम्नलिखित उत्तर मिलते है:

5.1.1) कोविड -19 ने प्रिंट मीडिया पत्रकारों की कार्य प्रणाली को किस प्रकार प्रभावित कियाहै ?

पत्रकारों की कार्य प्रणाली पर प्रभाव-

जब उत्तरदाताओं से यह पूछा गया कि कोरोना महामारी ने किस प्रकार उनकी कार्य प्रणाली और सूचना संग्रहण को प्रभावित किया है, 79 फीसदी उत्तरदाताओं का मानना है कि कोरोना के कारण उनकी कार्य प्रणाली और सूचना संग्रहण का कार्य प्रभावित हुआ है, केवल 21 फीसदी उत्तरदाताओं का कहना है कि कोरोना के कारण उन्हें सूचना संग्रहण में कोई दिक्कत नहीं आई है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कोरोना के कारण पत्रकारों की कार्यप्रणाली बाधित हो गई। विशेषकर महामारी ने रिपोर्टिंग कर रहे पत्रकरों के लिए मुसीबत खडी कर दी। कोरोना के समय न्यूज रुम में बदलाव में बदलाव किए गए, पत्रकरों के कार्यों के घंटे में बदलाव किया गया। पीपीई किट, मास्क के साथ रिपोर्टिंग करना पत्रकरों के लिए न्यू नार्मल है।

कोविड वायरस और सूचनाओं के लिए उपयोग किए गए साधन

उत्तरदाताओं ने कोरोना वायरस के समय सबसे ज्यादा किन साधनों का उपयोग किया गया, इस पर 48 फीसदी उत्तरदातों का मानना है कि उन्होंने सोशल मीडिया का उपयोग का सर्वाधिक किया है, जबकि 34 फीसदी का मानना है कि सूचना के टूल के रूप में सरकारी वेबसाइट का प्रयोग किया। केवल 5 फीसदी लोगों ने रेडियों और मात्र 2 फीसदी लोगों ने टेलीविजन माध्यम को सूचना के माध्यम के रुप में चुना है। जबकि 11 फीसदी उत्तरदाताओं ने प्रिंट के अन्य माध्यमों को सूचना के साधन के रुप में चयनित किया है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कोरोना के समय सूचनाओं के लिए साधन के रुम में सोशल मीडिया का उपयोग सबसे अधिक किया गया है, पत्रकारों को कोरोना के समय सूचना एकत्र करने में संकट आ रहे थे, जिसके कारण पत्रकारों ने सोशल मीडिया का उपयोग सबसे अधिक किया है। इसके अलावा सरकारी वेबसाइट का उपयोग सबसे अधिक किया गया है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि तथ्य परक आकड़ों के लिए पत्रकारों ने सरकारी वेबसाइट का उपयोग अधिक किया है।

5.1.2) कोविड-19 के कारण प्रिंट मीडिया पत्रकारों के जीवन में किस प्रकार असुरक्षा की भावना आई है?

कोविड-19 के दौरान पत्रकार और असुरक्षा

उत्तरदाताओं से जब यह प्रश्न किया गया जब आपके साथी पत्रकारों की की कोरोना में मृत्यु हुई तब आपने खुद को असुरक्षित महसूस किया या नहीं। जिसके जवाब में 74 फीसदी उत्तरदाताओं का मानना है कि उन्होंने खुद को असुरक्षित महसूस किया, केवल 26 फीसदी उत्तरदाताओं का मानना है कि उन्होंने साथी पत्रकारों की मृत्यु पर खुद को असुरक्षित महसूस नहीं किया। कोरोना संपूर्ण व्यवस्था को लेकर संकट आया, जिसमें पत्रकार चूंकि हमेशा सूचनाओं के लिए इधर-अधर जाता है और जनता और प्रतिष्ठित लोगों से बातचीत करता है, जिससे उसके कोरोना होना का खतरा अधिक रहता है, जिससे पत्रकार के कोरोना का खतरा बढ़ जाता है, पत्रकारों के निष्कर्ष भी यही दर्शाते है।

नौकरी जाने का खतरा और कोरोना महामारी

उत्तरतादाओं से जब यह प्रश्न किया गया जब आपके साथी पत्रकारों को नौकरी से निकाली जा रहा था, तब आपने खुद को असुरक्षित महसूस किया, जिसके जवाब में 60 फीसदी उत्तरदाताओं का मानना है कि उन्हें नौकरी जाने का खतरा महसूस हुआ, जबकि 40 फीसदी उत्तरदाताओं का कहना है कि

उन्हें नौकरी जाने का खतरा महसूस नहीं हुआ। कोरोना के समय लगभग सभी संस्थानों ने अपने पत्रकारों को नौकरी से निकाला और पत्रकारों के वेतन में कटौती की एवं विशेषकर स्ट्रिंगर को तो पूरी तरह बेरोजगार हो गए। घुंमतू पत्रकार तो कोरोना के समय पूरी तरह समाप्त ही गए। मुख्यत बडी संस्थाओं ने अपने यहां के पत्रकारों को अपने यहां से नहीं निकाला है। आंकड़े से प्राप्त निष्कर्ष ये दर्शाते है।

5.1.3) महामारी के इस दौर में पत्रकारों ने अपने जीवन और आजीविका के बीच किस प्रकार संतुलन स्थापित किया ?

कोविड से बचाव और वैक्सीन

96 फीसदी उत्तरदातताओं का मानना है कोरोना से बचाव के लिए उन्होंने वैक्सीन लगवाई, मात्र 4 फीसदी उत्तरदाताओं का मानना है कि उन्होने वैक्सीन नहीं लगवाई, जिससे वायरस से बचाव के और बेहतर जीवन के लिए वैक्सीन की महत्ता को समझा जा सकता है। कोरोना के समय पत्रकारों ने संक्रमित होने से बचने के लिए एवं संक्रमण होने पर कोविड के तीव्रता का खतरा कम हो, जिसके लिए उन्होंने वैक्सीन लगवाया। वैक्सीन लगावने से ही पत्रकार अपने कार्य को निरंतरता से कर सकते है और उनका जीवन भी संतुलित रहता है।

5.1.4)कोविड-19 से संक्रमित पत्रकारों के इलाज के लिए मीडिया संस्थान ने किस प्रकार सहायता उपलब्ध करायी है ?

संक्रमण और आर्थिक सहयोग

उत्तरदाताओं से जब यह प्रश्न पूछा गया कि संक्रमित होने पर मीडिया संस्थान ने आपकों आर्थिक सहयोग किया, जिसके जवाब में 80 फीसदी उत्तरदाताओं का मानना है कि मीडिया संस्थानों न उन्हें किस प्रकार का आर्थिक सहयोग नहीं किया है, केवल 20 फीसदी उत्तरदाता इससे सहमत है कि मीडिया संस्थान द्वारा उन्हें आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई गई। महामारी के समय मीडिया संस्थान ने पत्रकारों को एक तरीके आत्मनिर्भर ही कर दिया। लगभग सभी मीडिया संस्थानों ने अपने यहीं संक्रमित पत्रकारों को संक्रमित होने पर किसी प्रकार की आर्थिक सहायता उपलब्ध नहीं कराई है, जबकि ये पत्रकार संस्थान की रीढ़

होते है, संस्थान की सूचना का आधार होते है, लेकिन फिर भी मीडिया संस्थान ने किसी भी प्रकार की आर्थिक सहायता उपलब्ध नहीं कराई है।

कोविड का संक्रमण और पत्रकारों को वर्कफार्म होम

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि संक्रमित होने पर मीडिया संस्थान ने वर्क फार्म होम की अनुमति दी, जिसके जवाब में 86 फीसदी उत्तरदाताओं का मानना है कि उन्हें वर्कफार्म होम दिया गया, जबकि केवल 14 फीसदी का मानना है कि उन्हें वर्कफार्म होम नहीं दिया गया है। कोविड के समय केंद्र सराकार ने सभी दफ्तरों के लिए 50 फीसदी की उपस्थिति को ही अनुमित दी और इसीलिए भी मीडिया संस्थानों ने अपने यहां पत्रकारों को नहीं बुलाया। इसके इतर भी मीडिया संस्थानों ने पत्रकारों को संस्थान में नहीं बुलाया क्यों कि सोशल डिस्टेशिंग के साथ और अन्य तरीके की सुविधाएं मीडिया संस्थानों के पास नहीं थी। इन सब से बचने के लिए मीडिया संस्थान ने वर्क फार्म देना ही उचित समझा। पत्रकारों को कार्य के लिए दिया गया वर्क फार्म यही दर्शाता है।

संक्रमण और वैक्सीनेशन कैंप

जब उत्तरदादाओं से यह पूछा गया कि संक्रण से बचने के लिए मीडिया संस्थानों ने वैकशीनेशन कैंप लगवाया, जिसके जवाब में 76 फीसदी उत्तरदाताओं का मानना है कि उनके मीडिया संस्थान में कोरोना वायरस से बचने के लिए वैक्शीनेशन कैंप लगवाया गया, जबकि 24 फीसदी का मानना है कि उनके संस्थान में संक्रण से बचाव के लिए वैक्सीनेश कैंप नहीं लगवाया गया है।

कोरोना से संक्रमित पत्रकार और मीडिया संस्थानों दवारा इलाज का खर्च

उत्तरदाताओं से जब इस संबध में प्रश्न किया गया कि कोविड संक्रमित होने पर आपके इलाज का खर्च मीडिया संस्थान ने उठाया, जिस पर 94 फीसदी उत्तरदातओं का मानना है कि उनके इलाज का खर्च मीडिया संस्थान नहीं उठाया है, केवल 6 फीसदी उत्तरदाताओं का मानना है कि उनके इलाज का खर्च मीडिया संस्थान ने उठाया है। कोविड के समय पत्रकारों के इलाज के खर्च न के बराबर मीडिया संस्थान ने उठाया है, केवल प्रमुख पत्रकार संपादक और अन्य प्रमुख लोगों का खर्च ही मीडिया संस्थान ने उठाया है, प्रस्तुत आंकड़ों से प्राप्त निष्कर्ष ये दिखलाते है कि पत्रकारों को मीडिया संस्थान ने कोरोना के समय

संक्रमित होने पर इलाज और अन्य किसी प्रकार की सुविधा नहीं दी है।

पत्रकारों का स्वास्थ्य बीमा और मीडिया संस्थान

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न पूछा गया कि कोरोना के इलाज के लिए मीडिया संस्थान ने स्वास्थ्य बीमा करवाया ,जिसके जवाब में 79 फीसदी उत्तरदाताओं नें नहीं में जवाब में दिया,जबकि केवल 21 फीसदी उत्तरदाताओं का मानना है कि उन्हें स्वास्थ्य बीमा करवाया गया है। स्वास्थ्य बीमा के मामले में पत्रकारों को न के बराबर स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराया गया है। महामारी के समय जबकि पत्रकरों को जान-माल का खतरा सबसे अधिक था,पत्रकरों को स्वास्थ्य बीमा न देने यह दिखलाता है कि मीडिया संस्थानों को अपने यहां कार्य करने वाले पत्रकरों की कोई फिक्र नहीं है।

5.2) निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि कोरोना महामारी का यह खतरा पत्रकारिता और पत्रकारों पर लंबे समय तक रहेगा। कोविड की अनिश्चिता ने पूरी मीडिया इंडस्ट्री को रातों- रात बदल कर रख दिया। जिसके तहत पत्रकारों को एक नई तरह का जीवन और कार्यप्रणाली को अपनाना पड़ा है। जिसमें पत्रकार के व्यक्तिगत जीवन में कई परेशानियों का भी सामना करना पड़ा है। पत्रकारों को नई उपल्ध पीपीई किट और नए औजारों के साथ किस प्रकार काम करना है, यह अलग चिंता का सबब है, पत्रकार के लिए चुनौती वर्कफार्म होम करते हुए तथ्य एकत्रित करने की और विश्वसनीय सोर्स से सूचना एकत्रित करने की भी है। कोरोना के कारण पत्रकारों को बड़ी चुनौती आनलाइन सूचना की बाढ़ में सही सूचनाओं को जनता तक पहुंचाने की है, जिसमें खासकर आनलाईन में कोई गेटकीपिंग न होने कारण गलत खबर को भी रोका जाना बड़ा मुश्किल काम है। जिसके कारण पत्रकारों की विश्वसनीयता खतरे में आ गई है। पत्रकारों के लिए सरकारी दबाव एक मुद्दा पहले से ही रहा है, महामारी के कारण सरकारों को इसमें और कानून रुपी हथियार मिल गए, जिसके तहत मीडिया की स्वतंत्रता बाधित हो गई, लाकडाउन के समय पत्रकारों को तमाम तरह क प्रतिबंधों से दो-चार होना पड़ा। शोध के विश्लेषण से यह पता चलता है कि सरकार के इतर मीडया संस्थानों ने पत्रकारों के लिए और मुसीबत खड़ी की। लेकिन इसके उलट

शोध में यह भी पता चलता है कि कोरोना के कारण पत्रकारों ने साधन के रुप में सोशल मीडिया का इस्तेमाल अधिक किया है। एक ओर महामारी ने पत्रकारों के लिए रास्ते बंद किए है, लेकिन आनलाईन माध्यम ने इसमें आशा की एक किरण भी दिखी है, नई पत्रकारिता और पत्रकारों के लिए सूचना के साधन के रूप में यह माध्यम उभकर सामने आए है। कोरोना पत्रकारों के लिए चुनौतियों लेकर आया, लेकिन कई तरीकों के अवसर भी लेकर आया है।

पत्रकार जो कि सूचना के केंद्र का आधार होता है, कोरोना वायरस से उपजी महामारी ने सूचना पर तो आघात किया कि बल्कि इसके उल्ट उसकी विश्वसनीयता को प्रभावित किया है। कोरोना महामारी का अचानक आना न्यूज रूप और उपकरणों से तेजी से बलना पत्रकारों के लिए बेहद मुश्किल भला कार्य रहा। मीडिया संस्थनों में दशकों से चली आ रही पुरानी कार्यप्रणाली को पूरी तरह बदलना पड़ा। रिपोर्टर जो सूचना के लिए फील्ड रिर्पोटिंग करता था, वह एक तरीके से खत्म हो गई, घुमंतू रिपोर्टर खत्म हो गए, पत्रकारों को सूचनाओं के लिए सोशल मीडिया और सरकारी वेबसाईट पर निर्भर होना पडा। कोविड के कारण तमाम पत्रकारों को अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा, कई पत्रकारों की कोरोना में जान चली गई। इससे उनके काम की कठिनाई को समझा जा सकता है, किसी भी मीडिया संस्थान ने कोरोना संक्रमित पत्रकार को लगभग न के बराबर आर्थिक सहयोग किया। लेकिन वही एक ओर संस्थान में पत्रकार संक्रमित न हो जाए, लगभग सभी मीडिया संस्थानों ने पत्रकारों को वर्कफार्म होम की अनुमित दी। विश्लेषण के माध्यम से यह पता चलता है किसी भी संस्थान पत्रकार के संक्रमित होने पर उसके इलाज का खर्च नहीं उठाया है, मीडिया संस्थानों ने संक्रमित पत्रकारों और बीमा की संख्या भी नगण्य है, इससे पत्रकार की विवशता को समझा जा सकता है। पत्रकार जो की चौथे खंभे का आधार होता है, वायरस से उपजी महामारी ने उसे एक अंधकार में ढकेल दिया है। महामारी का फायदा सभी मीडिया संस्थानों ने इस प्रकार उठाया कि पत्रकारों से अंधेरे से निकालने के बजाय एक और बड़ी अंधेरी गुफा में छोड़ दिया है। जबकि सूचना का मूल आधार पत्रकार होता है, पत्रकार जब सुरक्षित नहीं रहेगा, पत्रकारिता के पेशे पर हमेशा अविश्वास के बादल मंडराते रहेगें।

5.3) सुझाव

सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग करने के पश्चात शोधार्थी को कुछ निष्कर्ष प्राप्त होते है, जिसके आधार पर कुछ सुझाव निम्नलिखित है :

5.3.1) संस्थान द्वारा महामारी संबधित रिर्पोटिगं तकनीक को विकसित करना

कोरोना महामारी अपने आप में एक वैश्विक समस्या है, पत्रकरों ने ऐसी समस्या न पहले देखी थी, न ऐसी घटनाओं को कवर करने का उनका अनुभव था। पत्रकरों को ऐसी ट्रेनिंग दी जानी चाहिएं, कि वो महामारी से संबधित रिर्पोटिंग किस तरह करें। पत्रकारों को ये कौशल दिया जाना चाहिए कि उन्हें महामारी के समय कैसी और किन तरह तकनीक और सुरक्षा को ध्यान में रखकर रिपोर्टिंग करनी है।

5.3.2) पत्रकारों को स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराना ।

शोध में यह पता चला है कि लगभग सभी मीडिया संस्थान पत्रकारों को स्वास्थ्य बीमा नहीं देते है, जब कि खबर का मूल आधार पत्रकार होता है, पत्रकार के जीवन के जिम्मेदारी मीडिया संस्थान की बनती है, पत्रकार के न रहने पर उसके परिवार को आर्थिक संरक्षण देना मीडिया संस्थान का नैतिक कर्तव्य है। महामारी के समय ये जिम्मेदारी दोगुनी हो जाती है, इसलिए पत्रकारों को एक स्वास्थ्य बीमा करवाना चाहिए, महामारी के समय पत्रकारों के संक्रमित होने पर मीडिया संस्थानों को उनको बीमारी का खर्च भी उठाना चाहिए, आखिर पत्रकारों समाचार -पत्र के लिए काम करते हुए अपना पूरा जीवन देता है, मीडिया संस्थानों को उसके स्वास्थ्य और उसके परिवार के आर्थिक संरक्षण तो करना देना चाहिए।

5.3.3) पत्रकारों को आर्थिक संरक्षण देना।

मीडिया हाउस और उनके मालिकों को महामारी के समय सुविधाँए उपलब्ध करानी चाहिए। सरकार को भी मीडिया की महत्ता को रेखांकित करना चाहिए, यह विज्ञापन चलाना चाहिए कि महामारी

के समय पत्रकार कितना महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। सरकार को यह भी रेखांकित करना चाहिए कि मीडिया और पत्रकारों को आर्थिक संरक्षण प्राप्त हो।

5.3.4) महामारी संबधित पीपीई किट आदि उपलब्ध कराना।

पत्रकार समाज में सरकार और तंत्र की निगारनी का रक्षक होता है, ऐसे में पत्रकार के जीवन की जिम्मेदारी समाज और मीडिया संस्थान सभी की बनती है। पत्रकार किस प्रकार सुरक्षित रहकर सूचना देता रहे, यह जिम्मेदारी सर्वसमाज की बनती है। जिसके लिए खासकर महामारी के समय पत्रकरों के लिए फंड जैसा कुछ होना चाहिए, जिससे पत्रकार टेस्टिंग पीपीई किट खरीद सके। जिससे पत्रकार का जीवन सुरक्षित रहेगा और वो महामारी के समय में भी असुरक्षित महसूस नहीं करेगा। जिससे यह होगा महामारी में जब पत्रकार सुरक्षित होकर सूचना देगा, तब संपूर्ण पत्रकारिता और समाज इससे लाभन्वित होगें।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

1. चौधरी, बि.(2020). कोविड-19 षड़यंत्र से समाधान तक. डांयमड बुक्स

2. सिंह, एस. (2020). कोविड-19 वैश्विक महामारी. प्रभात एग्जाम

3. सत्यार्थी, के. (2021). कोविड-19 सभ्यता का संकट और सामधान. प्रभात पेपरबैक्स

4. ठाकुर, आर. (2021). कोरोना के बाद दुनिया कैसी होगी?.आईसेक्ट पब्लिकेशन

5. नारायण, बी. (2021). महामारी का मानस और रविदास की निरीश्वरता. राजकमल प्रकाशन

6. धूमकेतु, जे. ((2020). कोरोना काल के विमर्श.राहुल सांकृत्यान सृजन पीठ

7. कापड़ी, वी. (2021). कोरोना काल में एक असम्भव सफर. (सार्थक).राजकमल प्रकाशन

8. तिवारी,ए.गुप्ता,ए.(2021).उल्टी गिनती(मंदी और महामारी की दोहरी मार से कैसे उबरेगा भारत?).सार्थक(राजकमल प्रकाशन)

9. सहाय, एस.(2018). नवसंचार के जनाचार. अक्षर प्रकाशन

10. पुरी, ए. (2021)कोविड का लंबा साया. इंडिया टुडे

11. चौधरी, के. (2018). प्रिंट मीडिया का अस्तित्व कठिन है मगर...द पालिसी टाइम्स .http://the policytimes. comexistence- of-print-media-path-is- difficult/

12) असीम, एम. (2021) . आपदा में अवसर पर किसके लिए?. *समयांतर (*अंक-10).

13) प्रसाद, आर. (2021) . कोरोना के दौर में दुनिया भर में मीडिया पर कसत सरकारों का शिंकजा . बीबीसी हिंदी ,

14) प्रधान, ए. (2020). स्वास्थ्य और संकट संचार के क्षेत्र में गंभीर शोध की जरूरत . संचार माध्यम .

15) प्रधान, ए. (2020). आंशका और अनिश्चितता के बीच वर्तमान और भविष्य की गुत्थियां.अभिनव कदम

16) श्रीवास्तव, ए. (2021) बीते दो हफ्ते में कोरोना के हाथों मारे गए सो बेनाम पत्रकारों को क्या आप जानते है? . जनपथ

17) कमलेश. (2020). कोरोना संकट के बीच पत्रकारों पर मीडिया हाउस गिरा रहे है गाज.बीबीसी हिंदी

18) कृष्णकांत. (2021). कोरोना काल में पत्रकार जान बचाएं या नौकरी ? द वायर

19) असीम, एम. (2021).जनता की कीमत पर पूंजीपतियों का लाभ. समंयतार ,पृष्ठ-15-18

20) लुप्टन, डी. (2020) कोरोना महामारी में डिजिटल स्वास्थ्य पर समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण.जन मीडिया.

21) सिन्हा, पी. (2020). कोविड अर्थशास्त्र,पत्रिका.

22) आचार्जी, एस. (2021). थोड़े को बहुत कम ही समझें,इंडिया टुडे.

23) शैलेश. (2021) क्या स्वास्थ्य हमारे लिए अब भी प्राथमिकता नहीं है ?.समयांतर ,

24) श्रीवास्तव, ए. (2021). पक्षकारिता :आज मर रहे पत्रकारों को बचाइए, उम्मीद बची तो कल पत्रकारिता भी बच जाएगी.न्यूजलांउड्री

25) सिंह, एस. (2021). महामारी के दौर का साहित्य और साहित्याकार.जनपथ-पृष्ठ-49-51

26) पांडे, आर. (2021).कोरोना काल,दुनिया और भारत और मीडिया की स्वतंत्रता .द वायर[1]रस्तोग

27) शर्मा, एस. (2021). सर्वव्यापी महामारी कोविड-19:राज्य बनाम समाज.जनपथ

28) NFID, (n.d.). Cornaviruses.http://www.nfid.org

29) WEBMD. (n.d.) variants of coronaviruses. http://www.webmd.com.

30) Virginia Department of health. (2/622).variants of covid-19.http://www.vdh.virginia.gov.

31) पांडे, के. (जनवरी,2022). महामारी के इतिहास में दर्ज .डाउन टू अर्थ .पृष्ठ सं-18-19

32) Katella,k (December,20,2021).omicron,Delta,alpha,andmore:whtatot know about the coronavirus variants.http://ww.yalemedicine.org/news/covid-19varianrs-of concern-omicron

33) पांडे, के.देओल.टी. (जनवरी,2022). नया खतरा.डाउन टू अर्थ

34) आचार्जी, एस. (जून,3,2021). लांग कोविड का लंबा साया.इंडिया टुडे.पृष्ठ सं-24-28

35) कौर, आर. (2022).अंतहीन मर्ज .डाउन टू अर्थ. पृष्ठ सं-23-29

36) इंडियन एक्सप्रेस (मई,7,2020) . महामारी रोग अधिनियम.http://www.indianexpress.com

37) द हिंदू (सितंबर,23,2020). आवश्यक वस्तु संशोधन अधिनियम,2020.http://the hindu.com.

38) उजाला,अमर.(नवबंर,19,2013).भारतीयटेलीग्राफअधिनियम.http://www.amarujala.com/news archives/other-archives/the -indian-telegraph-act-1885

39) शर्मा,एस.(2021).सर्वव्यापी महमारी कोविड-19 राज्य बनाम समाज.जनपथ .पृष्ठ सं-13-14

40) Radcliffe,d.(sep 2020) the impact of covid-19 on journalism in emerging Econmies and the Global Soutth.ThomsonRecutersfoundation.http://ssrn.com/abstract=3796666

41) श्रीवास्तव, ए.(सितंबर,2021).पक्षकारिता आज मर रहे पत्रकारो को बचाइए, उम्मीद बची तो कल पत्रकारिता भी बच जाएगी, न्यूजलांउड्री.

42) आर. (2021) कोरोना काल, दुनिया और भारत और मीडिया की स्वतंत्रता.द वायर,-http://www.the wire.com

43) Who(n.d.). mental health and covid-19. https://who/teams/mental-health-and-substance-use/mental -health-and-covid-19

44) सक्सेना, वि. (मई,2021). कोविड-19 का भारतीय राषट्रीय प्रिंट मीडया पर प्रभाव.आईजेआरएर.https://www.ikrar.org

45) सक्सेना, वि. (मई,2021).कोविड-19 का भारतीय राषट्रीय प्रिंट मीडया पर प्रभाव.आईजेआरएर.https://www.ikr

46) Perreault,m.(2021).journalists on covid-19 journalism:communication Ecology of pandedmicreprortingh.sage pub.com

परिशिष्ट

प्रश्नावली

कोविड-19 का प्रिंट मीडिया के पत्रकारों पर प्रभाव

(लखनऊ के विशेष संदर्भ में अध्ययन)

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करूणा
ESTABLISHED 1996

(नोट-इसमें दी गई सूचना गुप्त रखी जाएगी तथा सिर्फ शोध हेतु उपयोग किया जाएगा।)

जनसंचार पत्रकारिता विषय में एम.फिल हेतु प्रस्तुत प्रश्नावली

शोध निर्देशक

डॉ. लोकनाथ (
असिस्टेंट प्रोफेसर)

असिस्टेंट प्रोफेसर

शोधार्थी

श्याम प्रताप सिंह यादव

जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग

बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ

निर्देश- सही उत्तर के सामने () चिन्ह अंकित कर तथा रिक्त स्थान पर ही उत्तर अंकित करें।)

1.1 संस्था का नाम -
1.2 उत्तरदाता का नाम -
1.3 आयु -
1.4 वर्तमान पता -
1.5 स्थायी पता -
1.6 निजी वार्षिक आय -
1.7 लिंग पुरूष ( ) महिला ( )
1.8 परिवार संयुक्त ( ) एंकाकी ( )
1.9 भाषा ज्ञान हिंदी ( ) अंग्रेजी ( ) अन्य ( )
1.10 धर्म हिंदू ( ) मुस्लिम ( ) सिक्ख ( ) ईसाई ( ) अन्य ( )
1.11 जाति सामान्य ( ) ओबीसी ( ) एससी ( ) एसटी ( )
1.12 वैवाहिक स्थिति विवाहित ( ) अविवाहित ( )
1.13 शैक्षणिक स्थिति स्नातक ( ) परास्नातक ( ) अन्य ( )
1.14 वाहन साइकिल ( ) मोटरसाइकिल ( ) कार ( )
1.15 मकान निजी ( ) किरायेदार ( )
1.16 मोबाइल नंबर----
1.17 ई-मेल--------
1.18 अन्य सूचना देना चाहे-----------------

1.1 क्या कोविड-**19** के दौरान आपने फील्ड रिर्पोटिंग की **?**

हाँ ( ) नहीं ( )

1.2 क्या रिर्पोटिंग के दौरान कोविड-**19** से रोकथाम के लिए मास्क**,** पीपीई किट**,** सैनिटाईजर उपलब्ध था **?**

हाँ ( ) नहीं ( )

1.3 यदि **हाँ** तो निम्न में से कौन सी **सामग्री सबसे अधिक** उपलब्ध करवाई गयी थी **?**

मास्क ( ) पीपीई किट ( ) सैनेटाइजर ( )

1.4 क्या कोविड-**19** महामारी के दौरान विश्वसनीय आंकड़े और सूचना संग्रहण का कार्य प्रभावित हुआ **?**

हाँ ( ) नहीं ( )

1.5 कोविड-**19** से संबधित सूचनाओं के लिए **आपने किन साधनों का सबसे अधिक उपयोग किया ?**
सोशल मीडिया ( ) सरकारी वेबसाइट ( )
रेडियो ( ) टीवी ( ) प्रिंट के अन्य माध्यम ( )

2.1 क्या रिर्पोटिग के दौरान आपको कोविड पाजिटिव होने का खतरा महसूस हुआ **?**
हाँ ( ) नहीं ( )

2.2 क्या रिर्पोटिग के दौरान आपको किसी प्रकार के हमले का सामना करना पडा **?**
हाँ ( ) नहीं ( )

2.3 क्या जब आपके साथी पत्रकरों की कोरोना में मृत्यु हुई तब आपने खुद को असुरक्षित महसूस किया **?**
हाँ ( ) नहीं ( )

2.4 क्या जब कोविड-**19** महामारी में साथी पत्रकारों को नौकरी से निकाला जा रहा था तब आपको खुद की नौकरी जाने का खतरा महसूस हुआ **?**
हाँ ( ) नहीं ( )

2.5 क्या कोविड **-19** के दौरान आपके वेतन में कटौती की गयी **?**
हाँ ( ) नहीं ( )

3.1 क्या कोविड-**19** से बचाव के लिए आपने वैक्सीन लगवाई **?**
हाँ ( ) नहीं ( )

3.2 क्या कोविड के दौरान नौकरी की असुरक्षा को देखते हुए कोई अन्य व्यवसाय का विचार किया **?**
हाँ ( ) नहीं ( )

3.3 यदि हां, तो इस दौरान सबसे सुविधाजनक व्यवसाय का विचार आपने क्या किया **?**
कृषि ( ) शेयर मार्केट ( ) आनलाईन पत्रकारिता ( ) अन्य कोई व्यवसाय ( )

3.4 क्या कोविड से बचाव के लिए आपने अपनी दिनचर्या में किन चीजों को **सबसे अधिक** शामिल किया **?**
योगासन ( ) काढा ( ) सामाजिक दूरी ( ) खान-पान ( )

3.5 क्या आर्थिक स्थिति में बनाए रखने के लिए अन्य सदस्यों पर निर्भर हुए **?**
हाँ ( ) नहीं ( )

4.1 क्या संक्रमित होने पर मीडिया संस्थान ने आपको आर्थिक सहयोग किया **?**
हाँ ( ) नहीं ( )

4.2 क्या संक्रमित होने पर आपको मीडिया संस्थान ने वर्क फार्म होम की अनुमित दी **?**
हाँ ( ) नहीं ( )

4.3 क्या कोविड संक्रमण से बचने के लिए मीडिया संस्थान ने वैक्शीनेशन कैंप लगवाया **?**
हाँ ( ) नहीं ( )

4.4 क्या कोविड संक्रमित होने पर आपके इलाज का खर्च मीडिया संस्थान ने उठाया **?**

हाँ ( ) नहीं ( )

4.5 क्या कोरोना के इलाज के लिए मीडिया संस्थान ने पत्रकारों का स्वास्थ्य बीमा करवाया **?**
हाँ ( ) नहीं ( )

शोधार्थी
(श्याम प्रताप सिंह यादव)